



विक्रम संवत् 2080 • माघ/फाल्गुन मास(12) • 01 फरवरी 2024 • मूल्य : 23 रु.

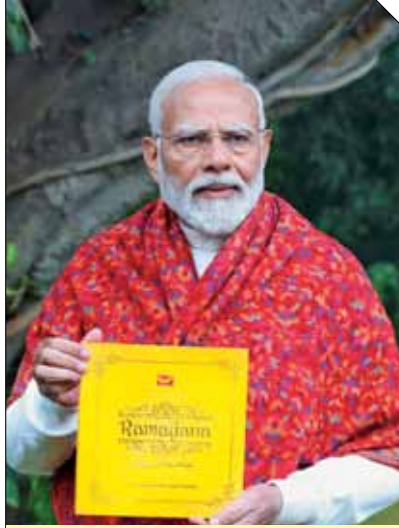
# चरैवेति



भविष्य, अतीत से  
बहुत सुंदर होगा



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री काला राम मंदिर नासिक में स्वच्छता अभियान चलाया।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री राम जन्मभूमि मंदिर पर स्मारक डाक टिकट और टिकटों की एक पुस्तक जारी की।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने श्री काला राम मंदिर, नासिक में पूजा-अर्चना की।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गुरुवयूर मंदिर केरल में पूजा और दर्शन किये।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने वीरभद्र मंदिर, लेपाक्षी, आंध्र प्रदेश में पूजा और दर्शन किये।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वामी विवेकानन्द जी की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की।



■ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने मां कामाख्या मंदिर, गुवाहाटी में पूजा-अर्चना की।



■ भाजपा अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा जी ने गुरु रविदास मंदिर, में राम लला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर स्वच्छता अभियान का शुभारंभ किया।



वर्ष-55, अंक : 12, भोपाल, फरवरी 2024



हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

## ध्येय बोध

हमने धर्म के आधार पर लोक पालन और राज्य की व्यवस्था का विधान किया। केवल सत्ता भोग के लिए राज स्थापना अपने जीवन का लक्ष्य नहीं। धर्म के लिए राज्य की स्थापना हुई इसलिए धर्म की प्रेरणा जरूरी है। राजा धर्म रक्षण के लिए उत्तरदायी है।

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

अध्यक्ष

अजय प्रताप सिंह

उपाध्यक्ष

प्रशांत हर्षे

सचिव, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक  
संजय गोविंद खोचे\*

कोषाध्यक्ष

कैलाश सोनी

प्रभारी वैचारिकी

डॉ. दीपक विजयवर्गीय

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक

योगेन्द्रनाथ बरतरिया

मोबा. नं. 09425303801

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल-462016 से प्रकाशित एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर, नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,

ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016

e-mail:chareveti@gmail.com

web site:www.charaiveti.org

मूल्य- तेईस रुपये

\*समाचार चयन के लिए पी.आर.बी.एक्ट के तहत जिम्मेदार

# अनुक्रमणिका

संपादकीय » संजय गोविन्द खोचे 04

■ राम से सुनहरे कल की ओर

कवर स्टोरी 05

■ भविष्य, अतीत से बहुत सुंदर होगा

08



■ आलेख : डॉ. मोहन यादव 08

» देश के स्वाभिमान की पुर्नस्थापना है श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा...

■ आलेख : विष्णुदत्त शर्मा 10

■ राम-रीति से बन रहा नया भारत...

■ मोदी की गारंटी : 12

» 10 साल की तपस्या 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर...

■ विकसित भारत संकल्प यात्रा : 15

» प्रत्येक हकदार को सरकारी योजना का लाभ पहुँचाना...

■ नव मतदाता सम्मेलन : 17

» नए भारत की नई शक्ति, नया स्वरूप हैं नव मतदाता...

■ इतिहास बनाएगी भाजपा : 18

» हर बूथ पर 10 प्रतिशत वोट बढ़ाना है ...

■ पीएम-जनमन महा अभियान : 19

» जिनको कभी किसी ने पूछा नहीं, उनको मोदी पूछता भी है, पूजता...

■ परीक्षा पे चर्चा 2024 : 22

» सही दिशा, सही रणनीति, सही नेतृत्व परिणाम लाता है...

■ कविता : अटल बिहारी वाजपेयी 32

» अमर है गणतंत्र

■ मन की बात : 33

» सबकी बातों में राम, सबके हृदय में राम...

■ जयंती : 37

» सप्तसिन्धु से हिन्दू पूज्य मा. स. गोलवलकर...

» ऋग्वेद से निकला है हिन्दू शब्द...

» वासुदेव बलवंत फड़के जिनके नाम से अंग्रेज काँपते थे...

■ विचार प्रवाह : पं. दीनदयाल उपाध्याय 40

» राष्ट्र जीवन की समस्याएँ...

17



## मुख्य वत-त्यौहार

6. षटितला एकादशी त्रत 7. तिल द्वादशी, प्रदोष त्रत 8. शिव चतुर्दशी त्रत 9. माघी/ मौनी अमावस्या, स्नानदान श्राद्ध अमावस्या 10. गुप्त नवरात्रारम्भ 11. चन्द्रदर्शन 13. तिल कुन्द, वरद चतुर्थी, अं. विनायकी चतुर्थी त्रत 14. बसंत पंचमी 15. शीतलाषष्ठी 16. अचला, रथ सप्तमी 17. भीष्माष्टमी 18. महानन्दा नवमी, गुप्त नवरात्र समाप्त 20. जया/अजा/भीष्म न्यारस 21. तिल/ भीष्म द्वादशी, प्रदोष त्रत 24. स्नान दान त्रत, माघी पूर्णिमा 28. गणेश चतुर्थी त्रत

## मुख्य जयंती-दिवस

11. पं. दीनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथि 14. म. खटवांग, कवि निराला जयंती, माँ परमेश्वरी जयंती 15. कवि. सुभद्राकुमारी चौहान पु. ति. 16. म. नवल, संत महादेव जयंती 19. गुरू गोलवलकर जयंती, संत भाकरे महाराज जयंती 22. गुरू हरराय, प्रभु नित्यानंद जयंती 23. वीर तेजाजी जयंती 24. राजिम मेला



# राम से सुनहरे कल की ओर

140 करोड़ लोगों की कसौटियों से निकला नेतृत्व, न केवल 140 करोड़ लोगों का नेतृत्व करने में सफल सिद्ध हुआ है बल्कि देश को, विश्व को नई दिशा देने में कामयाब रहा है। जन-जन में निराशा के अंधकार से बाहर निकल कर नए जोश नई क्रांति आ गई है। चहुं दिशाओं में राम राज्य का डंका बज रहा है।

भाई-भतीजावाद, परिवारवाद, भ्रष्टाचार, विघटनकारी ताकतें अपने आप को असहाय महसूस कर रही हैं। कोई तो साथ दो- पर देश अब उठ खड़ा हुआ है। अब नकारात्मक, विभाजनकारी शक्तियों का देश में खेल खत्म हो चुका है।

**500** वर्षों की कड़ी तपस्या, धैर्य, संघर्ष, बलिदान के बाद आखिर प्रभु श्री राम की कृपा से भक्तों की मनोकामना पूर्ण हुई। सनातनियों ने जो धैर्य और प्रभु श्री राम के दिखाए मार्ग का अनुसरण किया वह प्रशंसनीय है, वंदनीय है, सराहनीय है, स्वागत योग्य है। इतिहास ने, काल ने, समय चक्र ने करवट बदली है। देश अब गुलामी के चिन्हों से मुक्त होता जा रहा है। सनातनी तपस्वी होते हैं, सनातनी धैर्य, शांति व कानून का पालन करते हैं। सनातनी वसुधैव कुटुंबकम का पालन करते हैं। पर यह भी परम सत्य है की सनातनियों को ताकत के बल पर, षडयंत्रों द्वारा दबाया या कुचला नहीं जा सकता है। सही समय आने पर सनातनी फिर एक होकर उठ खड़े होंगे। सभी बेड़ियाँ, सभी जंजीरें बेकार सिद्ध होंगी। फिर से देश उठ खड़ा हुआ है। बल्कि पीछे से और अधिक ताकत से एकजुट हो रहा है। तरक्की के पथ पर निकल पड़ा है। विश्व को शांति का संदेश दे रहा है।

सनातन धर्म की यही खूबी उसे विश्व में अलग स्थान प्रदान करती है। ताकत, सफलता, प्रगति, संपन्नता, ज्ञान, क्षमताएं - सब मानव जाति के विकास के लिए हैं। वसुधैव कुटुंबकम का पालन करने वाले देश की ताकत विश्व कल्याण के लिए, विश्व को नई दिशा देने के लिए, विश्व को प्रगति के नए पायदान पर लाने के लिए है। 15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हो गया था। अमृत काल में देश अपनी स्वतंत्रता की नई सीढ़ियां चढ़ रहा है। अब देश निभीक होकर अपना नेतृत्व तय कर रहा है। अपना भविष्य तय कर रहा है। आगे के हजारों वर्षों का अपना आधार तय कर रहा है। जन-जन में नई क्रांति आई है। नई ऊर्जा, नई चेतना आई है।

140 करोड़ लोगों की कसौटियों से निकला नेतृत्व, न केवल 140 करोड़ लोगों का नेतृत्व करने में सफल सिद्ध हुआ है बल्कि देश को, विश्व को नई दिशा देने में कामयाब रहा है। जन-जन में निराशा के अंधकार से बाहर निकल कर नए जोश नई क्रांति आ गई है। चहुं दिशाओं में राम राज्य का डंका बज रहा है। भाई-भतीजावाद, परिवारवाद, भ्रष्टाचार, विघटनकारी ताकतें अपने आप को असहाय महसूस कर रही हैं। कोई तो साथ दो- पर देश अब उठ खड़ा हुआ है। अब नकारात्मक, विभाजनकारी शक्तियों का देश में खेल खत्म हो चुका है। कानून का राज्य सबके लिए समान है, कोई छोटा नहीं, कोई अपना नहीं, कोई पराया नहीं, सब बराबर हैं, सब अपने हैं।

आम जनता ने पहली बार स्वतंत्रता के बाद स्वतंत्रता महसूस की है। देश के नागरिकों को उनके भारतीय होने के गर्व का एहसास हुआ है। भ्रष्टाचार की ब्रेकिंग न्यूज से मुक्ति मिली है। टैक्स पेयर को विश्वास जागा है। उसके टैक्स का एक-एक पैसा देश हित में काम आ रहा है।

तभी तो जीएसटी का कलेक्शन रिकार्ड ऊँचाई को छू रहा है, नित नए रिकार्ड बना रहा है। दूसरी तरफ 30 लाख करोड़ रुपए से अधिक की धनराशि गरीबों के खातों में पिछले 10 वर्षों में हस्तांतरित की जा चुकी है। इतनी बड़ी धनराशि के हस्तांतरण के बाद भी एक पैसे का लीकेज नहीं हो पाया। यही तो नया भारत है। यही तो राम का भारत है। यही तो आगे बढ़ता भारत है। गरीबों-शोषितों- कमजोर लोगों को 30 लाख करोड़ रुपए की सहायता, उनके जीवन में कितना बड़ा परिवर्तन लाएगी, उनको कितनी ताकत देगी, जिनकी स्वयं की कोई गारंटी नहीं थी- अब उनके पास भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गारंटी है। मोदी की गारंटी है। सभी गारंटी पूरा होने की गारंटी है। जिनको कोई पूछता नहीं था, उनको भारत का प्रधानमंत्री पूछता भी है, पूजता भी है, रहने को मकान, पीने के पानी का नल जल कनेक्शन, बिजली कनेक्शन, शौचालय, फ्री चिकित्सा की गारंटी देता है, बैंक में खाता खुलवाता है, खाते में पैसे डलवाता है, बच्चों की शिक्षा, हुनर, रोजगार की व्यवस्था करता है, बैंक से लोन की व्यवस्था करता है, कोई भूखा ना सो जाए, सबके लिए अनाज का प्रबंध करता है, महिलाओं को चूल्हे के धुएं से मुक्ति के लिए घर-घर गैस कनेक्शन पहुंचाता है।

गांव- जंगल- दुर्गम स्थानों पर रहने वाले लोग, जो सरकारी योजनाओं के लाभ लेने से छूट गए थे, उनके घर सरकार योजनाओं का लाभ लेकर स्वयं जा रही है। देश का कोई भी भाई- बहन जो सरकारी योजनाओं के लाभ का हकदार है, जानकारी के अभाव में छूट न जाए, शायद विश्व के इतिहास में यह पहली बार हो रहा है की सरकार लाभार्थियों को खोज-खोज कर सहायता व सहयोग प्रदान कर रही है।

तभी तो 10 वर्षों में 25 करोड़ से अधिक लोग गरीबी रेखा से बाहर आ गए हैं। वो फिर गरीबी रेखा के पीछे ना चले जाएं इस बात की पूर्ण चिंता व सावधानी मोदी जी बरत रहे हैं। यही तो राम राज्य है। प्रतिदिन नए बेहतर भविष्य की तरफ हम बढ़ रहे हैं। जो किसी कारणवश पीछे छूट गए थे वह आगे बढ़ रहे हैं। देश आगे बढ़ रहा है और हम सुनहरे भविष्य की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। यही तो रामराज्य है, यही इस धरा की परम्परा है, यही हमारे पूर्वजों के तप का परिणाम है, यही भारत की असली स्वतंत्रता है।

(संजय गोविन्द खोचे)  
सम्पादक

# भविष्य, अतीत से बहुत सुंदर होगा

हमारे राम आ गए हैं! सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। सदियों का अभूतपूर्व धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या के बाद हमारे प्रभु राम आ गये हैं।

**कि** तना कुछ कहने को है... लेकिन कंठ अवरुद्ध है। शरीर स्पंदित है, चित्त भी उस पल में लीन है। हमारे रामलला अब टेंट में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला अब इस दिव्य मंदिर में रहेंगे। पक्का विश्वास है, अपार श्रद्धा है कि जो घटित हुआ है इसकी अनुभूति, देश के, विश्व के, कोने-कोने में रामभक्तों को हो रही होगी। ये क्षण अलौकिक है। ये पल पवित्रतम है। ये माहौल, ये वातावरण, ये ऊर्जा, ये घड़ी... प्रभु श्रीराम का हम सब पर आशीर्वाद है। 22 जनवरी, 2024 का सूरज एक अदभुत आभा लेकर आया है। 22 जनवरी, 2024, कैलेंडर पर लिखी तारीख नहीं। ये नए कालचक्र का उद्गम है। राम मंदिर के भूमिपूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। निर्माण कार्य देख, देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा था। हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। हजार साल बाद भी लोग तारीख की, इस पल की चर्चा करेंगे। और ये कितनी बड़ी रामकृपा है कि हम इस पल को जी रहे हैं, इसे साक्षात् घटित होते देख रहे हैं। आज दिन-दिशाएँ... दिग-दिगंत... सब दिव्यता से परिपूर्ण हैं। ये समय, सामान्य समय नहीं है। ये काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रही अमिट स्मृति रेखाएँ हैं।

जहां राम का काम होता है, वहाँ पवनपुत्र हनुमान अवश्य विराजमान होते हैं। त्रेता में राम आगमन पर तुलसीदास जी ने लिखा है-

**प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी।**



**22 जनवरी, 2024, कैलेंडर पर लिखी तारीख नहीं। ये नए कालचक्र का उद्गम है। राम मंदिर के भूमिपूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था।**

निर्माण कार्य देख, देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा था। हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, हमें श्रीराम का मंदिर मिला है।



### जनित वियोग बिपति सब नासी।

अर्थात्, प्रभु का आगमन देखकर ही सब अयोध्यावासी, समग्र देशवासी हर्ष से भर गए। लंबे वियोग से जो आपत्ति आई थी, उसका अंत हो गया। उस कालखंड में तो वो वियोग केवल 14 वर्षों का था, तब भी इतना असह्य था। इस युग में तो अयोध्या और देशवासियों ने सैकड़ों वर्षों का वियोग सहा है। हमारी कई-कई पीढ़ियों ने वियोग सहा है। भारत के तो संविधान में, उसकी पहली प्रति में, भगवान राम विराजमान हैं। संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी दशकों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली। भारत की न्यायपालिका ने न्याय की लाज रख ली। न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्याय बद्ध तरीके से ही बना।

गाँव-गाँव में एक साथ कीर्तन, संकीर्तन हो रहे हैं। मंदिरों में उत्सव हो रहे हैं, स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं। पूरा देश दीवाली मना रहा है। घर-घर राम ज्योति प्रज्वलित करने की तैयारी है। जिस घड़ी प्रभु राम समुद्र पार करने निकले थे वो एक पल था जिसने कालचक्र को बदला था। जैसे उस समय कालचक्र बदला था उसी तरह अब कालचक्र फिर बदलेगा और शुभ दिशा में बढ़ेगा। सागर से सरयू तक, हर जगह राम नाम का वही उत्सव भाव छाया हुआ है। प्रभु राम तो भारत की आत्मा के कण-कण से जुड़े हुए हैं। राम, भारतवासियों के अंतर्मन में विराजे हुए हैं। हम भारत में कहीं भी, किसी की अंतरात्मा को छुएंगे तो इस एकत्व की अनुभूति होगी, और यही भाव

सब जगह मिलेगा। इससे उत्कृष्ट, इससे अधिक, देश को समायोजित करने वाला सूत्र और क्या हो सकता है?

राम को परिभाषित करते हुये ऋषियों ने कहा है-

### रमन्ते यस्मिन् इति रामः॥

अर्थात्, जिसमें रम जाया जाए, वही राम है। राम लोक की स्मृतियों में, पर्व से लेकर परम्पराओं में, सर्वत्र समाये हुए हैं। हर युग में लोगों ने राम को जिया है। हर युग में लोगों ने अपने-अपने शब्दों में, अपनी-अपनी तरह से राम को अभिव्यक्त किया है। और ये रामरस, जीवन प्रवाह की तरह निरंतर बहता रहता है। प्राचीन काल से भारत के हर कोने के लोग रामरस का आचमन करते रहे हैं। रामकथा असीम है, रामायण भी अनंत हैं। राम के आदर्श, राम के मूल्य, राम की शिक्षाएं, सब जगह एक समान हैं।

राम के इस काम में कितने ही लोगों ने त्याग और तपस्या की पराकाष्ठा करके दिखाई है। उन अनगिनत रामभक्तों के, उन अनगिनत कारसेवकों के और उन अनगिनत संत महात्माओं के हम सब ऋणी हैं।

ये अवसर उत्सव का क्षण तो है ही, लेकिन इसके साथ ही ये क्षण भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण भी है। हमारे लिए ये अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है। दुनिया का इतिहास साक्षी है कि कई राष्ट्र अपने ही इतिहास में उलझ जाते हैं। ऐसे देशों ने जब भी अपने इतिहास की उलझी हुई गांठों को खोलने

का प्रयास किया, उन्हें सफलता पाने में बहुत कठिनाई आई। बल्कि कई बार तो पहले से ज्यादा मुश्किल परिस्थितियां बन गईं। लेकिन हमारे देश ने इतिहास की इस गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वो ये बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है। वो भी एक समय था, जब कुछ लोग कहते थे कि राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी। ऐसे लोग भारत के सामाजिक भाव की पवित्रता को नहीं जान पाए। रामलला के इस मंदिर का निर्माण, भारतीय समाज के शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। ये निर्माण किसी आग को नहीं, बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। राम मंदिर समाज के हर वर्ग को एक उज्वल भविष्य के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा लेकर आया है। महसूस कीजिए, सोच पर पुनर्विचार कीजिए। राम आग नहीं है, राम ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सिर्फ हमारे नहीं हैं, राम तो सबके हैं। राम वर्तमान ही नहीं, राम अनंतकाल हैं।

जिस तरह राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा के आयोजन से पूरा विश्व जुड़ा हुआ है, उसमें राम की सर्वव्यापकता के दर्शन हो रहे हैं। जैसा उत्सव भारत में है, वैसा ही अनेकों देशों में है। अयोध्या का ये उत्सव रामायण की उन वैश्विक परम्पराओं का भी उत्सव बना है। रामलला की ये प्रतिष्ठा 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार की भी प्रतिष्ठा है।

अयोध्या में, केवल श्रीराम के विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है। ये श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण प्रतिष्ठा है। ये साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है।

### सर्वे भवन्तु सुखिनः

ये संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। उसी संकल्प को राममंदिर के रूप में साक्षात् आकार मिला है। ये मंदिर, मात्र एक देव मंदिर नहीं है। ये भारत की दृष्टि का, भारत के दर्शन का, भारत के दिग्दर्शन का मंदिर है। ये राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का विधान हैं। राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं। और इसलिए, जब राम की प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों या शताब्दियों तक

ही नहीं होता। उसका प्रभाव हजारों वर्षों के लिए होता है। महर्षि वाल्मीकि ने कहा है-

**राज्यम् दश सहस्राणि प्राप्य वर्षाणि राघवः।**

अर्थात्, राम दस हजार वर्षों के लिए राज्य पर प्रतिष्ठित हुए। यानी हजारों वर्षों के लिए रामराज्य स्थापित हुआ। जब त्रेता में राम आए थे, तब हजारों वर्षों के लिए रामराज्य की स्थापना हुई थी। हजारों वर्षों तक राम विश्व पथ प्रदर्शन करते रहे थे।

अयोध्या भूमि हम सभी से, प्रत्येक रामभक्त से, प्रत्येक भारतीय से कुछ सवाल कर रही है। श्रीराम का भव्य मंदिर तो बन गया... अब आगे क्या? सदियों का इंतजार तो खत्म हो गया... अब आगे क्या? इस अवसर पर जो दैव, जो दैवीय आत्माएं हमें आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित हुई हैं, हमें देख रही हैं, उन्हें क्या हम ऐसे ही विदा करेंगे? नहीं, कदापि नहीं। कालचक्र बदल रहा है। ये सुखद संयोग है कि हमारी पीढ़ी को एक कालजयी पथ के शिल्पकार के रूप में चुना गया है। हजार वर्ष बाद की पीढ़ी, राष्ट्र निर्माण के हमारे कार्यों को याद करेगी। इसलिए - यही समय है, सही समय है। हमें इस पवित्र समय से, अगले एक हजार साल के भारत की नींव रखनी है। मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अब सभी देशवासी, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं। राम के विचार, 'मानस के साथ ही जनमानस' में भी हों, यही राष्ट्र निर्माण की सीढ़ी है।

आज के युग की मांग है कि हमें अपने अंतःकरण को विस्तार देना होगा। हमारी चेतना का विस्तार... देव से देश तक, राम से राष्ट्र तक होना चाहिए। हनुमान जी की भक्ति, हनुमान जी की सेवा, हनुमान जी का समर्पण, ये ऐसे गुण हैं जिन्हें हमें बाहर नहीं खोजना पड़ता। प्रत्येक भारतीय में भक्ति, सेवा और समर्पण के ये भाव, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेंगे। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! दूर-सुदूर जंगल में कुटिया में जीवन गुजारने वाली आदिवासी मां शबरी का ध्यान आते ही, अप्रतिम विश्वास जागृत होता है। मां शबरी तो कबसे कहती थीं- राम आएं। प्रत्येक भारतीय में जन्मा यही विश्वास, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगा। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! हम सब जानते हैं कि निषादराज की मित्रता, सभी बंधनों से परे है। निषादराज का राम के प्रति सम्मोहन, प्रभु राम का निषादराज के लिए अपनापन कितना मौलिक है। सब अपने हैं, सभी समान हैं। प्रत्येक भारतीय में अपनत्व की, बंधुत्व की ये भावना,

समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार!

आज देश में निराशा के लिए रतीभर भी स्थान नहीं है। अगर कोई ये सोचता है, तो उसे गिलहरी के योगदान को याद करना चाहिए। गिलहरी का स्मरण ही हमें हमारी इस हिचक को दूर करेगा, हमें सिखाएगा कि छोटे-बड़े हर प्रयास की अपनी ताकत होती है, अपना योगदान होता है। और सबके प्रयास की यही भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार!

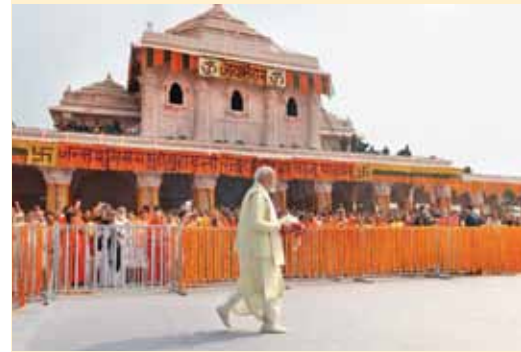
लंकापति रावण, प्रकांड ज्ञानी थे, अपार शक्ति के धनी थे। लेकिन जटायु जी की मूल्य निष्ठा देखिए, वे महाबली रावण से भिड़ गए। उन्हें भी पता था कि वो रावण को परास्त नहीं कर पाएंगे। लेकिन फिर भी उन्होंने रावण को चुनौती दी। कर्तव्य की यही पराकाष्ठा समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार है। और यही तो है, देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार। आइए, हम संकल्प लें कि राष्ट्र निर्माण के लिए हम अपने जीवन का पल-पल लगा देंगे। रामकाज से राष्ट्रकाज, समय का पल-पल, शरीर का कण-कण, राम समर्पण को राष्ट्र समर्पण के ध्येय से जोड़ देंगे।

प्रभु श्रीराम की हमारी पूजा, विशेष होनी चाहिए। ये पूजा, स्व से ऊपर उठकर समष्टि के लिए होनी चाहिए। ये पूजा, अहम से उठकर वयम के लिए होनी चाहिए। प्रभु को जो भोग चढ़ेगा, वो विकसित भारत के लिए हमारे परिश्रम की पराकाष्ठा का प्रसाद भी होगा। हमें नित्य पराक्रम, पुरुषार्थ, समर्पण का प्रसाद प्रभु राम को चढ़ाना होगा। इनसे नित्य प्रभु राम की पूजा करनी होगी, तब हम भारत को वैभवशाली और विकसित बना पाएंगे।

ये भारत के विकास का अमृतकाल है। भारत युवा शक्ति की पूंजी से भरा हुआ है, ऊर्जा से भरा हुआ है। ऐसी सकारात्मक परिस्थितियां, फिर ना जाने कितने समय बाद बनेंगी। हमें अब चूकना नहीं है, हमें अब बैठना नहीं है। युवाओं के सामने हजारों वर्षों की परंपरा की प्रेरणा है। आप भारत की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं... जो चांद पर तिरंगा लहरा रही है, जो 15 लाख किलोमीटर की यात्रा करके, सूर्य के पास जाकर मिशन आदित्य को सफल बना रही है, जो आसमान में तेजस... सागर में विक्रांत... का परचम लहरा रही है। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए आपको भारत का नव प्रभात लिखना है। परंपरा की पवित्रता और आधुनिकता की अनंतता, दोनों ही

पथ पर चलते हुए भारत, समृद्धि के लक्ष्य तक पहुंचेगा। आने वाला समय अब सफलता का है। आने वाला समय अब सिद्धि का है। ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का, ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का! ये मंदिर सिखाता है कि अगर लक्ष्य, सत्य प्रमाणित हो, अगर लक्ष्य, सामूहिकता और संगठित शक्ति से जन्मा हो, तब उस लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है। ये भारत का समय है और भारत अब आगे बढ़ने वाला है। शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद हम यहां पहुंचे हैं। हम सब ने इस युग का, इस कालखंड का इंतजार किया है। अब हम रुकेंगे नहीं। हम विकास की ऊंचाई पर जाकर ही रहेंगे। ■

## 5 सदी की प्रतीक्षा और प्रतिज्ञा पूर्ण हुई



केन्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा है कि "जय श्री राम... 5 सदी की प्रतीक्षा और प्रतिज्ञा पूर्ण हुई। करोड़ों रामभक्तों के लिये कभी ना भूलने वाला दिन है। जब हमारे रामलला अपने भव्य मंदिर में विराजमान हुए हैं, तब असंख्य राम भक्तों की तरह मैं भी भावविभोर हूँ। इस भावना को शब्दों में समेट पाना संभव नहीं है। इस पल की प्रतीक्षा में न जाने हमारी कितनी पीढ़ियाँ खप गईं, लेकिन कोई भी डर और आतंक राम जन्मभूमि पर फिर से मंदिर बनाने के संकल्प और विश्वास को डिगा नहीं पाया। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में यह संकल्प सिद्ध हुआ है।" ■

# देश के स्वाभिमान की पुर्नस्थापना है श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा



डॉ. मोहन यादव

**सौ** भाग्य का पावन अवसर है। सैकड़ों वर्षों बाद यह शुभ घड़ी आई है... अयोध्या में अपने जन्मस्थान पर रामलला विराजमान हो गये हैं। पूरे संसार के सनातनी हर्षित, आनंदित और प्रफुल्लित हैं। समूचे विश्व में जयश्रीराम गुंजायमान है। हम सभी सौभाग्यशाली हैं कि हमें यह सुखद दृश्य देखने का अवसर मिला है। श्रीरामजी की गरिमा के अनुरूप मंदिर निर्माण के लिये पीढ़ियों ने पांच सौ वर्ष तक संघर्ष किया इसमें अनगिनत बलिदान हुए।

राम मंदिर हमारी संस्कृति, हमारी आस्था, राष्ट्रीयत्व और सामूहिक शक्ति का प्रतीक है। यह सनातन समाज के संकल्प, संघर्ष और जिजीविषा का ही परिणाम है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में श्रीराम मंदिर निर्माण का सपना साकार हो गया है। यह उमंग और उत्सव का अवसर है, समूचा समाज उल्लास के साथ खुशियां मना रहा है।

राजा राम प्रत्येक भारतीय और विश्व में व्याप्त सनातनियों के आदर्श हैं। वे सत्यनिष्ठा के प्रतीक, सदाचरण और आदर्श पुरुष के साकार रूप मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। श्रीराम जन्मस्थान मंदिर निर्माण के हर्षोल्लास के साथ हमें भगवान राम के जीवन से प्रेरणा भी लेनी चाहिए। कर्तव्य पथ पर प्रतिबद्ध श्रीराम के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है कि वे सबके थे और सबको साथ लेकर चलते थे। सबका विश्वास अर्जित करने के लिये अपने सुखों का भी त्याग कर देते थे। वे जितने वीर थे, मेधावी थे उतने ही सहनशील भी। उन्होंने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया और विपरीत परिस्थिति कभी उन्हें विचलित नहीं कर सकती थीं।



**राजा राम प्रत्येक भारतीय और विश्व में व्याप्त सनातनियों के आदर्श हैं। वे सत्यनिष्ठा के प्रतीक, सदाचरण और आदर्श पुरुष के साकार रूप मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। श्रीराम जन्मस्थान मंदिर निर्माण के हर्षोल्लास के साथ हमें भगवान राम के जीवन से प्रेरणा भी लेनी चाहिए।**

प्रजावत्सल राजा राम के लिये न्याय और राजधर्म सर्वोपरि था। इन्हीं अदभुत विशिष्टताओं के कारण श्रीराम को आदर्श राजा कहा जाता है। उनकी राज व्यवस्था में न कोई छोटा था न कोई बड़ा था, सभी समान सम्मान के अधिकारी थे। सबको उनकी योग्यता, क्षमता और मेधा के अनुसार काम के अवसर प्राप्त थे। भेदभाव रहित समाज व्यवस्था के लिए रामराज्य का उदाहरण दिया जाता है।

रामराज्य में प्रजा की सुखद स्थिति का रामचरित मानस के उत्तरकांड में उल्लेख है-  
“दैहिक दैविक भौतिक तापा, राम राज नहिं काहुहि ब्यापा।”

अर्थात् - रामराज्य में शासन व्यवस्था इतनी आदर्श थी कि प्रजा समृद्ध, रोग रहित और

आपदा रहित थी।

राष्ट्र के सांस्कृतिक एकत्व के लिए श्रीराम जी ने उत्तर से दक्षिण और पूरब से पश्चिम तक पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया। वे अपना वनवास काल पूर्ण करके लंका से सीधे अयोध्या नहीं आये। वे उन सभी स्थानों पर गये जो उनका वन गमन मार्ग था। लौटते समय निषाद, किरात, केवट और वनवासी समाज के सभी प्रमुख बंधुओं को अपने साथ लाये थे। अपने राजकाल में श्रीरामजी ने एक-एक व्यक्ति का विश्वास अर्जित किया और उन्हें संगठित किया। उनका पूरा जीवन राष्ट्र और समाज के लिये समर्पित रहा। हमें ऐसे ही राष्ट्र का निर्माण करना है।

लगभग पांच सौ वर्षों की दीर्घ प्रतीक्षा और



धैर्य के बाद रामलला प्राण प्रतिष्ठा के साथ अयोध्या आ गये हैं। यह प्रगति और परंपरा का उत्सव है। इसमें विकास की भव्यता और विरासत की दिव्यता है। यही भव्यता और दिव्यता हमें प्रगति पथ पर आगे ले जाएगी। माननीय प्रधानमंत्री जी के संकल्प के साथ समाज के संघर्ष और आत्मशक्ति का परिणाम है कि रामलला विराजमान हैं। प्रधानमंत्री जी ने देशवासियों से आग्रह किया कि “जब अयोध्या में प्रभु राम विराजमान हों, तब हर घर में श्रीराम ज्योति जलाएं, दीपावली मनाएं।” रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर हमने प्रदेश के शहरों और ग्रामों में रोशनी और दीप जलाये। प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों में श्रीराम कथा सप्ताह मनाया गया।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने भव्य राम मंदिर निर्माण के निमित्त एक सप्ताह तक देश के सभी मंदिरों तथा तीर्थ स्थलों पर स्वच्छता अभियान चलाने का आह्वान किया। हमने मध्यप्रदेश में स्वच्छता से स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से समृद्धि के लिए सभी तीर्थ स्थलों, मंदिरों तथा नदियों में स्वच्छता अभियान चलाया। प्रभु श्रीराम ने वनवासकाल के लगभग 11 वर्ष चित्रकूट में व्यतीत किये हैं। हमने तीर्थ स्थल चित्रकूट सहित रामवन पथ गमन मार्ग के 1450 किलोमीटर के 23 प्रमुख धार्मिक स्थलों का विकास करने का निर्णय लिया है। इसमें अधोसंरचना विकास के कार्यों के साथ-साथ धार्मिक चेतना, आध्यात्मिक विकास और राम कथा से जुड़े आयामों को भी शामिल किया जाएगा। भगवान कामतानाथ के परिक्रमा पथ का निर्माण कार्य भी शीघ्र प्रारंभ होगा।

अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा का ऐतिहासिक क्षण सभी के लिये प्रेरणा का अवसर है। भारत के सांस्कृतिक वैभव और समृद्धि के इस पावनकाल में यशस्वी प्रधानमंत्री जी ने देश को आत्मनिर्भर और सर्वश्रेष्ठ राष्ट्र के रूप में विकसित करने का संकल्प लिया है, हम इस संकल्प की सिद्धि के लिए प्रतिबद्ध हैं। भारत को यदि सशक्त और विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में अग्रणी बनाना है, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि समाज संगठित रहे, समरस रहे, एकजुट रहे और प्रत्येक व्यक्ति आत्मनिर्भर बने। यदि भारत राष्ट्र को आत्मनिर्भर बनाना है, तो पूरे समाज को आत्मनिर्भर बनाना होगा, तभी रामराज्य की कल्पना सार्थक हो सकेगी।

रामलला अपने जन्म स्थल पर विराजमान हैं इस सुमंगल पर सभी प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई...।

(लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

# 2024 चुनाव में बनेगा भाजपा की जीत का इतिहास



प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 2024 के लोकसभा चुनाव को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने 15 जनवरी से देश भर में दीवार लेखन अभियान शुरू किया है। पार्टी अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी ने नई दिल्ली से एवं प्रदेश अध्यक्ष व सांसद श्री विष्णुदत्त शर्मा ने भोपाल में दीवार लेखन अभियान का शुभारंभ किया।

भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी के आह्वान पर “एक बार फिर से मोदी सरकार” संकल्प के साथ देश भर में दीवार लेखन का कार्यक्रम का शुभारंभ किया। इसी अभियान के अंतर्गत सभी कार्यकर्तागण 2024 में “एक बार फिर से मोदी सरकार” संकल्प के साथ इस अभियान में सहभागी हो रहे हैं। मध्यप्रदेश में भी प्रत्येक बूथ पर मुख्यमंत्री से लेकर जनप्रतिनिधि, भाजपा पदाधिकारी एवं कार्यकर्तागण दीवार लेखन अभियान में सहभागी होकर आगामी लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में “एक बार फिर से मोदी सरकार” बनाने के संकल्प की सिद्धि के लिए जुट रहे हैं।

## प्रधानमंत्री जी हर गारंटी पूरी होने की गारंटी - विष्णुदत्त शर्मा

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में संचालित जनहितैषी योजनाओं से हर वर्ग खुश है, तो वहीं वैश्विक पटल पर भारत को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। जन-जन के मन से एक ही आवाज निकलती है कि प्रधानमंत्री मोदी जी हर गारंटी पूरी होने की गारंटी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के आशीर्वाद, केन्द्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी के मार्गदर्शन, भाजपा अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी के नेतृत्व तथा हमारे बूथ कार्यकर्ताओं के परिश्रम से 2024 के लोकसभा चुनाव में एक बार फिर से मोदी सरकार प्रचण्ड बहुमत से बनकर विकसित भारत के संकल्प को साकार करने में जुटेगी।

## लोकसभा चुनाव में इतिहास बनेगा

दीवार लेखन के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की जनहितैषी योजनाओं का प्रचार-प्रसार भी भाजपा कार्यकर्ता कर रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी द्वारा चलाई गई गरीब कल्याण की योजनाओं ने देश के गरीबों का जीवन बदलने का कार्य किया है। 22 जनवरी को भगवान रामलला के अयोध्या में प्राण-प्रतिष्ठा होते ही देश में इतिहास बन गया। 500 वर्षों के संघर्ष और लाखों लोगों के बलिदान के बाद 22 जनवरी इतिहास बना। उसी तरह प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा जीत का इतिहास बनेगा।

# राम-रीति से बन रहा नया भारत



विष्णुदत्त शर्मा

**ब**चपन से ही घर के बड़े-बुजुर्गों से प्रभु श्रीराम लला की कीर्ति, शौर्य और प्रभुता की बातें सुनता रहता था। युवा अवस्था के प्रारंभ में बताया गया कि आक्रांताओं ने अयोध्या में आक्रमण करके भगवान श्रीराम जन्मभूमि स्थान पर बने मंदिर को बर्बरतापूर्वक तोड़कर मस्जिद का विवादित ढांचा बनाया गया था। यह बात सुनने के बाद से ही मन उद्वेलित रहने लगा कि हमारे आराध्य और रोम-रोम में बसने वाले भगवान श्रीराम के जन्मस्थान पर हुआ आक्रमण सनातन पर और हमारी आस्था पर आक्रमण था। इसके बाद से ही राष्ट्रीयता की विचारधारा से प्रेरित होकर कॉलेज में पहुंचते ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अध्ययन के साथ ही श्रीराम जन्मभूमि का मुद्दा पूरी तरह से समझा। उसके उपरांत वर्ष 1992 में एबीवीपी के राष्ट्रीय अधिवेशन में शामिल होने कानपुर पहुंचा तो मुझे भी कारसेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वर्ष 1992 में ही 6 दिसंबर को कार सेवकों द्वारा श्रीराम जन्मस्थान पर बने विवादित ढांचे को गिरा दिया गया। उन दिनों राम मंदिर आंदोलन का नेतृत्व कर रहे नेताओं को यह सलाह दी जाती थी कि भारत एक धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र है जहां ऐसे सांप्रदायिक व अनावश्यक मुद्दों का कोई स्थान नहीं है। स्पष्ट है कि भारतीय जनता पार्टी के अतिरिक्त देश के सभी राजनीतिक दलों के लिए राम मंदिर आंदोलन एक सांप्रदायिक मुद्दे से अधिक और कुछ न था।

युवा अवस्था में यह विचार मेरे मन मस्तिष्क में कौंधता रहता था कि जब भारत, भगवान श्रीराम की भूमि है तो यहां भगवान श्रीराम के जन्मस्थान पर आक्रांताओं द्वारा मंदिर तोड़कर बनाए गए विवादित ढांचे के स्थान पर रामलला के लिए भव्य मंदिर निर्माण की परिकल्पना सांप्रदायिक कैसे हो सकती है? तत्समय एक बड़ा प्रभावशाली एवं विशिष्ट वर्ग भी सेकुलरिज्म की चादर में लिपटे हुए इन्हें



**राष्ट्रीयता की विचारधारा से प्रेरित होकर कॉलेज में पहुंचते ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। अध्ययन के साथ ही श्रीराम जन्मभूमि का मुद्दा पूरी तरह से समझा।**

उसके उपरांत वर्ष 1992 में एबीवीपी के राष्ट्रीय अधिवेशन में शामिल होने कानपुर पहुंचा तो मुझे भी कारसेवा करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वर्ष 1992 में ही 6 दिसंबर को कार सेवकों द्वारा श्रीराम जन्मस्थान पर बने विवादित ढांचे को गिरा दिया गया।

कुतर्कों को धार देता रहता था। ऐसी स्थिति में कभी-कभी लगता था कि अयोध्या में भव्य श्रीरामलला मंदिर का निर्माण एक दिवास्वप्न ही है, परंतु यह भारत का सौभाग्य है कि देश में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसा एक ऐसा राष्ट्र निष्ठ संगठन है, जिसने श्रीरामलला के मंदिर निर्माण की आस कभी नहीं त्यागी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक पूरे देश में यह भरोसा जगाये रखा कि एक दिन राम मंदिर अवश्य बनेगा। राम जन्मभूमि का चरणबद्ध आंदोलन और विश्वास बनाए रखने के लिए रचे गए नारे इस प्रतिबद्धता के साक्षी रहे हैं। संघ ने देश की चेतना को जागृत रखते हुए श्रीराम मंदिर निर्माण के संकल्प को हर नागरिक का संकल्प बना दिया। संघ से प्रेरणा लेने वाले अनेक संगठनों ने उस चेतना को प्रखर बनाये

रखने में अपना गिलहरी रूपी योगदान देने के लिए कृत संकल्पित रहे। जनसंघ के समय से ही श्रीराम मंदिर का निर्माण अति महत्वपूर्ण मुद्दा था और भारतीय जनता पार्टी के स्थापना दिवस से ही यह प्राथमिकता के शिखर पर पहुंच गया। फलस्वरूप आज अयोध्या में श्रीराम मंदिर का निर्माण पूर्ण हो चुका है और भगवान श्रीराम अब सनातनियों द्वारा निर्मित भव्य -दिव्य मंदिर में विराजने वाले हैं।

वास्तव में किसी देश की चेतना ही उसके भविष्य मार्ग को सुनिश्चित करती है। विशेषकर भारत के संदर्भ में यह बहुत महत्वपूर्ण है कि उसकी अस्मिता पर जब-जब हमले हुए तो उसने अपनी चेतना को जीवंत रखा।

**कवि इकबाल ने कहा था कि-  
यूनान ओ मिस्र ओ रूमा सब मिट**

गए जहाँ से

अब तक मगर है बाकी नाम-ओ-निशॉ  
हमारा

कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी  
सदियों रहा है दुश्मन दौरें जहाँ हमारा।

हजार साल तक बर्बर हमलों के बावजूद हमारे पुरखों ने देश की चेतना को जागृत रखा। हम बाह्य युद्ध हार गये, लेकिन मन का युद्ध जीतते रहे। दुर्भाग्य से 1947 के बाद स्वतंत्र भारत में ऐसी राजनीतिक धारा केंद्र में रही, जिसने देश के मन को हराने के कुत्सित प्रयास किए। उसने आम हिन्दू जनमानस को सदा इसके लिए तैयार किया कि वह अपने मूल्यों को छोड़ दे। अटल सरकार और विशेषकर 2014 में राजनीतिक धारा का केंद्र बदला तभी हमारे भविष्य की राह उज्वल हुई। विश्व में भारत अपनी प्राचीन सनातन पहचान के साथ नये सिरे से उभरने लगा और एक नया भारत आकार लेने लगा।

2014 से पहले अयोध्या में श्रीराम मंदिर की वकालत करते हुए हम सब यह कल्पना भी नहीं कर पाते थे कि इसके बनने के समय भारत की स्थिति क्या होगी? यह मुद्दा हिन्दू अस्मिता के प्रश्न से जुड़ा था, लेकिन अब मंदिर निर्मित होते-होते यह स्पष्ट हो गया है कि यह केवल अस्मिता का विषय ही नहीं, यह भारत के भविष्य और भारत को पुनः विश्वगुरु बनाने का विषय था। आज यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि अयोध्या में सिर्फ राम मंदिर नहीं बन रहा है, इसके साथ-साथ एक नया भारत भी बन रहा है जो विश्व का नेतृत्व करने के लिए संकल्पित है।

यह नया भारत प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की अगुवाई में बहुलता, विविधता और समावेशिता का सम्मान करने वाला एकमात्र देश है। यह भारत अपनी पुरातन सांस्कृतिक पहचान को आधुनिक कलेवर में भी पोषित और संवर्धित करने की क्षमता रखता है। यह भारत अपनी धरोहर को वापस पाने के लिए सदियों तक प्रतीक्षा कर सकता है और अहिंसा के रास्ते पर चलकर उसे प्राप्त भी कर सकता है। यह नया भारत युद्ध एवं परमाणु बम के उपयोग के बिना ही अपनी विधि-व्यवस्था के माध्यम से सबसे पुरानी समस्याओं को सुलझाने की क्षमता रखता है। उसे कोई बाहरी दखल बर्दाश्त नहीं है। यह नया भारत स्वदेशी चंद्रयान का सफल परीक्षण कर सकता है तो यह अपने आराध्य श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य राम मंदिर का पुनः निर्माण कर सदियों की बर्बर गुलामी के चिन्ह को भी मिटा सकता है।

प्रश्न यह है कि भारत सदियों से दिव्य शक्तियों और असीम क्षमताओं वाला देश रहा है

तो फिर इसकी अपनी महिमा, गरिमा क्यों धूमिल हो गई थी? इसका एक ही उत्तर है, देश की चैतन्यता पर प्रहार। देश की चेतना ऐसी बना दी गई थी कि राम मंदिर की बात करना सांप्रदायिक और मुस्लिम तुष्टीकरण करना सेकुलरिज्म था। भारत का गौरव महिमा गान पिछड़ापन था और विदेशों का गुणगान करना बुद्धिजीविता थी। अपने संविधान पर अविश्वास करते हुए, अपने ही मुद्दों को संयुक्तराष्ट्र की विदेशी मध्यस्तता से हल कराने की कोशिश की जाती थी। इन सब बातों पर राष्ट्रवादियों के अलावा शेष समाज मौन ही रहता था, क्योंकि हमारी चेतना का स्तर इतना गिरा दिया गया था कि हम इन सब मुद्दों के प्रति उदासीन रहने के अभ्यस्त हो गए थे।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आज भारत के लोगों में राष्ट्रबोध के साथ सनातन के प्रति सकारात्मक बदलाव आया है। हमारी स्व-चेतना का स्तर शिखर की ओर अग्रसर है। भाजपा सहित अनेक राष्ट्रवादी संगठनों के प्रयासों से राष्ट्रीयता का सर्वांग जागरण हुआ है। भारतीय जनमानस अपनी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक धरोहरों, अपने मूल्यों एवं अपनी मान्यताओं के प्रति इतना अधिक सजग हो गया है कि उसके मुद्दों को लटकाने के लिए अब अदालतें भी तैयार नहीं है।

निःसंदेह, भारत की इस चैतन्यता का केंद्र बिंदु प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्वकाल है। साल 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश की जनता में जो विश्वास जगाया है, वह अतुलनीय और अकथनीय है। उनके नेतृत्व में भारत की क्षमता, शक्ति, छवि और नियति सब कुछ परिवर्तित हुई है। जब नेतृत्व स्वयं अपने आचरण से देश की संस्कृति, आध्यात्म, मूल्यों, परंपराओं और धरोहरों के प्रति अगाध प्रेम और प्रतिबद्धता प्रदर्शित करता है तो जनता की चेतना का जागरण होना स्वाभाविक है। डरा हुआ और तुष्टीकरण से शासन चलाने वाला अक्षम नेतृत्व देश की चेतना को कमजोर ही करता है। सबका साथ, सबका विश्वास का संकल्प लेकर मजबूत कदमों के साथ आगे बढ़ने वाला नेतृत्व राष्ट्र को परम-वैभव की ओर उन्मुख करता है। यही राम की रीति-नीति भी है। आज जब विश्व भर में अशांति है, एक देश दूसरे देश का दमन कर रहा है, तब भारत ऐतिहासिक नवनिर्माण कर रहा है और संकल्पित, विकसित और अखण्ड भारत की दिशा में आगे बढ़ रहा है। ■

लेखक - भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष व सांसद हैं

## गांव चलो अभियान विकसित भारत के संकल्प को पूरा करने गांव का विकसित होना जरूरी



गांव को विकसित किए बिना विकसित भारत के संकल्प को पूरा नहीं किया जा सकता। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में चलाए जा रहे विकसित भारत संकल्प को पूरा करने के लिए गांव को विकसित करना जरूरी है। भाजपा गांवों को विकसित बनाने के लिए राज्य सरकार के साथ केंद्र सरकार की गरीब कल्याण और जनहितैषी योजनाओं को अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के लिए गांव चलो अभियान चला रही है। गांव चलो अभियान के तहत पार्टी के कार्यकर्ता गांव में एक रात रहेंगे। प्रदेश के मुख्यमंत्री और प्रदेश अध्यक्ष से लेकर पार्टी के प्रदेश और जिला पदाधिकारी एक गांव में 24 घंटे रहेंगे।

भारतीय जनता पार्टी में कार्यकर्ता सबसे पहले होता है। इस अभियान के माध्यम से भाजपा विधानसभा चुनाव में हारे हुए बूथों को जीतने और जीते हुए बूथों पर 10 प्रतिशत वोट शेयर बढ़ाने को लेकर कार्य करेंगी। गांव के सभी पात्र व्यक्तियों को केंद्र और राज्य सरकार की गरीब कल्याण और जनहितैषी योजनाओं का लाभ दिलाया जाएगा। कार्यकर्ता इस दौरान गांव में होने वाली गतिविधियों को समझेंगे और ऐसे व्यक्ति जिनका नाम मतदाता सूची में किसी कारणवश छूट गया है, उनका नाम मतदाता सूची में शामिल कराने में सहयोग करेंगे। सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लोगों को मिल सके इसके लिए उनका नाम योजनाओं में जुड़वाने के लिए प्रयास करेंगे। ■

# 10 साल की तपस्या 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर प्रभु राम ने हमें हमेशा अपने वचन की मर्यादा रखने की सीख दी है...

हमारी सरकार पहले दिन से प्रयास कर रही है कि श्रीराम के आदर्शों पर चलते हुए देश में सुशासन हो, देश में ईमानदारी का राज हो। ये रामराज्य ही है जिसने सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास की प्रेरणा दी है। मानस में संत तुलसीदास जी कहते हैं कि-

**जेहि विधि सुखी होहिं पुर लोणा।  
करहिं कृपानिधि सोई संजोगा।।**

यानी जनता जिससे सुखी होती है, कृपानिधान श्री रामचंद्र जी जैसे ही कार्य किया करते थे। जनता जनार्दन की सेवा के लिए इससे बड़ी प्रेरणा और क्या हो सकती है। इसलिए 2014 में सरकार बनते ही कहा था... सरकार गरीबों के लिए समर्पित सरकार है। इसलिए एक के बाद एक ऐसी योजनाएं लागू कीं, जिससे गरीब की मुश्किलें कम हों, उनका जीवन आसान बने।

घर ना होने की वजह से, शौचालय ना होने की वजह से गरीब को कदम-कदम पर अपमानित होना पड़ता था। विशेष रूप से माताओं-बहनों-बेटियों के लिए ये बहुत बड़ी सजा थी। और इसलिए सबसे पहले हमने गरीबों के घर और शौचालय के निर्माण पर ध्यान दिया। 10 करोड़ से ज्यादा शौचालय बनाकर गरीबों को दिए। वो सिर्फ शौचालय नहीं हैं... इज्जतघर दिया है, माताओं-बहनों के लिए इज्जत की गारंटी दी है।

4 करोड़ से अधिक पक्के घर बनाकर गरीबों को दिए।

दो प्रकार के विचार रहते हैं। एक- राजनीतिक उल्लू सीधा करने के लिए लोगों को भड़काते रहो, भड़काते रहो, भड़काते रहो। हमारा मार्ग है dignity of labour, हमारा मार्ग है आत्मनिर्भर श्रमिक, हमारा मार्ग है गरीबों का कल्याण।

पहले के समय में शहरों में जहां झुगियां ही झुगियां बनीं, हम उन झुगिवासियों को पक्के घर बनाकर देने का काम कर रहे हैं। सरकार की



**देश में लंबे समय तक गरीबी हटाओ के नारे लगते रहे। लेकिन इन नारों के बावजूद गरीबी नहीं हटी। ऐसे सूत्र चलते थे...आधी रोटी खाएंगे।**

अरे क्यों भाई...आधी रोटी खाएंगे और तुमको वोट देंगे...ऐसा कहते थे लोग। क्यों आधी रोटी खाएंगे...मोदी है पूरी खाएंगे। जनता-जनार्दन का यही सपना, यही संकल्प...यही तो फर्क है।

कोशिश है कि रोजी रोटी के लिए गांव से आने वाले लोगों को भाड़े पर झुगियों में ना रहना पड़े। आज शहरों में ऐसी कॉलोनियां बनाई जा रही हैं, जहां उचित किराए पर ऐसे साथियों को मकान मिल सके। एक बड़ा अभियान हम चला रहे हैं। हमारी कोशिश है कि जहां लोग काम करते हैं, उसके आसपास ही आवास का प्रबंध हो।

देश में लंबे समय तक गरीबी हटाओ के

नारे लगते रहे। लेकिन इन नारों के बावजूद गरीबी नहीं हटी। ऐसे सूत्र चलते थे...आधी रोटी खाएंगे। अरे क्यों भाई...आधी रोटी खाएंगे और तुमको वोट देंगे...ऐसा कहते थे लोग। क्यों आधी रोटी खाएंगे...मोदी है पूरी खाएंगे। जनता-जनार्दन का यही सपना, यही संकल्प...यही तो फर्क है।

हमारे देश में लंबे समय तक ये जो गरीब

हटाओ के नारे लगते रहे ना, लेकिन इन नारों के बावजूद गरीबी नहीं हटी। और इसका सबसे बड़ा कारण ये था कि गरीबों के नाम पर योजनाएं तो बनाई जाती थीं, लेकिन उनका लाभ असली हकदार को नहीं मिलता था। पहले की सरकारों में गरीब के हक का पैसा बीच में ही बिचौलिये लूट जाते थे। यानी पहले की सरकारों की नीयत, नीति और निष्ठा कठघरे में थी। हमारी नीयत साफ है और नीति गरीबों को सशक्त करने की है। हमारी निष्ठा देश के प्रति है।

इसलिए मोदी ने गारंटी दी, कि सरकारी लाभ अब डायरेक्ट लाभार्थी तक पहुंचेगा...कोई बिचौलिया नहीं। हमने लाभार्थियों के रास्ते में खड़े बिचौलियों को हटाने का काम किया। ये जो लोग कुछ चिल्लाते हैं ना, उसका कारण यही है...मलाई खाना उनका बंद हो गया है। बीते 10 वर्षों में 30 लाख करोड़ रुपए से ज्यादा सीधे गरीब, किसान, महिला और युवा लाभार्थियों के बैंक खातों में ट्रांसफर किए हैं। जनधन, आधार और मोबाइल कवच बनाकर करीब 10 करोड़ ऐसे फर्जी लाभार्थियों को हटाया जिनका जन्म भी नहीं हुआ था और जो आपके हित के पैसे खा रहे थे। जो बेटी पैदा नहीं हुई वो विधवा हो जाती थी, सरकार से पैसे मार लिए जाते थे। जो व्यक्ति पैदा नहीं हुआ, उसको बीमार दिखा करके रुपये मार लिए जाते थे।

सरकार ने गरीबों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए काम किया, गरीब कल्याण की अनेक योजनाएं शुरू कीं, तो इसके नतीजे भी निकले हैं। हमारी सरकार के 9 वर्षों में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर निकले हैं। ये आंकड़ा छोटा नहीं

है, दस साल की तपस्या का परिणाम है। गरीबों के लिए जिंदगी खपाने के संकल्प का परिणाम है। और जब सच्ची इच्छा, निष्ठा, पवित्रता से काम करते हैं तो परिणाम भी अपनी आंखों के सामने दिखते हैं।

देश के 25 करोड़ लोगों ने गरीबी को कैसे परास्त किया, ये देश के लोगों की बहुत बड़ी सफलता है। गरीब को साधन-संसाधन मिलें तो उसमें इतना सामर्थ्य है कि वो गरीबी को परास्त कर देता है। इसलिए हमने देश के गरीबों को सुविधाएं दीं, साधन दिए और उनकी हर चिंता दूर करने का ईमानदारी से प्रयास किया। एक समय था जब गरीब की सबसे बड़ी चिंता थी, दो वक्त की रोटी। आज सरकार ने देश के गरीबों को मुफ्त राशन देकर उसे अनेक चिंताओं से मुक्त किया है... आधी रोटी खाकर नारे नहीं लगाएगा।

कोरोना के समय में शुरू की गई ये योजना अब अगले 5 साल तक के लिए बढ़ा दी गई है। 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं। और ये भी पता है कि आने वाले पांच साल... जो गरीबी से बाहर निकले हैं, उनको भी ताकत देते रहना पड़ेगा, ताकि कभी किसी कारण वो गरीबी में लौट न जाएं, फिर मुसीबत में फंस न जाएं। और इसलिए जो योजनाएं हैं, उसका फायदा भी उनको मिलते रहने वाला है।

सिर्फ मुफ्त राशन की व्यवस्था ही नहीं की, बल्कि राशन कार्ड से जुड़ी समस्या को भी हल किया। पहले एक जगह बना राशन कार्ड, दूसरे राज्य में चल ही नहीं पाता था। अगर कोई साथी काम के लिए दूसरे राज्य जाता था, तो वहां उसे राशन लेने में बहुत सी मुश्किलें आती थीं। हमने एक देश, एक राशनकार्ड की व्यवस्था बनाई। इससे एक राशनकार्ड पूरे देश में चलता है। यही तो मोदी की गारंटी है।

हर गरीब की हमेशा से चिंता रही है कि वो अगर बीमार हो गया, तो फिर इलाज कैसे कराएगा। और गरीब परिवार में अगर एक बार बीमारी आ गई तो मेहनत करके गरीबी से बाहर निकलने की उसकी सारी बातें टूट जाती हैं, वो फिर से बीमारी के कारण गरीबी के अंदर फंस जाता है...पूरा परिवार फिर संकट में फंस जाता था। इसे समझते हुए हमारी सरकार ने 5 लाख रुपए तक के मुफ्त इलाज की सुविधा देने वाली आयुष्मान योजना शुरू की। आज इस योजना ने गरीबों के एक लाख करोड़ रुपए खर्च होने से बचाए हैं।

ये मोदी की गारंटी की ताकत है... एक लाख करोड़ रुपया इस योजना ने आपकी जेब में बचा दिया और जिंदगी बच गई वो और आज

सरकार पीएम जन औषधि केंद्रों पर 80 परसेंट डिस्काउंट पर दवाएं दे रही है। इससे भी गरीबों के 30 हजार करोड़ रुपए खर्च होने से बचे हैं। गरीब परिवार में बीमारी होने का एक बहुत बड़ा कारण गंदा पानी भी होता है। इसलिए हमारी सरकार आज जल जीवन मिशन चला रही है, हर घर को पानी के कनेक्शन से जोड़ रही है।

इन योजनाओं का लाभ पाने वालों में सबसे बड़ी संख्या पिछड़ों और जनजातीय समुदाय के लोगों की है। गरीब को पक्का घर मिले, शौचालय मिले, उसके घर में बिजली कनेक्शन हो, पानी हो, ऐसी सारी सुविधाएं... ये सच्चे अर्थ में सामाजिक न्याय की मोदी की गारंटी हैं।

गरीब से गरीब को भी आर्थिक सुरक्षा का कवच मिले, ये भी मोदी की गारंटी है। 10 वर्ष पहले तक गरीब परिवार जीवन बीमा के बारे में सोच भी नहीं सकता था। आज उसे 2-2 लाख रुपए तक के दुर्घटना और जीवन बीमा की सुरक्षा मिली है। ये बीमा सुरक्षा मिलने के बाद, ये आंकड़ा भी आपको प्रसन्न करेगा...16 हजार करोड़ रुपए उन गरीब परिवारों को मिले हैं जिनके परिवार में कोई मुसीबत आ गई और ये बीमा के रूप में उनके खातों में ट्रांसफर किए गए।

आज मोदी की गारंटी, सबसे अधिक उनके काम आ रही है जिनके पास बैंक को गारंटी देने के लिए कुछ नहीं था। 2014 तक एक बैंक खाता तक नहीं था। जब बैंकों में खाता ही नहीं था, तो उन्हें बैंकों से लोन कैसे मिलता? जनधन योजना चलाकर हमारी सरकार ने 50 करोड़ गरीबों को देश की बैंकिंग व्यवस्था से जोड़ा।

देश भर में रेहड़ी-फुटपाथ पर छोटे-छोटे काम करने वाले लोग...सब्जी बेचने के लिए अपनी सोसायटी में आ करके सब्जी बेचने वाले लोग, दूध बेचने वाले लोग, अखबार बेचने वाले लोग, रास्ते पर खड़े रह करके खिलौने बेचने वाले लोग, फूल बेचने वाले लोग, ऐसे लाखों साथियों को पहले किसी ने पूछा नहीं था। और जिनको किसी ने पूछा नहीं, मोदी ने उसको पूछा है। मोदी ने पहली बार इन्हें पूछा है, इनकी मदद के लिए आगे आया है। इन साथियों को पहले बाजार से महंगे ब्याज पर ऋण लेना पड़ता था, क्योंकि इनके पास बैंक को देने के लिए गारंटी नहीं थी। मोदी ने इनकी गारंटी ली... बैंकों से कहा, ये मेरी गारंटी है, इनको पैसे दीजिए, ये गरीब लोग लौटा देंगे...मेरा गरीब पर भरोसा है। और आज बिना गारंटी के ये रेहड़ी-पटरी वाले लोगों को बैंक से लोन मिल रहा है। ऐसे साथियों को अभी तक हजारों करोड़ रुपए की मदद दी गई है।



पीढ़ियां बदलीं, फैशन बदले, लेकिन क्या किसी ने कपड़े सिलने वाले साथियों के बारे में कभी सोचा था क्या? मैं इन्हें अपना विश्वकर्मा साथी मानता हूँ। ऐसे हर विश्वकर्मा साथियों का जीवन बदलने के लिए हमने पीएम विश्वकर्मा योजना बनाई है।

ये विश्वकर्मा योजना के तहत इन साथियों को ट्रेनिंग दी जा रही है, आधुनिक उपकरण दिए जा रहे हैं। अपना काम आगे बढ़ाने के लिए इन्हें बैंकों से बिना गारंटी दिए लाखों रुपए का ऋण भी मिल रहा है।

आजकल तो विकसित भारत संकल्प यात्रा गांव-गांव, मोहल्ले-मोहल्ले पहुंच रही है। इसमें मोदी की गारंटी वाली गाड़ी है। इसमें आप पीएम विश्वकर्मा सहित सरकार की हर योजना से जुड़ सकते हैं।

विकसित भारत के निर्माण के लिए आत्मनिर्भर भारत बनाना जरूरी है। और आत्मनिर्भर भारत बनाने में हमारे छोटे, लघु और कुटीर उद्योगों की बहुत बड़ी भागीदारी है। इसलिए, केंद्र सरकार, MSMEs को, छोटे उद्योगों को लगातार बढ़ावा दे रही है। कोरोना काल में जब MSMEs पर संकट आया तो, सरकार ने इन्हें लाखों करोड़ रुपए की मदद दी थी। इससे लघु उद्योगों में बड़ी संख्या में रोजगार खत्म होने से बच पाए।

सरकार देश के हर जिले में वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट योजना भी चला रही है। वोकल फॉर लोकल का अभियान भी आज हमारे छोटे उद्योगों के प्रति जागरूकता बढ़ा रहा है। आज जिस प्रकार दुनिया में भारत की साख बढ़ रही है, उससे मेड इन इंडिया उत्पादों के लिए भी संभावनाएं बढ़ रही हैं। केंद्र सरकार के इन सारे अभियानों का लाभ, लोगों को हो रहा है, उद्योगों को हो रहा है।

केंद्र सरकार के तीसरे कार्यकाल में भारत भी दुनिया की टॉप तीन अर्थव्यवस्था में शामिल होने वाला है। मैंने देशवासियों को गारंटी दी है कि आने वाली मेरी टर्म में मैं पहले तीन देशों में दुनिया में भारत को ला करके खड़ा करूंगा...ये मोदी ने गारंटी दी है। और आपके भरोसे मुझे लगता है मेरी ये गारंटी पूरी होगी। आपके आशीर्वाद की ताकत है। अर्थव्यवस्था के इस विस्तार में हमारे अनेक शहरों की बड़ी भूमिका है।

डबल इंजन की सरकार इसलिए इन शहरों में पानी और सीवेज जैसी सुविधाओं को लगातार बेहतर बना रही है। शहरों को अच्छी सड़कों, रेलवे और हवाई मार्ग से जोड़ने का काम तेज गति से चल रहा है। ■

## 30 करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाए गए

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री-जन आरोग्य योजना ने 30 करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाने की बड़ी सफलता हासिल की है। आयुष्मान कार्ड का निर्माण सबसे बुनियादी गतिविधि है और यह सुनिश्चित करने के लिए लगातार टोस प्रयास किए जा रहे हैं कि योजना के तहत प्रत्येक लाभार्थी के पास आयुष्मान कार्ड हो। लगातार प्रयासों के परिणामस्वरूप, इस योजना के तहत 30 करोड़ आयुष्मान कार्ड बनाने की उपलब्धि हासिल हो चुकी है। पिछले दो वित्तीय वर्षों के दौरान ही

16.7 करोड़ से अधिक आयुष्मान कार्ड बनाए गए हैं। आज की तारीख में वर्ष 2023-24 के दौरान 7.5 करोड़ से ज्यादा आयुष्मान कार्ड बनाए जा चुके हैं। इसका मतलब है कि हर मिनट लगभग 181 आयुष्मान कार्ड बनाए जा रहे हैं। ■



## प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना 1 करोड़ परिवारों को घर की छत पर सौर ऊर्जा मिलेगी

- प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना के अंतर्गत देश के 1 करोड़ परिवारों को अपने घर की छत पर सौर ऊर्जा मिलेगी।
- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के शुभ अवसर पर कहा कि मेरा संकल्प और भी दृढ़ हुआ है कि भारत के लोगों के घर की छत पर उनका स्वयं का सोलर रूफ टॉप सिस्टम हो।
- अयोध्या से लौटने के बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पहला निर्णय यह लिया है कि सरकार 1 करोड़ घरों की छत पर रूफटॉप सोलर प्रणाली लगाने के लक्ष्य के साथ "प्रधानमंत्री सूर्योदय योजना" का शुभारंभ करेगी।
- इससे न केवल गरीबों और मध्यम वर्ग के बिजली के बिल में कमी आएगी, बल्कि इससे भारत ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर भी बनेगा। सूर्यवंशी भगवान श्री राम के आलोक से विश्व के सभी भक्तगण सदैव ऊर्जा प्राप्त करते हैं। ■



# विकसित भारत संकल्प यात्रा का उद्देश्य प्रत्येक हकदार को सरकारी योजना का लाभ पहुँचाना



**वि** कसित भारत संकल्प यात्रा से 50 दिन के कम समय में 11 करोड़ लोगों का जुड़ना, ये अपने आप में अभूतपूर्व है। समाज में अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति तक सरकार खुद पहुँच रही है, उसे अपनी योजनाओं से जोड़ रही है। विकसित भारत संकल्प यात्रा सिर्फ सरकार की नहीं, बल्कि देश की यात्रा बन चुकी है, सपनों की यात्रा बन चुकी है, संकल्पों की यात्रा बन चुकी है, भरोसे की यात्रा बन चुकी है और इसलिए तो उसे मोदी की गारंटी वाली गाड़ी बड़े भाव से आज देश का हर क्षेत्र, हर परिवार, अपने बेहतर भविष्य की उम्मीद के रूप में ये गारंटी वाली गाड़ी देख रहा है।

इस यात्रा को लेकर गांव हो या शहर, हर जगह उमंग है, उत्साह है, विश्वास है। मुंबई जैसा महानगर हो या मिजोरम का दूर-सुदूर का गाँव, कारगिल के पहाड़ हों या फिर कन्याकुमारी का समुद्री तट, देश के कोने-कोने में मोदी की गारंटी वाली गाड़ी पहुँच रही है।

**विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान 2 करोड़ से ज्यादा गरीबों के स्वास्थ्य की जांच हुई है। इसी समय में एक करोड़ लोगों की टीबी की बीमारी की भी जांच हुई है, 22 लाख लोगों की सिकल सेल अनीमिया की जांच हुई है।**

आखिर ये सारे लाभार्थी भाई-बहन, ये कौन लोग हैं? ये सारे लोग गांव-गरीब, दलित, पिछड़े, आदिवासी समाज के लोग हैं, जिनके लिए डॉक्टर तक पहुँचना पहले की सरकारों में एक बहुत बड़ी चुनौती रही है।

जिन गरीब लोगों का जीवन सरकारी योजनाओं का लाभ पाने के इंतजार में बीत गया, वो आज एक सार्थक बदलाव देख रहे हैं। किसने सोचा था कि कभी सरकारी कर्मचारी, सरकारी अफसर, ये बाबू और ये नेता लोग खुद गरीब के दरवाजे पर पहुँचकर पूछेंगे कि आपको सरकारी योजना का लाभ मिला या नहीं मिला? लेकिन ये हो रहा है और पूरी ईमानदारी से हो

रहा है। मोदी की गारंटी वाली गाड़ी के साथ, सरकारी दफ्तर, जनप्रतिनिधि, देशवासियों के पास, उनके गांव-मोहल्ले पहुँच रहे हैं।

आज देश में ही नहीं, बल्कि दुनिया में भी मोदी की गारंटी की बहुत चर्चा हो रही है। लेकिन मोदी की गारंटी का मतलब क्या है? आखिर, इस प्रकार मिशन मोड पर देश के हर लाभार्थी तक सरकार पहुँचना, ये इतनी मेहनत

## सरकार चाहती है कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों को वैसा जीवन जीना न पड़े, आपके पूर्वजों को जो मुसीबतें झेलनी पड़ी, आपके बुजुर्गों को जो कठिनाईयां झेलनी पड़ी, वो आपको झेलनी न पड़े, इसी मकसद से इतनी मेहनत कर रहे हैं।

देश की एक बहुत बड़ी आबादी को रोजमर्रा की छोटी-छोटी जरूरतों के लिए होने वाले संघर्ष से बाहर निकालना चाहते हैं।

क्यों करते हैं। दिन रात सारी सरकार आपकी सेवा में इतनी मेहनत क्यों कर रही है? सरकारी योजनाओं के सैचुरेशन और विकसित भारत के संकल्प में क्या संबंध है? हमारे देश में अनेक पीढ़ियों ने अभाव में जीवन बिताया है, अधूरे-अधूरे सपनों के साथ जिंदगी सिमट गई। उन्होंने अभाव को ही अपना भाग्य माना और अभाव में ही जिंदगी गुजारने के लिए मजबूर रहे। छोटी-छोटी जरूरतों का ये संघर्ष देश में गरीबों को, किसानों को, महिलाओं को और युवाओं में इन लोगों को सबसे अधिक रहा है।

सरकार चाहती है कि वर्तमान और भावी पीढ़ियों को वैसा जीवन जीना न पड़े, आपके पूर्वजों को जो मुसीबतें झेलनी पड़ी, आपके बुजुर्गों को जो कठिनाईयां झेलनी पड़ी, वो आपको झेलनी न पड़े, इसी मकसद से इतनी मेहनत कर रहे हैं। देश की एक बहुत बड़ी आबादी को रोजमर्रा की छोटी-छोटी जरूरतों के लिए होने वाले संघर्ष से बाहर निकालना चाहते हैं। इसलिए गरीबों, किसानों, महिलाओं और युवाओं के भविष्य पर फोकस कर रहे हैं। और यही हमारे देश की सबसे बड़ी चार जातियां हैं। जब गरीब-किसान-महिलाएं और युवा ये चार जातियां, अगर ये सशक्त हो जाएंगे, ये मजबूत हो जाएंगे तो हिन्दुस्तान का सशक्त होना पक्का हो जाएगा। इसलिए ये विकसित भारत संकल्प यात्रा शुरू हुई है और देश के कोने-कोने में जा रही है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा का सबसे बड़ा मकसद है- कोई भी हकदार, सरकारी योजना के लाभ से छूटना नहीं चाहिए। कई बार जागरूकता की कमी से, कई बार दूसरे कारणों से कुछ लोग सरकारी योजनाओं के लाभ से वंचित रह जाते हैं। ऐसे लोगों तक पहुंचना सरकार अपना दायित्व समझती है। इसलिए ये मोदी की गारंटी की गाड़ी गांव-गांव जा रही है। सबसे ये यात्रा शुरू हुई है तब से लगभग 12 लाख नए लाभार्थियों ने उज्वला के मुफ्त गैस कनेक्शन के लिए आवेदन किया है। इसके

अलावा सुरक्षा बीमा योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, पीएम स्वनिधि के लिए भी इस यात्रा के दौरान लाखों की संख्या में आवेदन प्राप्त हुए हैं।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान 2 करोड़ से ज्यादा गरीबों के स्वास्थ्य की जांच हुई है। इसी समय में एक करोड़ लोगों की टीबी की बीमारी की भी जांच हुई है, 22 लाख लोगों की सिकल सेल अनीमिया की जांच हुई है। आखिर ये सारे लाभार्थी भाई-बहन, ये कौन लोग हैं? ये सारे लोग गांव-गरीब, दलित, पिछड़े, आदिवासी समाज के लोग हैं, जिनके लिए डॉक्टर तक पहुंचना पहले की सरकारों में एक बहुत बड़ी चुनौती रही है।

आज डॉक्टर मौके पर ही उनकी जांच कर रहे हैं। और एक बार उनकी शुरुआती जांच हो गई तो उसके बाद आयुष्मान योजना के तहत 5 लाख रुपए तक का मुफ्त इलाज तो है ही। किडनी के मरीजों के लिए मुफ्त डायलिसिस की सुविधा और जन औषधि केंद्रों पर सस्ती दवाएं भी उनके लिए आज उपलब्ध हैं। देशभर में बन रहे आयुष्मान आरोग्य मंदिर, ये तो गांव और गरीब के लिए आरोग्य के बहुत बड़े केंद्र बन चुके हैं। यानि विकसित भारत संकल्प यात्रा, गरीब के स्वास्थ्य के लिए भी एक वरदान साबित हुई है।

पहले ऐसी अनेक बहनें थीं, जिनके पास सिलाई-कढ़ाई-बुनाई जैसी कोई न कोई स्किल थी, लेकिन उनके पास अपना काम शुरू करने के लिए कोई साधन नहीं था। मुद्रा योजना ने उन्हें अपने सपने पूरे करने का भरोसा दिया है, मोदी की गारंटी है। आज गांव-गांव में रोजगार-स्वरोजगार इसके नए मौके बन रहे हैं। आज कोई बैंक मित्र है, कोई पशु सखी है, कोई आशा-ANM-आंगनवाड़ी में है। बीते 10 वर्षों में महिला सेल्फ हेल्प ग्रुप्स से 10 करोड़ बहनें जुड़ चुकी हैं। इन बहनों को साढ़े 7 लाख करोड़ रुपए से अधिक की मदद दी जा चुकी है। इसमें अनेक बहनें बीते वर्षों में लखपति

दीदी बनी हैं। और इस सफलता को देखते हुए ही सपना संजोया है, कि दो करोड़, आंकड़ा बहुत बड़ा है। दो करोड़ लखपति दीदी बनाना है। आप विचार कीजिए लखपति दीदी की संख्या दो करोड़ हो जाएगी कितनी बड़ी क्रांति हो जाएगी। सरकार ने नमो ड्रोन दीदी योजना भी शुरू की है।

विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान लगभग 1 लाख ड्रॉंस का प्रदर्शन किया गया है। देश के इतिहास में पहली बार किसी टेक्नॉलॉजी से इस प्रकार मिशन मोड पर जनता को जोड़ा जा रहा है। अभी तो कृषि क्षेत्र में ही ड्रोन के उपयोग के लिए ट्रेनिंग दी जा रही है। लेकिन आने वाले दिनों में इसका दायरा दूसरे क्षेत्रों में भी बढ़ने वाला है।

हमारे देश में किसानों को लेकर, कृषि नीति को लेकर जो चर्चाएं होती हैं, पहले की सरकारों में उसका दायरा भी बहुत सीमित था। किसान के सशक्तिकरण की चर्चा सिर्फ पैदावार और उपज की बिक्री के इर्द गिर्द तक सीमित रही। जबकि किसान को अपने दैनिक जीवन में भांति-भांति की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए हमारी सरकार ने किसान की हर मुश्किल को आसान करने के लिए चौतरफा प्रयास किए। पीएम किसान सम्मान निधि के माध्यम से हर किसान को कम से कम 30 हजार रुपए दिए जा चुके हैं। छोटे किसानों को मुसीबतों से बाहर निकालने के लिए हम निरंतर काम कर रहे हैं।

कृषि में सहकारिता को बढ़ावा देना, ये इसी सोच का परिणाम है। PACS हों, FPO हों, छोटे किसानों के ऐसे संगठन आज बहुत बड़ी आर्थिक ताकत बनते जा रहे हैं। भंडारण की सुविधा से लेकर फूड प्रोसेसिंग उद्योग तक किसानों के ऐसे अनेक सहकारी संगठनों को हम आगे ला रहे हैं।

सरकार ने दाल किसानों के लिए भी, पल्सेज की जो खेती करते हैं उनके लिए एक बहुत बड़ा निर्णय लिया है। अब दाल पैदा करने वाले किसान जो दाल किसान हैं, वो ऑनलाइन भी सीधे सरकार को दालें बेच पाएंगे। इसमें दाल किसानों को MSP पर खरीद की गारंटी तो मिलेगी ही, साथ ही बाजार में भी बेहतर दाम सुनिश्चित होंगे। अभी ये सुविधा तूरर या अरहर दाल के लिए दी गई है। लेकिन आने वाले समय में दूसरी दालों के लिए भी इसका दायरा बढ़ाया जाएगा। प्रयास है कि दाल खरीदने के लिए जो पैसा हम विदेश भेजते हैं, वो देश के ही किसानों को मिल सके। ■



# नए भारत की नई शक्ति, नया स्वरूप हैं नव मतदाता

**स्वामी** विवेकानंद सिर्फ भारत के ही नहीं, सारी दुनिया के युवाओं के आदर्श हैं। उन्हें पूरी दुनिया एक यूथ आईकॉन के रूप में देखती है। हमारे प्रधानमंत्री जी का फोकस भी देश की युवाशक्ति पर है, देश में लगभग 5 करोड़ नव मतदाता हैं, जिनमें से करीब 53 लाख मध्यप्रदेश में हैं। देश और मध्यप्रदेश में नौजवानों की यह जो पीढ़ी है, इसे प्रधानमंत्री जी एक बड़ी ताकत के रूप में देखते हैं और यही नए भारत का नया स्वरूप है। सृजनात्मक काम करने की क्षमता रखने वाले ऐसे नौजवान देश के किसी भी कोने में हों, प्रधानमंत्री जी उनसे राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका को लेकर संवाद कर रहे हैं। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा द्वारा पहली बार मतदाता बने 18 वर्ष से 23 वर्ष के युवाओं को पार्टी से जोड़ने के अभियान के तहत देश भर के पांच स्थानों पर नमो नव मतदाता सम्मेलन का आयोजन किया गया। 'नमो नवमतदाता सम्मेलन' को प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी, पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जगत प्रकाश नड्डा जी, मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री तेजस्वी सूर्या ने संबोधित किया।

22 जनवरी को अयोध्या में रामजन्मभूमि पर बने भव्य मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का जो ऐतिहासिक कार्य हुआ, वह केवल एक धार्मिक विषय नहीं है। बल्कि वह उन असंभव लगने वाले अनेक कामों में से एक है, जिन्हें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2014 के बाद करना शुरू किया है। एक युवा के रूप में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जम्मू कश्मीर की यात्रा की थी और वहां का माहौल देखकर कहा था कि देश का युवा एटम का रूप लेकर जम्मू कश्मीर से आतंकवाद का सफाया करेगा।

किसी ने कल्पना नहीं की थी कि जम्मू कश्मीर में आतंकवाद को प्रश्रय देने वाली धारा-370 एक दिन समाप्त होगी। लेकिन प्रधानमंत्री जी ने धारा 370 हटाकर देश को एक सूत्र में बांधने का काम किया। आज



**22 जनवरी को अयोध्या में रामजन्मभूमि पर बने भव्य मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का जो ऐतिहासिक कार्य हुआ, वह केवल एक धार्मिक विषय नहीं है। बल्कि वह उन असंभव लगने वाले अनेक कामों में से एक है, जिन्हें प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2014 के बाद करना शुरू किया है।**

एक युवा के रूप में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने जम्मू कश्मीर की यात्रा की थी और वहां का माहौल देखकर कहा था कि देश का युवा एटम का रूप लेकर जम्मू कश्मीर से आतंकवाद का सफाया करेगा।

अगर कोई आतंकवादी देश में घुसने की कोशिश करता है, तो देश की सेनाओं को प्रधानमंत्री जी ने इतना सक्षम बना दिया है कि दिल्ली से परमिशन लिए बिना उस आतंकी का सफाया कर देंगी।

पूर्व प्रधानमंत्री श्री राजीव गांधी कहते थे कि किसी गरीब के लिए 1 रुपया भेजते हैं तो 85 पैसे भ्रष्टाचार में चला जाता है, गरीब तक केवल 15 पैसे पहुंचता है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने इस स्थिति को देखा

और 2014 में भाजपा सरकार बनने के बाद गरीबों के जन-धन खाते खोलकर इस व्यवस्था को बदल दिया। आज केंद्र सरकार 1 रुपया भेजती है, तो खाते में एक रुपया ही पहुंचता है। देश में दलाल और बिचौलियों की व्यवस्था को समाप्त कर दिया। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में आज की युवा पीढ़ी भी आतंकवाद, भ्रष्टाचार जैसी बुराईयों के प्रति जीरो टालरेंस की ओर कदम बढ़ा रही है। ■

# हर बूथ पर 10 प्रतिशत वोट बढ़ाना है



**विधानसभा** चुनाव में हमारे उत्साह से भरे कार्यकर्ता हर बूथ पर जीत का लक्ष्य लेकर मैदान में उतरे और सभी ने चुनाव जीतने के लिए टीम भावना के साथ कड़ी मेहनत की। केंद्र व राज्य सरकारों की जनहितैषी योजनाओं से लोगों के जीवन में बदलाव आए हैं। दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता और हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की कड़ी मेहनत, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जेपी नड्डा जी का मार्गदर्शन तथा केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी की कुशल रणनीति का ही परिणाम है कि विधानसभा चुनाव में हमें ऐतिहासिक जीत मिली है। पार्टी नेतृत्व ने 51 प्रतिशत वोट शेयर का लक्ष्य दिया था और हम हर बूथ पर 49 प्रतिशत वोट हासिल करने में सफल रहे। राजनीति के चाणक्य कहे जाने वाले केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह ने भी लगातार मध्यप्रदेश के दौरे किए और हर संभाग में बैठकें लीं। ग्वालियर में आयोजित बैठक में उन्होंने कार्यकर्ताओं का जो उत्साह और आत्मविश्वास देखा, उसके आधार पर उन्होंने चुनाव से 15 दिन पहले ही यह कह दिया था कि इस चुनाव में हम संगठन तंत्र की ताकत के बल पर प्रचंड बहुमत हासिल करने जा रहे हैं। नेताओं का कान्फिडेंस कार्यकर्ताओं के विश्वास के आधार पर ही बनता है।

बीते ढाई-तीन सालों में बूथ स्तर पर अनेक कार्यक्रम हुए। बूथ विस्तार अभियान, बूथ डिजिटाइजेशन, बूथ विजय संकल्प अभियान जैसे इन कार्यक्रमों के माध्यम से प्रत्येक कार्यकर्ता बूथ से जुड़ा और उसके सिर पर बूथ जीतने का भूत सवार हो गया। कार्यकर्ताओं सहित सभी पार्टीजनों के मन में एक ही संकल्प था कि हमें बूथ पर चुनाव लड़ना है और जीतना है। कार्यकर्ताओं की इस मेहनत से ही प्रत्येक बूथ पर हमारा 10 प्रतिशत वोट शेयर बढ़ा और हम 49 प्रतिशत वोट हासिल करने में कामयाब रहे, जो सामान्य बात नहीं है। प्रदेश के चुनावी इतिहास में किसी पार्टी को इतने वोट नहीं मिले। भारतीय जनता पार्टी ने इस चुनाव में 163 सीटें हासिल की हैं। इनके अलावा 10 सीटें ऐसी हैं, जिन पर 1 हजार से कम वोटों से हार-जीत हुई है। 101 विधानसभाओं में हमने 50 प्रतिशत से अधिक वोट हासिल किए और 35 विधानसभाओं में 45-50 प्रतिशत हमारा वोट शेयर रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने विधानसभा चुनाव से पूर्व भोपाल में मेरा बूथ सबसे मजबूत का नारा दिया था और देश भर के बूथ कार्यकर्ताओं से संवाद किया था। उन्होंने कहा था कि अगर बूथ मजबूत है, तो हम मजबूत हैं। इसलिए प्रत्येक कार्यकर्ता कमल के फूल को अपना प्रत्याशी मानकर चुनाव में जुट जाए। इसी भावना से अब हमें लोकसभा चुनाव की तैयारियों में जुटना है। हमें हर बूथ पर 10 प्रतिशत वोट बढ़ाना है, हर बूथ को मोदी बूथ बनाकर कांग्रेस मुक्त बूथ बनाना है। ■



## नमो एप से जुड़कर विकसित भारत एंबेसडर बनें युवा

विधानसभा की तरह लोकसभा चुनाव में इतिहास बनाएंगी भाजपा

**मध्यप्रदेश** के विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी को ऐतिहासिक जीत मिली है। पार्टी लोकसभा चुनाव में भी मध्यप्रदेश में जीत का इतिहास रचेगी। विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 49 प्रतिशत वोट शेयर हासिल किया है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा आगामी लोकसभा चुनाव में मध्यप्रदेश में सर्वाधिक सीटें जीतकर इतिहास रचने जा रही है। विधानसभा चुनाव में मिली प्रचंड जीत कार्यकर्ताओं की अथक परिश्रम का परिणाम है।

प्रदेश के सभी युवा नमो एप से जुड़कर विकसित भारत एंबेसडर बनें।

नमो एप में अपने विचार साझा कर सकते हैं युवा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने नागरिकों से नमो एप से जुड़कर विकसित भारत एंबेसडर बनने का आह्वान किया है। युवा साथी नमो एप के माध्यम से प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से सीधे जुड़कर विकसित भारत बनाने के संबंध में अपने सुविचार साझा कर सकते हैं। प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने देश भर में अपनी गारंटी वाली गाड़ी के माध्यम से हितग्राहियों के बीच पहुंचकर उनसे संवाद कर रहे हैं। विकसित भारत संकल्प यात्रा के जरिए सरकार की जनहितैषी योजनाओं से वंचित पात्र हितग्राही बड़ी संख्या में लाभान्वित हो रहे हैं। कार्यकर्ता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के विकसित भारत के संकल्प को साकार करने के लिए हमेशा की तरह समर्पण भाव से जुटेंगे एवं अधिक से अधिक युवाओं को नमो एप से जोड़कर उन्हें विकसित भारत एंबेसडर बनाएंगे। ■

# अति-पिछड़े जनजातीय भाई-बहन सरकारी योजनाओं के लाभ से नहीं छूटेंगे जिनको कभी किसी ने पूछा नहीं, उनको मोदी पूछता भी है, पूजता भी है



- “पीएम-जनमन महा अभियान का लक्ष्य आदिवासी समुदाय के प्रत्येक सदस्य को सरकारी योजनाओं का लाभ प्रदान करना है।”
- “आज देश में ऐसी सरकार है जो सबसे पहले निर्धनों के बारे में सोचती है।”
- “श्री राम की कथा माता शबरी के बिना संभव नहीं।”
- “मोदी उन लोगों तक पहुंचे जिनकी ओर कभी ध्यान नहीं दिया गया।”
- “केंद्र सरकार द्वारा चलाये जा रहे आकांक्षी जिला कार्यक्रम के सबसे बड़े लाभार्थी आदिवासी भाई-बहन हैं।”
- “आदिवासी समाज यह देख और समझ रहा है कि सरकार आदिवासी संस्कृति और उनके सम्मान के लिए कैसे काम कर रही है।”

**एक** ओर जब आयोध्या में दीपावली मनाई जा रही है, तो दूसरी ओर एक लाख अति-पिछड़े जनजातीय भाई-बहन, जनजातीय परिवार, अति-पिछड़े जनजातीय परिवार, उनके घर दिवाली मन रही है, ये अपने आप में बहुत बड़ी खुशी है। उनके बैंक खाते में पक्के घर के लिए पैसे ट्रांसफर किए जा रहे हैं। श्री राम की कथा माता शबरी के बिना संभव

**सरकार की योजनाएं अति-पिछड़े जनजातीय भाई-बहन तक पहुंचें, यही पीएम जनमन महाअभियान का उद्देश्य है।**

और सिर्फ 2 महीने में ही पीएम जनमन महा-अभियान ने वो लक्ष्य हासिल करने शुरू कर दिए हैं, जो पहले कोई नहीं कर सका। दो महीने पहले भगवान बिरसा मुंडा की जन्म जयंती पर सरकार ने ये अभियान शुरू किया था।

ही नहीं हैं। आयोध्या से जब राम निकले थे, तब तो वो राजकुमार राम थे, लेकिन राजकुमार राम मर्यादा पुरुषोत्तम इस रूप में हमारे सामने आए क्योंकि माता शबरी हो, केवट हो, निषादराज हो, ना जाने कौन-कौन से लोग, जिनके सहयोग, जिनके सानिध्य ने राजकुमार राम को प्रभु राम बना दिया। दशरथ पुत्र राम, दीनबंधु राम तभी बन सके जब उन्होंने आदिवासी माता शबरी के बेर खाए। रामचरित मानस में कहा गया है-

**कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।  
मानउँ एक भगति कर नाता।।**

यानी भगवान श्रीराम ने अपने भक्त से सिर्फ भक्ति के संबंध को सबसे बड़ा कहा है। त्रेता में राजाराम की कथा हो या आज की राज कथा, बिना गरीब, बिना वंचित, बिना वनवासी भाई-बहनों के कल्याण के संभव ही नहीं है। इसी सोच के साथ

लगातार काम कर रहे हैं। हमने 10 साल गरीबों के लिए समर्पित किए, 10 साल में गरीबों को 4 करोड़ से अधिक पक्के घर बनाकर दिए हैं। जिनको कभी किसी ने पूछा नहीं, उनको मोदी आज पूछता भी है, पूजता भी है।

सरकार आप तक पहुंचे, सरकार की योजनाएं अति-पिछड़े जनजातीय भाई-बहन तक पहुंचें, यही पीएम जनमन महाअभियान का उद्देश्य है। और सिर्फ 2 महीने में ही पीएम जनमन महा-अभियान ने वो लक्ष्य हासिल करने शुरू कर दिए हैं, जो पहले कोई नहीं कर सका। दो महीने पहले भगवान बिरसा मुंडा की जन्मजयंती पर सरकार ने ये अभियान शुरू किया था, तो हम सबके सामने चुनौती कितनी बड़ी थी। हमारे अति-पिछड़े जनजातीय साथी, जो दूर-सुदूर जंगलों में रहते हैं, जो दूर ऊंचे पहाड़ों पर मुश्किल परिस्थितियों में रहते हैं, जो बॉर्डर के,

सीमा के क्षेत्रों में रहते हुए दशकों से विकास का इंतजार कर रहे हैं, जिन तक पहुंचना भी सरकारी मशीनरी के लिए बहुत कठिन होता है, उन लोगों तक पहुंचने के लिए इतना बड़ा अभियान सरकार ने शुरू किया है। इतना बड़ा काम जो 75 साल तक हम नहीं कर पाते थे, अफसरों ने मन बना लिया, मेरी बात का साथ दिया और आज गरीब के घर दिवाली की संभावना पैदा हुई है। देश में बहुत से लोग कल्पना तक नहीं कर सकते कि हमारे ये भाई-बहन कितनी कठिनाइयों में रहते हैं। प्रदूषित पानी की वजह से कैसी-कैसी बीमारियों का शिकार होते हैं, बच्चों पर संकट रहा है, इस पर जितना ध्यान देना चाहिए, उतना नहीं दिया गया। बिजली नहीं होने से कभी सांप, कभी बिच्छू, कभी जंगली जानवर का खतरा...गैस कनेक्शन ना होने से रसोई में लकड़ी के धुएं से होने वाला नुकसान...गांव तक सड़क ना होने से कहीं पर भी आना-जाना बहुत बड़ा सिरदर्द होता था। इस संकट, इस परेशानी से ही तो मुझे गरीब जनजातीय भाई-बहनों को बाहर निकालना है। अब ऐसी मुसीबतों में आपके मां-बाप को रहना पड़ा, आपके पूर्वजों को रहना पड़ा, मैं आपको ऐसी मुसीबत में रहने नहीं दूंगा। आपके आने वाले पीढ़ी के लिए भी ऐसी मुसीबत में जीना पड़े ये स्थिति हमें मंजूर नहीं है। और आप जानते हैं, इस अभियान का नाम जनमन क्यों रखा गया है? जन मतलब आप सभी जनता जनार्दन...जो मेरे लिए ईश्वर का रूप है। सभी जनजातीय भाई-बहन और मन यानि आपके मन की बात। अब मन मारकर नहीं रहना है, अब आपके मन की बात पूरी होगी और इसके लिए सरकार ने भी मन बना लिया है, ठान लिया है। इसलिए सरकार, पीएम जनमन महा-अभियान पर 23 हजार करोड़ रुपए से ज्यादा खर्च करने जा रही है।

देश का विकास तभी हो सकता है जब समाज में कोई छूटे नहीं, हर किसी तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचे। अति-पिछड़े जनजातीय समुदाय के भाई-बहन देश के करीब-करीब 190 जिलों में रहते हैं। सिर्फ दो महीने के भीतर सरकार ने ऐसे 80 हजार से ज्यादा अति-पिछड़े जनजातीय परिवारजन, भाई-बहनों को खोज कर के उन्हें आयुष्मान कार्ड दिया, जो अब तक उन तक पहुंचा ही नहीं था। इसी तरह सरकार ने अति-पिछड़े जनजातीय समुदाय के करीब 30 हजार किसानों को पीएम किसान सम्मान निधि से जोड़ा है। इस अभियान के दौरान 40 हजार ऐसे साथी भी मिले, जिनके पास अब तक बैंक खाता ही नहीं था। अब सरकार ने इनके बैंक खाते भी खुलवाए हैं। ऐसे ही 30 हजार से ज्यादा वंचितों को किसान क्रेडिट कार्ड दिए गए हैं, करीब 11 हजार को वन

अधिकार एक्ट के तहत जमीन के पट्टे दिए गए हैं और ये आंकड़े अभी पिछले दो महीनों के ही हैं। अभी तो हर दिन इस संख्या में वृद्धि हो रही है। सरकार पूरी ताकत लगा रही है कि हमारे अति-पिछड़े जनजातीय भाई-बहनों तक सरकार की हर योजना जल्द से जल्द पहुंचे। कोई अति-पिछड़ा भाई-बहन अब सरकार की योजना के लाभ से छूटेगा नहीं। ये मोदी की गारंटी है। और मोदी की गारंटी यानि गारंटी पूरा होने की गारंटी।

इसी कड़ी में सभी अति-पिछड़े जनजातीय भाई-बहनों को पक्के मकान देने की शुरुआत हुई है। एक लाख जनजातीय लाभार्थियों के बैंक खातों में पक्के घर बनाने के लिए सरकार ने सीधे पैसे ट्रांसफर किए हैं। अपना घर बनाने के लिए लगभग एक-एक घर के लिए ढाई लाख रुपए सरकार से मिलेंगे। और हां, बस घर ही नहीं मिलेगा, इतने से बात रूकने वाली नहीं है, बिजली का कनेक्शन मिलेगा ताकि आपके बच्चे पढ़ सकें, आपके सपने पूरे हो सकें। आपके नए घर में साफ पानी की व्यवस्था हो ताकि कोई बीमारी हमारे घर में ना आए, और वो कनेक्शन भी मुफ्त दिया जाएगा। माताओं-बहनों को बाहर खुले में शौच जाना पड़ता है, उनके लिए वो कितनी मुसीबत होती है, अंधेरे का इंतजार करना पड़े, सुबह सूरज निकलने से पहले जाना पड़े, और सम्मान को भी चोट पहुंचे। हर मेरी माताओं-बहनों को सम्मान मिले इसलिए हर घर में शौचालय भी होगा। खाना बनाने के लिए रसोई गैस का कनेक्शन भी होगा। और ये सब कुछ मकान तो मिलेगा ही, साथ-साथ ये व्यवस्थाएं भी मिलेंगी। और मेरी माताएं-बहनें जरा सुनिए ये तो अभी शुरुआत हुई है। 1 लाख लाभार्थियों को अपने घर का पैसा मिला है। एक-एक कर हर लाभार्थी तक, चाहे वो कितनी भी दूर क्यों ना हो, सरकार उस तक जरूर पहुंचेगी। और ये जब मैं कह रहा हूं तो मैं फिर एक बार आपको कहता हूं ये मोदी की गारंटी है। हर अति-पिछड़े जनजातीय लाभार्थी को एक और भरोसा देना चाहता हूं। आपको अपना घर बनाने के लिए, इसका पैसा पाने के लिए किसी को भी एक भी रुपए नहीं देना है। कोई भी आपसे पैसे मांगे, तो पैसा केंद्र सरकार भेज रही है उसमें से हिस्सा मांगे, तो आप एक भी रुपया किसी को मत देना।

ये पैसों पर हक आपका है, कोई बिचौलिया का नहीं है। मेरे जीवन का बहुत लंबा वक्त आदिवासी भाई-बहनों के बीच गुजरा है। आपके बीच रहने का सौभाग्य मिला है, शहरों-कस्बों से दूर, घनी आबादी से दूर रहते हुए आप सब जनजातीय लोग जिस तरह की मुश्किलों का सामना करते हैं, इसका मुझे भली-भांति एहसास है। पीएम जनमन



महाअभियान शुरू करने में मुझे इन अनुभवों से बहुत मदद मिली। इसके उपरांत, इस अभियान को शुरू करने में बहुत बड़ा मार्गदर्शन, देश की राष्ट्रपति आदरणीय द्रौपदी मुर्मू जी से मिला है। राष्ट्रपति आदरणीय द्रौपदी मुर्मू जी, आदिवासी भाई-बहनों के बीच से ही आई हैं। उन्होंने भी आप लोगों के बीच पूरा जीवन बिताया है। उनसे मुलाकात के दौरान वो अक्सर मुझसे आप सभी लोगों के बारे में विस्तार से बताया करती थीं। और इसलिए ही हमने पीएम जनमन महाअभियान शुरू करके आपको हर परेशानी से मुक्त करने का संकल्प लिया है।

आज देश में वो सरकार है जो सबसे पहले आप के बारे में, आप जैसे गरीब भाई-बहनों के बारे में, दूर-सुदूर जंगलों में रहने वाले भाई-बहनों के बारे में सोचती है। आज देश में वो सरकार है जो गरीबों की मुश्किलें कम करने के लिए काम करती है। जिनके पास कुछ नहीं है सबसे पहले उनके सुख-दुख की चिंता कर रहे हैं, जिसका कोई नहीं मोदी उसके लिए खड़ा है। पहले सरकारी योजनाओं से जुड़े नियम इतने कठिन होते थे कि योजनाओं का पैसा और योजनाओं का लाभ आप तक पहुंच ही नहीं पाता था। और एक दिक्कत ये थी कि योजना कागजों पर चलती रहती थी और असली लाभार्थी को ये पता ही नहीं चलता था कि ऐसी कोई योजना शुरू भी हुई है। जिसको योजना का पता चल भी जाता था, उसे लाभ पाने के लिए कितनी मुश्किलें आती थीं। यहां अगूठा लगाओ, फलाने के साइन लाओ.. ये पर्चा दिखाओ, आज नहीं कल आओ...ना जाने क्या-क्या सुनना पड़ता था। अब पीएम जनमन महाअभियान में सरकार ने ऐसे सभी नियम बदल दिए हैं जिससे परेशानी



होती थी। पिछड़ी जनजातियों के गांवों तक आसानी से सड़क बने, इसके लिए सरकार ने पीएम ग्राम सड़क योजना के नियम बदल दिए। जब सड़कें बनती हैं तो स्कूल जाना भी आसान हो जाता है। बीमारी के समय कोई मुसीबत आ जाए, अस्पताल पहुंचना है तो अगर रास्ता है तो जिंदगी बच जाती है। सरकार ने मोबाइल मेडिकल यूनिट से जुड़ा नियम भी बदल दिया। पिछड़ी जनजातियों के हर परिवार तक बिजली पहुंचे, इसके लिए विशेष तौर पर उन्हें सोलर पावर वाले कनेक्शन दिए जा रहे हैं। युवाओं को, दूसरे लोगों को तेज इंटरनेट कनेक्शन मिलता रहे, इसके लिए सैकड़ों नए मोबाइल टावर लगाए जा रहे हैं।

अब जो कर रहे हैं उसमें आपको हर चिंता का ख्याल रखा जा रहा है। भोजन की दिक्कत ना हो इसके लिए अब मुफ्त राशन वाली योजना को 5 साल के लिए बढ़ा दिया गया है। बच्चों की अच्छी पढ़ाई हो सके, वो कुछ काम सीख सकें और अपना जीवन अच्छा कर सकें, उन्हें नौकरी मिल जाए, इन सबके लिए सरकार लगातार काम कर रही है। जनजातीय इलाकों में सरकार की सुविधाएं एक ही इमारत में देना भी उतना ही जरूरी होता है। इसलिए सरकार की कोशिश ऐसे एक हजार केंद्र बनाने की है जहां एक ही जगह कई योजनाओं का लाभ मिल जाए। टीका लगाने का काम हो, दवाईयां लेनी हो, डॉक्टर को दिखाना हो, रोजगार-स्वरोजगार से जुड़ी ट्रेनिंग हो, आँगनवाड़ी भी वहीं हो तो इधर-उधर भटकने की जरूरत नहीं पड़ेगी। पिछड़ी जनजातियों के नौजवान अच्छे से पढ़ाई कर सकें, इसके लिए सरकार, नए हॉस्टल बनवा रही है। पिछड़ी जनजातियों के लिए सैकड़ों नए वन-धन विकास केन्द्रों को भी बनाने का काम शुरू

किया जा रहा है।

आप देख रहे हैं कि मोदी की गारंटी वाली गाड़ी, गांव-गांव पहुंच रही है। ये गाड़ी देश के आप जैसे लोगों को, विभिन्न योजनाओं से जोड़ने के लिए ही चलाई जा रही है। केंद्र सरकार जो आकांक्षी जिला, Aspirational District Programme चला रही है उसका सबसे बड़ा लाभ आदिवासी भाई-बहनों को ही मिला है। आदिवासी इलाकों तक बिजली और सड़क पहुंचायी। ऐसी व्यवस्था की है कि एक राज्य का राशन कार्ड दूसरे राज्य में भी चल जाए। ऐसे ही आयुष्मान भारत योजना है। इस योजना के तहत आपको देश भर में कहीं पर भी मुफ्त इलाज मिलेगा ही मिलेगा।

सिकल सेल अनीमिया बीमारी से आदिवासी समाज की कई-कई पीढ़ियां प्रभावित रहीं हैं। अब सरकार कोशिश में जुटी है कि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में जाने वाली ये बीमारी जड़ से ही समाप्त हो। इसलिए सरकार ने देश भर में एक अभियान शुरू किया है। इसलिए विकसित भारत संकल्प यात्रा के दौरान भी सिकल सेल की जांच की जा रही है। पिछले 2 महीनों में 40 लाख से ज्यादा लोगों का सिकल सेल परीक्षण किया जा चुका है।

सरकार, जनजातीय भाई-बहनों के सपनों को पूरा करने के लिए कोई कोर कसर बाकी नहीं छोड़ रही। अनुसूचित जनजाति से जुड़ी योजनाओं का बजट सरकार ने 5 गुना ज्यादा बढ़ा दिया है। बच्चों की पढ़ाई के लिए पहले जो छात्रवृत्ति मिलती थी, अब उसका कुल बजट भी ढाई गुना से ज्यादा कर दिया गया है। 10 साल पहले तक हमारे देश में आदिवासी बच्चों के लिए केवल 90 एकलव्य मॉडल स्कूल थे। जबकि बीते 10 साल में 500 से ज्यादा नए एकलव्य मॉडल स्कूल बनाने का

काम शुरू किया है। आदिवासी बच्चे सिर्फ स्कूली पढ़ाई करके रुक जाएं, ये सही नहीं। अति-पिछड़े जनजातीय समाज के बच्चे जब MA, BA और बड़ी क्लास की पढ़ाई पूरी करेंगे, बड़ी कंपनियों में काम करने के लिए जिस पढ़ाई की जरूरत होती है वो पढ़ाई करेंगे तब हमारे लिए खुशी की बात होगी। इसके लिए आदिवासी इलाकों में कक्षाओं को आधुनिक बनाया जा रहा है, उच्च शिक्षा के केंद्र बढ़ाए जा रहे हैं।

पूरे आदिवासी समाज की आमदनी कैसे बढ़े, income कैसे बढ़े, इसके लिए हर स्तर पर कोशिश कर रहे हैं। आदिवासी साथियों के लिए वन-उपज बहुत बड़ा सहारा है। 2014 से पहले करीब 10 वन उपजों के लिए ही MSP तय की जाती थी। हम लगभग 90 वन उपजों को MSP के दायरे में लाए हैं। वन उपजों के अधिक से अधिक दाम मिले, इसके लिए वनधन योजना बनाई। इस योजना के लाखों लाभार्थियों में बहुत बड़ी संख्या बहनों की है। बीते 10 वर्षों में आदिवासी परिवारों को 23 लाख पट्टे जारी किए जा चुके हैं। जनजातीय समुदाय के हाट बाजार को भी बढ़ावा दे रहे हैं। आदिवासी भाई जो सामान हाट-बाजार में बेचते हैं, वही सामान वो देश के दूसरे बाजारों में भी बेच पाएं इसके लिए भी कई अभियान चलाए जा रहे हैं। आदिवासी भाई बहन, भले ही दूर दराज के इलाकों में रहते हों लेकिन दूरदृष्टि कमाल की होती है, आदिवासी समाज देख और समझ रहा है कि कैसे सरकार जनजातीय संस्कृति और उनके सम्मान के लिए काम कर रही है। सरकार ने भगवान विरसा मुंडा के जन्म दिवस को जनजातीय गौरव दिवस घोषित किया। सरकार पूरे देश में आदिवासी स्वतंत्रता सेनानियों के 10 बड़े संग्रहालय बना रही है। ■

# सही दिशा, सही रणनीति, सही नेतृत्व परिणाम लाता है...

**ह**मारे सभी विद्यार्थी साथियों ने कुछ न कुछ इनोवेशन किए हैं, अलग-अलग प्रकार की आकृतियां बनाई हैं। National Education Policy को आकृतियों में ढालने का प्रयास किया है। जल, थल, नभ और स्पेस और AI इन सभी क्षेत्रों में देश की भावी पीढ़ी क्या सोचती है, उसके पास कैसे-कैसे solutions हैं, ये सारी चीजें मुझे देखने का अवसर मिला। ऐसा लगा कि अगर मेरे पास 5-6 घंटे होते, तो वो भी कम पड़ जाते, क्योंकि सबने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति की है।

आपको पता है, आप किस स्थान पर आए हैं। आप उस स्थान पर आए हैं, जहां भारत मंडपम के प्रारंभ में दुनिया के सभी बड़े-बड़े दिग्गज नेता 2 दिन बैठकर के यहां पर विश्व के भविष्य की चर्चा की थी, आज आप उस जगह पर हैं। और आप भारत के भविष्य की चर्चा आज अपनी परीक्षाओं की चिंता के साथ-साथ करने वाले हैं। और एक प्रकार से ये परीक्षा पे चर्चा, ये कार्यक्रम मेरी भी परीक्षा होता है। और आप में से बहुत से लोग हैं, जो हो सकता है कि मेरी परीक्षा लेना चाहते होंगे। कुछ लोग होंगे genuinely जिनको लगता होगा कि जरूर कुछ बातें ऐसी पूछी जाए जिसका समाधान खुद को भी मिले, औरों को भी मिले। हो सकता है हम सब सवालियों को तो address ना कर पाएं, लेकिन ज्यादातर उन सवालियों के कारण बहुत से साथियों का समाधान हो जाएगा।

**प्रस्तुतकर्ता- प्रधानमंत्री जी। रक्षा, स्वास्थ्य और पर्यटन के क्षेत्र में भारत के सहयोगी अरब देश ओमान स्थित Indian School, Darsait की छात्रा डानिया शबु आपसे प्रश्न पूछना चाहती है।**

**डानिया - Respected Prime Minister, I am Dania Sabu Varki of class 10th from Indian School Darsait, Oman. My question is how do cultural and societal expectations contribute to the pressure students feel during examinations and, how can these external influences be adjust?**

**प्रस्तुतकर्ता - विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत की राजधानी दिल्ली स्थित Government Sarvodaya Bal Vidyalaya**



**आप भारत के भविष्य की चर्चा अपनी परीक्षाओं की चिंता के साथ-साथ करने वाले हैं। और एक प्रकार से ये परीक्षा पे चर्चा, ये कार्यक्रम मेरी भी परीक्षा होता है।**

और आप में से बहुत से लोग हैं, जो हो सकता है कि मेरी परीक्षा लेना चाहते होंगे। कुछ लोग होंगे genuinely जिनको लगता होगा कि जरूर कुछ बातें ऐसी पूछी जाए जिसका समाधान खुद को भी मिले, औरों को भी मिले।

**बुराड़ी से मो. अर्श अपने मन के संदेह का निवारण चाहते हैं।**

**मो. अर्श-** माननीय प्रधानमंत्री जी। नमस्कार। मेरा नाम अर्श है, मैं GSSSB बुराड़ी 12 th का छात्र हूं। मेरा आपसे प्रश्न यह है कि हम अपने परिवेश में परीक्षाओं को लेकर नकारात्मक चर्चाओं को कैसे संबोधित कर सकते हैं, जो हमारी पढ़ाई और अच्छा प्रदर्शन करने की क्षमता को महत्वपूर्ण से प्रभावित करती है। क्या छात्रों के लिए अधिक सकारात्मक और सहायक वातावरण बनाने के लिए कदम उठाए जा सकते हैं?

**प्रधानमंत्री-** शायद मुझे बताया गया कि ये परीक्षा पे चर्चा का 7वां एपिसोड है, और जितना मुझे याद है कि ये प्रश्न हर बार आया है और अलग-अलग तरीके से आया है। इसका मतलब ये है कि 7 साल में 7 अलग-अलग batches इन परिस्थितियों से गुजरे हैं। और हर नए batch को भी इन्हीं समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

अब विद्यार्थियों का batch तो बदलता है लेकिन टीचर का batch इतनी जल्दी बदलता नहीं है। अगर टीचर्स ने अब तक मेरे जितने एपिसोड हुए हैं, उसमें मैंने इन बातों का जो वर्णन किया है, अगर उसका कुछ न कुछ उन्होंने अपने स्कूल में address किया हो तो हम इस समस्या को धीर-धीरे-धीरे कम कर सकते हैं। उसी प्रकार से हर परिवार में ज्यादातर हो सकता है, बड़े बेटे ने या बेटे ने पहले एकाध बार ये ट्रॉयल हुआ हो। लेकिन उनके लिए ज्यादा experience नहीं है। लेकिन हर मां-बाप ने किसी ना किसी रूप में इस समस्या को जरूर अनुभव किया है। अब सवाल ये है कि इसका समाधान क्या हो, हम ये तो नहीं कह सकते कि switch off, प्रेशर बंद, ऐसा तो नहीं कह सकते, तो हमने अपने आप को एक तो किसी भी प्रकार के प्रेशर को झेलने के लिए सामर्थ्यवान बनाना चाहिए, रोते बैठना नहीं चाहिए। मान के चलना चाहिए कि जीवन में आता रहता है, दबाव

बनता रहता है। तो खुद को तैयार करना पड़ता है। अब जैसे कभी आप उस स्थान पर जाते हैं, जहाँ ठंड ज्यादा है और आप किसी गर्म इलाके में रहते हैं, तो आप मन को तैयार करते हैं कि आज अब मुझे 3-4 दिन के बाद ऐसे इलाके में जाना है, जहाँ ठंड ज्यादा है। तो मन से आप तैयार करते हैं तो धीरे-धीरे लगता है, पहुंचने के बाद कभी लगता है, यार मैंने जो सोचा था उससे तो ठंड कम है। क्योंकि आपने मन से तय कर लिया है। इसलिए आप temperature कितना है, कितना नहीं वो देखने की जरूरत नहीं पड़ती है, आपका मन तैयार हो जाता है। वैसे ही, दबाव को हमने अपने तरीके से मन से एक बार इस स्थिति से जीतना है ये तो संकल्प करना होगा। दूसरा- जरा दबाव के प्रकार देखें एक तो दबाव होता है खुद ने ही जो अपने लिए तय करके रखा है कि सुबह 4 बजे उठना ही उठना है, रात को 11 बजे तक पढ़ना ही पढ़ना है, आपने तो इतने answer solve करके उठना है और बड़ा दबाव खुद ही अनुभव करते हैं। मैं समझता हूँ कि हमने इतना stretch नहीं करना चाहिए कि जिसके कारण हमारी ability ही टूट जाए। हमने slowly increment करना चाहिए, चलिए भई कल मैंने 7 Questions solve किए थे रात को, आज 8 करूंगा। फिर मुझे, वरना मैं 15 तय करूँ और 7 ही कर पाऊँ तो सुबह उठता हूँ यार देखो कल तो कर नहीं पाया आज करूंगा। तो एक खुद भी दबाव का pressure पैदा करते हैं। हम इसको थोड़ा scientific तरीके से कर रहे हैं। दूसरा- मां-बाप pressure पैदा करते हैं ये क्यों नहीं किया?-वो क्यों नहीं किया? क्यों सोता रहा? चलो जल्दी उठते नहीं हो, पता नहीं exam है। और यहां तक कहते हैं देख वो तेरा दोस्त क्या करता है, तू क्या करता है। ये सुबह-शाम जो commentary चलती है, running commentary और कभी मां थक जाती है तो पापा की commentary शुरू होती है, कभी पापा थक जाते हैं तो बड़े भाई की commentary शुरू हो जाती है। और वो अगर कम पड़ता है तो स्कूल में टीचर की। फिर या तो कुछ लोग ऐसे होते हैं... जा, तुमको जो करना है कर लो, मैं तो अपना ऐसे ही रहूंगा। कुछ लोग इसे sincere लेते हैं। लेकिन ये दबाव का दूसरा प्रकार है। तीसरा ऐसा भी होता है कि जिसमें कारण कुछ नहीं है, समझ का भाव है, और बिना कारण उसको हम संकट मान लेते हैं। जब actually करते हैं तो लगता है नहीं यार इतना मुश्किल नहीं था, मैं बेकार में दबाव झेलता रहा। तो मुझे लगता है कि एक तो इनको पूरे परिवार ने, टीचर ने सबने मिलकर के address करना होगा। सिर्फ student address कर लेगा, सिर्फ Parents address कर लेंगे, इतने से बात बननी नहीं है। और मैं मानता हूँ कि ये लगातार परिवारों

में भी बातचीत होती रहनी चाहिए। हर परिवार ऐसी स्थितियों में कैसे handle करता है, उसकी चर्चाएं होनी चाहिए। उसकी एक systematic theory के बजाय हमें धीरे-धीरे चीजों को evolve करना चाहिए। अगर ये evolve करते हैं तो मुझे पक्का विश्वास है कि हम इन चीजों से बाहर निकलकर आते हैं।

**प्रस्तुतकर्ता- वीर सावरकर के बलिदान के साक्षी एवं अनुपम प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध अंडमान निकोबार द्वीप समूह से एक अभिभावक भाव्य लक्ष्मी जी हमसे जुड़ रही है।**

**भाव्य लक्ष्मी** - माननीय प्रधानमंत्री जी नमस्कार। एक अभिभावक होने के नाते मेरा आपसे सवाल है कि छात्रा पर जो peer pressure प्रेशर रहता है, जो कि एक तरह से दोस्ती की सुंदरता छीन लेता है। और छात्राओं को अपने ही दोस्तों के प्रति प्रतिस्पर्धा करा देता है, उस पर आपकी क्या राय है। कृपया मुझे समाधान दें।

**प्रस्तुतकर्ता - विश्व को सत्य, अहिंसा और धर्म की त्रिमूर्ति प्रदान करने वाली भूमि गुजरात स्थित पंचमहल के जवाहर नवोदय विद्यालय की छात्रा दृष्टि चौहान अपनी समस्या का हल जानना चाहती हैं।**

**दृष्टि चौहान** - माननीय प्रधानमंत्री जी नमस्कार। मैं दृष्टि चौहान जवाहर नवोदय विद्यालय पंचमहल में कक्षा 6 की छात्रा हूँ। मेरा आपसे यह प्रश्न है कि कभी-कभी परीक्षा के प्रतिस्पर्धी माहौल में दोस्तों के साथ प्रतिस्पर्धा भी अधिक दबाव पैदा करती है। कृपया सुझाव दें कि इससे कैसे बचा जा सकता है? आप मुझे इस पर अपना मार्गदर्शन प्रदान करें।

**प्रस्तुतकर्ता - नेचुरल ब्यूटी से भरपूर वारिश की पहली बूँतों से भीगने वाला राज्य केरल में स्थित केंद्रीय विद्यालय क्रमांक- 1 कालीकट से स्वाति दिलीप आपसे अपना प्रश्न पूछना चाहती है।**

**स्वाति** - नमस्कार। Hon'ble Prime Minister Sir, I am Swati Dilip a class 11th student from PM SHRI Kendriya Vidyalaya No. v Calicut of Ernakulam Region. Sir, could you please guide us on how in this competitive world we can avoid unhealthy and unnecessary competition and also how to not take peer pressure into our heads!

**प्रधानमंत्री**- अगर जीवन में चुनौतियां न हो, स्पर्धा न हो, तो फिर जीवन बहुत ही प्रेरणाहीन बन जाएगा, चेतनाहीन बन जाएगा, competition होनी ही चाहिए। लेकिन जैसे एक सवाल में पूछा

कालीकट से बच्ची ने healthy competition कि competition healthy होना चाहिए। अब आपका जो सवाल है, वो जरा डेंजर है और वो मुझे चिंता कराता है शायद मुझे भी इस परीक्षा पे चर्चा में इस प्रकार का सवाल पहली बार आया है। देखिए कभी-कभी इस प्रवृत्ति का जहर, ये बीज पारिवारिक वातावरण में ही बो दिया जाता है। घर में भी मां-बाप 2 बच्चे हैं तो दोनों के बीच में, कभी एक लिए अच्छा बोलेंगे, कभी दूसरे के लिए। तो कभी उन 2 भाई-बहन में भी या 2 भाई में भी या 2 बहनों में भी, देखिए मां ने तो उसको ये कह दिया और मुझे ऐसा कह दिया। इस प्रकार की विकृत स्पर्धा का भाव जाने-अनजाने में परिवार के रोजमर्रा के जीवन में बो दिया जाता है। और इसलिए मेरा सभी parents से आग्रह है कि कृपा करके बच्चों की इस तरह की comparison अपनी ही संतानों की इस तरह की comparison मत कीजिए। उसके अंदर एक द्वेष का भाव पैदा कर देते हैं और वो परिवार में भी कभी न कभी लंबे समय के बाद वो बीज एक बहुत बड़ा जहरीला वृक्ष बन जाता है। उसी प्रकार से मैंने बहुत पहले एक वीडियो देखा था- शायद आप लोगों ने भी देखा होगा, कुछ दिव्यांग बच्चे उनके कम्पीटीशन में सब दौड़ रहे हैं, 12-15 बच्चे अलग-अलग, दिव्यांग हैं तो कठिनाइयां आएंगी, लेकिन वो दौड़ रहे हैं। इतने में एक बच्चा गिर जाता है। अब ज्यादा बुद्धिमान लोग होते तो क्या करते-वाह ये तो गया, चलो यार एक तो स्पर्धा में कम हो गया। लेकिन उन बच्चों ने क्या किया- सबके सब जो आगे चले गए थे वो भी पीछे आए, जो दौड़ रहे थे वो भी रुक गए, पहले उन सबने उसको खड़ा किया, और फिर, फिर दौड़ना शुरू किया। सचमुच में ये वीडियो दिव्यांग बच्चों के जीवन का भले होगा, लेकिन हम लोगों को भी ये बहुत बड़ी प्रेरणा और बहुत बड़ा संदेश देता है।

अब तीसरा विषय है कि आपके दोस्त से आपको किस चीज की स्पर्धा है भाई। मान लीजिए 100 मार्क्स का पेपर है, अब अगर आपका दोस्त 90 ले गया तो क्या आपके लिए 10 मार्क्स बचे हैं क्या? आपके लिए 10 मार्क्स बचे हैं क्या? आपके लिए भी तो 100 हैं ना। तो आपको उससे स्पर्धा नहीं करनी है, खुद से करनी है। खुद से करनी है कि वो 100 में से 90 लाया, मैं 100 में से कितने लाऊंगा। उससे द्वेष करने की जरूरत ही नहीं है। Actually तो वो आपके लिए aspiration बन सकता है। और अगर यही मानसिकता रहेंगे तो क्या करेंगे आप... अपने तेज-तरंग व्यक्ति को दोस्त ही नहीं बनाएंगे। आप ऐसे जिसकी कुछ चलती नहीं बाजार में उसी को दोस्त बनाएंगे और खुद बड़े ठेकेदार बनकर घूमते रहेंगे। सचमुच में तो हमसे प्रतिभावान दोस्त ढूँढने चाहिए हमें। जितने

ज्यादा प्रतिभावान दोस्त मिलते हैं उतना हमारा भी तो काम बढ़ता है। हमारा स्परिट भी तो बढ़ता है। और इसलिए कभी भी हमें इस प्रकार का ईर्ष्या भाव कतई अपने मन में नहीं आने देना चाहिए।

और तीसरा मां-बाप के लिए भी बहुत बड़ा चिंता का विषय है। मां-बाप हर बार अपने बच्चों को कोसते रहेंगे। देख-तू खेलता रहता है, देख वो किताबें पढ़ता है। तू ये करता रहता है, देख वो पढ़ता है। यानी वो भी हमेशा उसी का उदाहरण देते हैं। तो फिर आपके दिमाग में भी यही एक मानदंड बन जाता है। कृपा करके मां-बाप इन चीजों से बचें। कभी-कभी तो मैंने देखा है जो मां-बाप अपने जीवन में ज्यादा सफल नहीं हुए हैं, जिनको अपने पराक्रम, अपनी सफलता या अपनी सिद्धियों के विषय में दुनिया को कुछ कहने को नहीं है, बताने को नहीं है, तो वे अपने बच्चों का रिपोर्ट कार्ड ही अपना विजिटिंग कार्ड बना लेते हैं। किसी को मिलेंगे अपने बच्चे की कथा सुनाएंगे। अब ये जो नेचर है वो भी एक प्रकार से बच्चे के मन में एक ऐसा भाव भर देता है कि मैं तो सब कुछ हूँ। अब मुझे कुछ भी करने की जरूरत नहीं है... वो भी बहुत नुकसान करता है।

सचमुच में तो हमें अपने दोस्त से ईर्ष्या भाव के बजाय उसके सामर्थ्य को ढूंढने का प्रयास करना चाहिए। उसके अंदर अगर mathematic में expertise है मेरी कम है, मेरे टीचर्स से ज्यादा अगर मेरा दोस्त मुझे mathematic में मदद करेगा तो मेरी साइकी समझ करके करेगा और हो सकता है मैं भी उसी की तरह mathematic में आगे जाऊंगा। वो अगर लैंग्वेज में वीक है और मैं लैंग्वेज में मजबूत हूँ, मैं अगर लैंग्वेज में उसकी मदद करता हूँ तो हम दोनों को एक-दूसरे की ताकत जोड़ेगी और हम अधिक सामर्थ्यवान बनेंगे। और इसलिए कृपा करके हम अपने दोस्तों से स्पर्धा और ईर्ष्या के भाव में न डूबें और मैंने तो ऐसे लोग देखे हैं कि खुद फेल हो जाएं, लेकिन अगर दोस्त सफल हुआ है तो मिठाई वो बांटता है। मैंने ऐसे भी दोस्त देखे हैं कि जो बहुत अच्छे नंबर से आए हैं, लेकिन दोस्त नहीं आया, इसलिए उसने अपने घर में पार्टी नहीं की, फेस्टिवल नहीं मनाया, क्यों... मेरा दोस्त पीछे रह गया... ऐसे भी तो दोस्त होते हैं। और क्या दोस्ती लेन-देन का खेल है क्या? जी नहीं... दोस्ती लेन-देन का खेल नहीं है। जहां कोई प्रकार का इस प्रकार का लेना-देना नहीं है, निःस्वार्थ प्यार होता है वहीं तो दोस्ती होती है। और ये जो दोस्ती होती है ना, वो स्कूल छोड़िए...जिंदगी भर आपके साथ रहती है। और इसलिए कृपा करके दोस्त हमसे ज्यादा तेजस्वी-तपस्वी हमें ढूंढने चाहिए और हमेशा उनसे सीखने का प्रयास करना चाहिए।

**प्रस्तुतकर्ता - भारत का दक्षिण-पूर्वी राज्य,**

**कृषि प्रधान देश तिरुमल्य की पवित्र भूमि, आंध्रप्रदेश स्थित जेडपी हाई स्कूल, उपरापल्ली, एन्कापल्ली जिले के संगीत शिक्षक श्री कोंडाकांची संपतराव जी आपसे प्रश्न पूछना चाहते हैं।**

**संपतराव-** प्रधानमंत्री को संपतराव की नमस्कार। मेरा नाम कोंडाकांची संपतराव है और मैं जेडपी हाई स्कूल, उपरापल्ली, एन्कापल्ली डिस्ट्रिक्ट आंध्रप्रदेश में शिक्षक हूँ। सर, मेरा आपसे यह प्रश्न है कि एक शिक्षक के रूप में मैं किन तरीकों से अपने छात्रों को परीक्षा देने में, तनावमुक्त बनाने में मदद कर सकता हूँ।

**प्रस्तुतकर्ता - भारत के पूर्व में चाय बागानों तथा सुंदर पर्वतीय प्रदेश ब्रह्मपुत्र की भूमि, असम के शिवसागर स्थित सैरा हाई स्कूल से एक टीचर बंटी मेधी जी,**

**बंटी मेधी-** नमस्कार, Honourable प्राइम मिनिस्टर सर, I am Bunty Medhi, a teacher from Shivsagar district Assam. My question is what should be the role of a teacher in motivating students. Please guide us.

**प्रधानमंत्री-** पहले तो मैं समझता हूँ, जो संगीत के टीचर हैं वो तो अपनी क्लास का ही नहीं, पूरे स्कूल के बच्चों का तनाव खत्म कर सकते हैं। संगीत में वो सामर्थ्य है... हां अगर हम कान बंद करके संगीत में बैठे हैं... कभी-कभी ऐसा होता है... कि हम होते हैं संगीत बज तो रहा है लेकिन हम कहीं और होते हैं। और इसलिए हम उसका आनंद अनुभव नहीं कर पाते हैं। मैं समझता हूँ कि किसी भी टीचर के मन में जब ये विचार आता है कि मैं स्टूडेंट के इस तनाव को कैसे दूर करूँ। हो सकता है मैं गलत हूँ, लेकिन शायद मुझे लगता है कि टीचर के मन में परीक्षा का कालखंड है। अगर टीचर और स्टूडेंट का नाता परीक्षा के कालखंड का है, तो सबसे पहले वो नाता correct करना चाहिए। आपका स्टूडेंट के साथ नाता जैसे ही आप पहले दिन, वर्ष के प्रारंभ में पहले ही दिन क्लासरूम में enter करते हैं, उसी दिन से exam आने तक आपका नाता निरंतर बढ़ते रहना चाहिए, तो शायद परीक्षा के दिनों में तनाव की नौबत ही नहीं आएगी।

आप सोचिए, आज मोबाइल का जमाना है, स्टूडेंट के पास भी आपका मोबाइल होगा ही होगा। क्या कभी किसी स्टूडेंट ने आपको फोन किया है? कॉल पर contact किया है कि मुझे ये तकलीफ हो रही है, मैं चिंता में हूँ... कभी नहीं किया होगा। क्यों...क्योंकि उसे लगता ही नहीं है कि मेरी जिंदगी में आपका कोई विशेष स्थान है। उसको लगता है कि आपका-मेरा नाता सब्जेक्ट है। मैथ्स है, केमिस्ट्री है, लैंग्वेज है। जिस दिन आप सिलेबस

से आगे निकल करके उससे नाता जोड़ेंगे तो वो अपनी छोटी-मोटी दिक्कतों के समय भी जरूर आपसे अपने मन की बात करेगा।

अगर ये नाता है तो exam के समय तनाव की स्थिति पैदा होने की संभावना ही खत्म हो जाएगी। आपने कई डॉक्टर्स देखे होंगे, उन डॉक्टर्स में डिग्री तो सबके पास होती है, लेकिन कुछ डॉक्टर्स जो जनरल प्रैक्टिशनर्स होते हैं...वो ज्यादा सफल इसलिए होते हैं कि पेशेंट के जाने के बाद, एकाध दिन के बाद उसको फोन करते हैं कि भई आपने वो दवाई ठीक से ले ली थी, कैसा है आपका? वो दूसरे दिन अपने अस्पताल आएगा तब तक इंतजार करने के बजाय बीच में एकाध बार बात कर लेते हैं। और वो उसको आधा ठीक कर देता है। आप में से कोई टीचर ऐसे हैं... मान लीजिए, किसी बच्चे ने बहुत अच्छा किया हो, और जा करके उसके परिवार में बैठ करके कहा कि भई अब तो मैं मिठाई खाने आया हूँ, आपके बच्चे ने इतना शानदार कर दिया, आज आपसे मिठाई खाऊंगा। आपको कल्पना आती है कि उस मां-बाप को जब आप... बच्चे ने तो बताया ही होगा घर में जा करके कि आज मैं ये करके आया हूँ। लेकिन एक टीचर खुद जा करके जब बताता है तो उस परिवार में टीचर का आना, टीचर का बाताना उस बच्चे को भी ताकत देगा और परिवार भी कभी-कभी और भी सोचता होगा, जब टीचर ने आ करके कहा तो परिवार भी सोचता होगा यार मेरे बच्चे में ये तो शक्ति हमें मालूम नहीं थी कि टीचर ने जो वर्णन किया। वाकई हमें थोड़ा ध्यान देने की जरूरत है।

तो आप देखेंगे, एकदम से माहौल बदल जाएगा और अब इसलिए पहली बात तो ये है कि परीक्षा के समय तनाव दूर करने के लिए क्या करना है, उसके लिए तो मैं बहुत कुछ कह चुका हूँ। मैं उसको repeat नहीं करता हूँ। लेकिन अगर वर्षभर आपका उसके साथ नाता रहता है... मैं तो कभी-कभी पूछता हूँ कई टीचरों से कि भई आप कितने सालों से टीचर हैं। जो पहली बार आपके यहां पढ़ाई करके गए होंगे शुरू में, अब तो उनकी शादी हो गई होगी। क्या कोई आपका स्टूडेंट आपके पास शादी का कार्ड देने आया था क्या? 99 प्रतिशत टीचर मुझे कहते हैं कि नहीं कोई स्टूडेंट नहीं आया। मतलब हम जॉब करते थे, हम जिंदगी नहीं बदलते थे। टीचर का काम जॉब करना नहीं है, टीचर का काम जिंदगी को संवारना है, जिंदगी को सामर्थ्य देना है और वही परिवर्तन लाता है।

**प्रस्तुतकर्ता - अद्भुत जनजातीय संस्कृति को समेटे पूर्वोत्तर भारत के राज्य त्रिपुरा के प्रणवानंद विद्या मंदिर पश्चिम त्रिपुरा की छात्रा आद्रिता चक्रवर्ती हमसे जुड़ रही हैं।**

**आद्रिता चक्रवर्ती-** नमस्कार प्रधानमंत्री



महोदय, मेरा नाम आद्रिता चक्रवर्ती है। मैं प्रणवानंद विद्या मंदिर पश्चिम त्रिपुरा में कक्षा 12वीं की छात्रा हूँ। मेरा आपसे यही प्रश्न है कि पेपर खत्म होने के आखिरी कुछ मिनटों में मैं घबरा जाती हूँ और मेरी लिखावट भी बिगड़ जाती है। मैं इस स्थिति से कैसे निपटूँ, मुझे इसका समाधान दीजिए।

**प्रस्तुतकर्ता- प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर धान का कटोरा के रूप में प्रसिद्ध राज्य छत्तीसगढ़ स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय करारा कांकेर के छात्र शंखर तैफूर रहमान जुड़ रहे हैं।**

**शंखर तैफूर रहमान-** प्रधानमंत्री महोदय नमस्कार, मेरा नाम शंखर तैफूर रहमान है। मैं पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय कांकेर छत्तीसगढ़ का छात्र हूँ। मान्यवर परीक्षा के दौरान अधिकांश छात्र घबराहट महसूस करते हैं, जिसके कारण वे मूर्खतापूर्ण गलतियाँ कर बैठते हैं, जैसे कि प्रश्नों को सही ढंग से न पढ़ना आदि। मान्यवर मेरा आपसे यह प्रश्न है कि इन गलतियों से कैसे बचा जाए।

**प्रस्तुतकर्ता - उड़ीसा आदर्श विद्यालय कटक से एक छात्रा राजलक्ष्मी आचार्य प्रधानमंत्री जी से प्रश्न पूछना चाहती हैं।**

राजलक्ष्मी आचार्य- Hon'ble Prime Minister, जय जगन्नाथ। My name is Rajlaxmi Acharya, I am from Odisha Adarsh Vidyalaya, Jokidola Banki Cuttack. Sir, My question is- It is easy to say you face an exam with a cool mind, but in exam hall the situation is so scary like don't move, look straight, and so on then how can it be so cool.

**प्रधानमंत्री-** घूम-फिर कर के फिर तनाव आ गया। अब ये तनाव से मुक्ति कैसे हो। आप देखिए कैसी गलती होती है। कुछ गलतियाँ यानी रोजमर्रा को हम थोड़ा observe करें तो पता चलेगा। कुछ गलतियाँ परेंट्स के अति उत्साह के कारण होती हैं। कुछ गलतियाँ स्टूडेंट्स की अति से sincerity से देती है। मैं समझता हूँ, इससे बचा जाए। जैसे मैंने देखा है कि कुछ मां बाप को लगता है कि आज एग्जाम है तो बेटे तो नई पेन लाकर के दो। जरा कपड़े अच्छे पहनाकर के भेजो, तो उसका काफी समय तो उसमें एडजस्ट होने में ही जाता है। शर्ट ठीक है कि नहीं है, यूनिफॉर्म ठीक पहना है कि नहीं पहना है। मां बाप से मेरा आग्रह है जो पेन रोज उपयोग करता है न वही दीजिए आप। या वहाँ पेन दिखाने थोड़ी जा रहा है वो, और परीक्षा के समय किसी को फुर्सत नहीं है आपका बच्चा नया पहनकर के आया, पुराना पहन के आया है। तो इस साइकी से उनको बाहर आना चाहिए। दूसरा कुछ ऐसी चीजें खिलाकर के भेजेंगे कि एग्जाम है ये खाकर

जाओ, एग्जाम है ये खाकर जाओ, तो उसको और मुसीबत होती है कि उसका वो comfort नहीं है। आवश्यकता से अधिक उस दिन खाना फिर मां कहेगी कि अरे तुम्हारा तो एग्जाम सेंटर इतना दूर है। तुम रात आते-आते 7 बज जाएगा, ऐसा करो कुछ खाकर जाओ फिर कहेगी कुछ लेकर जाओ। वो resist करने लगता है नहीं, मैं नहीं ले जाऊंगा। वहीं से तनाव शुरू हो जाता है, घर से निकलने से पहले हो जाता है। तो मेरी सभी परेंट्स से अपेक्षा है और मेरा सुझाव है कि आप उसको अपनी मस्ती में जीने दीजिए। एग्जाम देने जा रहा है तो उत्साह उमंग के साथ चला जाए बस। जो उसकी रोजमर्रा की आदतें हैं वैसे ही रहे वो। फिर जो sincere स्टूडेंट्स हैं उनका problem क्या होता है? दरवाजे तक किताब छोड़ते नहीं हैं, दरवाजे तक अब आप अचानक इस प्रकार से करें, इवन रेलवे स्टेशन पर भी जाते हैं ना तो कभी ट्रेन की एंट्री और आपकी एंट्री ऐसा होता है क्या? आप 5-10 मिनट पहले जाते हैं, प्लेटफार्म पर खड़े रहते हैं, कहां आपका डिब्बा आया उसका अनुमान लगाते हैं, फिर उस जगह पर जाते हैं, फिर सोचते हैं कि पहले कौन सा लगेज अंदर ले जाऊंगा, फिर कौन सा। यानि मन आपका तुरंत अपने आपको ट्रेन आने से पहले ही सेट करने लग जाता है। वैसे ही आपका जो एग्जामिनेशन हॉल है। हो सकता है वो कोई सुबह से आपके लिए खोलकर नहीं रखेंगे, लेकिन 10-15 मिनट पहले तो allow तो कर ही देते हैं। तो आराम से जैसे ही खुले अंदर पहुंच जाइये, और आराम से बैठिये मस्ती से, जरा पुरानी कोई हंसी मजाक की चीजें हैं तो उसको जरा याद कर लीजिए, और दोस्त ही बगल में है तो एकाध चुटकुला सुना दीजिए। हंसी मजाक में 5-10 मिनट बिता दीजिए। कुछ नहीं है जाने दीजिए, कम से कम एक डीप ब्रीथिंग करिये बहुत गहरा सांस लीजिए। धीरे-धीरे 8-10 मिनट खुद के लिए जाए आप, खुद में खो जाइये। एग्जाम से बाहर निकल जाएंगे। और फिर जब आपके हाथ में question paper आया, तो आप comfort रहोगे, वर्ना क्या होता है, वो आया कि नहीं, वो देखा कि नहीं, वो कैसा है, पता नहीं, टीचर कहां देखता है, सीसीटीवी कैमरा है। अरे आपका क्या काम है जी, सीसीटीवी कैमरा किसी भी कोने में पड़ा है, तेरा क्या लेना देना है जी। हम इन्ही चीजों में लटके रहते हैं जी और वो ही बिना कारण हमारी शक्ति समय waste करता है। हमें खुद में ही खोये रहना चाहिए और जैसे ही question paper आ जाए तो कभी कभी तो आपने देखा होगा। कि अगर first bench पर आपका नंबर आया है। लेकिन question paper वो पीछे से बांटना शुरू करता है। तो आपका दिमाग फड़कता है, देखिए मेरे से पांच मिनट पहले उसको मिलेगा, मुझे पांच मिनट

बाद में मिलेगा। ऐसी ही होता है न? ऐसा होता है न? अब ऐसी चीजों में अपना दिमाग खपाओगे कि पहले question paper मुझे मिला कि बीस नंबर के बाद मिला तो आप अपनी एनर्जी, आप परिस्थिति तो पलट नहीं सकते। टीचर ने वहां से शुरू किया आप खड़े होकर नहीं कह सकते पहले मेरे से दो, ऐसा तो नहीं कर सकते। तो आपको पता है ऐसा होना है तो फिर ऐसे ही अपने आपको एडजस्ट कर लेना चाहिए। एक बार आप ये अगल बगल की सारी दुनिया और हम बचपन से तो पढ़ते तो आए हैं। वो अर्जुन की पक्षी की आंख वाली कथा तो सुनते रहते हैं। लेकिन जीवन में आता है तो नहीं पेड़ भी दिखता है, पतियां भी दिखती हैं। तब आपको वो पक्षी की आंख नहीं दिखती है। आप भी मन ये कथाएं सुनते हैं, पढ़ते हैं तो उसको जीवन में लाने का ये मौका होता है। तो पहली बात तो यह है कि इन सारी बाह्य चीजों से आप, दूसरा परीक्षा में घबराहट का कभी कारण ये होता है, कभी लगता है समय कम पड़ गया, कभी लगता है कि अच्छा होता मैं वो question पहले कर लेता। तो इसका उपाय ये है पहले एक बार पूरा question paper पढ़ लीजिए। फिर मन से तय कीजिए कि किस answer में कितना मिनट मोटा-मोटा मेरा जाएगा। और उसी प्रकार से अपना समय तय कर लीजिए। अब खाना खाते हैं आप, खाने के लिए बैठते हैं तो घड़ी देखकर के थोड़ा खाते हैं कि भई बीस मिनट में खाना खाना है। तो खाते-खाते आदत हो ही जाती है हां भई इतने में 20 मिनट भी हो गए और खाना भी हो गया। इसके लिए कोई घड़ी और कोई बेल थोड़ा बजता है कि चलो अब खाना शुरू करो, अब खाना बंद करो ऐसा तो होता नहीं है। तो ये प्रैक्टिस से। दूसरा मैंने देखा है कि आजकल जो सबसे बड़ी समस्या है जिसके कारण ये समस्या है। आप मुझे बताइये, आप exam देने जाते हैं, मतलब आप physically क्या करते हैं। आप physically पेन हाथ में पकड़कर के लिखते हैं, यही करते हैं न? दिमाग अपना काम करता है लेकिन आप क्या करते हैं, लिखते हैं। आज के युग में आईपैड के कारण, कम्प्यूटर के कारण, मोबाइल के कारण मेरी लिखने की आदत धीरे-धीरे कम हो गई है। जबकि एग्जाम में लिखना होता है। इसका मतलब हुआ कि मुझे अगर एग्जाम के लिए तैयार करना है तो मुझे अपने आपको लिखने के लिए भी तैयार करना है। आजकल बहुत कम लोग हैं, जिनको लिखने की आदत है। अब इसलिए daily जितना समय आप अपने पठन पाठन में लगाते हैं स्कूल के बाद। उसका minimum 50% time, minimum 50% time आप खुद अपनी नोटबुक के अंदर कुछ न कुछ लिखेंगे। हो सके तो उस विषय पर लिखेंगे। और तीन बार चार बार खुद का

लिखा हुआ पढ़ेंगे और खुद का लिखा हुआ करेक्ट करेंगे। तो आपका जो improvement होगा किसी की मदद बिना इतना बढ़िया हो जाएगा कि आपको बाद में लिखने की आदत हो जाएगी। तो कितने पेज पर लिखना, कितना लिखने में कितना समय जाता है, ये आपकी मास्टरी हो जाएगी। कभी-कभी बहुत से विषय आपको लगता है ये तो मुझे आता है। जैसे आप मान लीजिए कोई बड़ा प्रसिद्ध कोई गाना सुन रहे हैं। गाना बज रहा है तो आपको लगता है ये गाना तो मुझे आता है क्योंकि आपने बहुत बार सुना है। लेकिन एक बार गाना बंद करके जरा कागज पर लिखें ना वो गाना आता है क्या? तो पता चलेगा नहीं यार सुनते समय जो मेरा कॉन्फिडेंस था मुझे अच्छा लगता था और आता था, हकीकत में मुझे आता नहीं था मुझे वहां से prompting होती थी इसलिए मुझे वो लाइन याद आ जाती थी। और उसमें भी perfect के संबंध में बात आएगी तो मैं पीछे रह जाऊंगा।

मेरी आज की पीढ़ी के साथियों से मेरा अग्रह है कि कृपा करके आपके एग्जाम में एक बड़ा चैलेंज होता है लिखना। कितना याद रहा, सही रहा, गलत रहा, सही लिखते हैं, गलत लिखते हैं तो वो तो बाद का विषय है। आप अपना ध्यान प्रैक्टिस में इस पर कीजिए। अगर ऐसी कुछ चीजों पर अगर आप ध्यान केंद्रित करेंगे, मुझे पक्का विश्वास है कि एग्जाम हॉल में बैठने के बाद जो uncomfot या pressure फील करते हैं वो आपको लगेगा ही नहीं क्योंकि आप आदि हैं। अगर आपको तैरना आता है तो पानी में जाने से डर नहीं लगता है आपको क्योंकि आप तैरना जानते हैं। आपने किताबों में तैरना ऐसे होता है और आप सोचते हैं हां मैंने तो पढ़ा था भई हाथ पहले ऐसे करते हैं, फिर दूसरा हाथ फिर तीसरा हाथ फिर चौथा हाथ तो फिर आपको लगता है कि हां पहले हाथ पहले पैर। दिमाग से काम कर लिया, अंदर जाते ही फिर मुसीबत शुरू हो जाती है। लेकिन जिसने पानी में ही प्रैक्टिस शुरू कर दी, उसको कितना ही गहरा पानी क्यों न हो उसको भरोसा होता है मैं पार कर जाऊंगा। और इसलिए प्रैक्टिस बहुत आवश्यक है, लिखने की प्रैक्टिस बहुत आवश्यक है। और लिखना जितना ज्यादा होगा, शार्पनेस ज्यादा आएगी। आपके विचारों में भी शार्पनेस आएगी। और अपनी लिखी हुई चीज को तीन बार, चार बार पढ़कर खुद करेक्ट कीजिए। जितना ज्यादा खुद करेक्ट करोगे, आपकी उस पर ग्रिप बहुत ज्यादा आएगी। तो आपको अंदर बैठकर के कोई प्रॉब्लम नहीं होगी। दूसरा अगल-बगल में वो बड़ी स्पीड से लिख रहा है। मैं तो तीसरे question पर अड़ा हुआ हूँ, वो तो सातवें पर चला गया। दिमाग इसमें मत खपाइये बाबा। वो 7 में पहुंचे, 9 में पहुंचे, करे न करे, पता नहीं वो सिनेमा

की स्टोरी लिखता होगा, तुम अपने पर भरोसा करो, तुम अपने पर भरोसा करो। अगल-बगल में कौन क्या करता है छोड़ो। जितना ज्यादा अपने आप पर फोकस करोगे उतना ही ज्यादा आपका question paper पर फोकस होगा। जितना ज्यादा question paper पर फोकस होगा इतना ही आपके answer एक-एक शब्द पर हो जाएगा, और ultimately आपको परिणाम उचित मिल जाएगा, प्रस्तुतकर्ता- प्रधानमंत्री जी राजसमंद राजस्थान के छात्र धीरज सुथार जो कि गर्वमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल कोंदावा में पढ़ते हैं आपसे प्रश्न पूछना चाहते हैं।

**धीरज सुथार-** नमस्ते माननीय प्रधानमंत्री जी, मैं धीरज सुथार, मैं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय कोंदावा राजसमंद राजस्थान से हूँ। मैं 12वीं कक्षा में अध्ययनरत हूँ। मेरा प्रश्न यह है कि व्यायाम के साथ-साथ पढ़ाई को कैसे मैनेज करें, क्योंकि शारीरिक स्वास्थ्य भी उतना ही जरूरी है जितना कि मानसिक स्वास्थ्य, कृपया मार्गदर्शन करें।

**प्रधानमंत्री-** आपका शरीर देखकर के लगता है मुझे आपने सही सवाल पूछा है। और आपकी ये चिंता भी सही होगी।

**प्रस्तुतकर्ता- अपनी सांस्कृतिक परंपरा और बर्फीली चोटियों पर तैनात सेना के जांबाजों के शौर्य के लिए विख्यात उत्तर भारत के प्रमुख केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कारगिल की छात्रा नजमा ख़ातून आपसे प्रश्न पूछना चाहती है।**

**नजमा ख़ातून-** माननीय प्रधानमंत्री जी नमस्कार, मेरा नाम नजमा ख़ातून है, मैं पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय कारगिल लद्दाख में पढ़ती हूँ। मैं कक्षा दसवीं की छात्रा हूँ। मेरा आपसे प्रश्न यह है कि परीक्षा की तैयारी और स्वस्थ जीवन शैली बनाए रखने के बीच संतुलन कैसे बना सकते हैं।

**प्रस्तुतकर्ता- पूर्वोत्तर भारत के रत्न जनजातीय बहुल राज्य अरुणाचल प्रदेश के नाहरलागुन गर्वमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल से एक शिक्षिका तोबी लॉमी जी प्रश्न पूछना चाहती हैं।**

**तोबी लॉमी-** नमस्कार माननीय प्रधानमंत्री जी, मेरा नाम तोबी लॉमी है, मैं एक शिक्षिका हूँ, मैं गर्वमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल नाहरलागुन अरुणाचल प्रदेश से आयी हूँ। मेरा प्रश्न है विद्यार्थी खेल-कूद ही नहीं, बल्कि पढ़ाई में मुख्य रूप से क्या और कैसे ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, कृपया मार्गदर्शन करें।

**प्रधानमंत्री-** आप में से बहुत सारे स्टूडेंट्स मोबाइल फोन का उपयोग करते होंगे। और कुछ

लोग होंगे शायद उनको घंटों तक मोबाइल फोन की आदत हो गई होगी। लेकिन क्या कभी ऐसा विचार आया मन में कि नहीं-नहीं मैं चार्जिंग में फोन नहीं रखूंगा तो मेरा मोबाइल का उपयोग कम हो जाएगा, इसलिए रिचार्ज नहीं करूंगा। अगर रिचार्जिंग नहीं करूंगा तो मोबाइल काम करेगा क्या? करेगा क्या? तो मोबाइल जैसी चीज जो रोजमर्रा देखते हैं, उसको भी चार्ज करना पड़ता है कि नहीं करना पड़ता है? अरे जवाब तो दीजिए? रिचार्ज करना पड़ता है कि नहीं करना पड़ता है? अगर मोबाइल को करना पड़ता है तो ये बॉडी को करना चाहिए कि नहीं करना चाहिए? जैसे मोबाइल फोन में चार्जिंग ये मोबाइल फोन की requirement है। वैसे हमारा शरीर का भी चार्जिंग ये शरीर की requirement है। आप ऐसा सोचो की नहीं पढ़ना है तो बस कि विंडो बंद पढ़ाई, बाकी सब बंद, ऐसा कभी नहीं हो सकता है, जीवन ऐसे नहीं जी सकते हैं, और इसलिए जीवन को थोड़ा संतुलित बनाना पड़ता है। कुछ लोग होते हैं खेलते ही रहते हैं, वो भी एक संकट होता है, लेकिन जब आपको एग्जाम देना हो और लौकिक लाइफ जीवन में इन चीजों का अपना महत्व है। इन चीजों को टाल नहीं सकते। लेकिन अगर हम स्वस्थ ही नहीं रहेंगे, अगर हम अपने शरीर में वो सामर्थ्य ही नहीं होगा, तो हो सकता है कि तीन घंटे एग्जाम में ही बैठने का सामर्थ्य ही खो देंगे, फिर पांच मिनट ऐसा ही करके बैठा रहना पड़ेगा। और इसलिए स्वस्थ शरीर स्वस्थ मन के लिए भी बहुत जरूरी है। अब स्वस्थ शरीर का मतलब ये तो नहीं है कि आपको पहलवानी करनी है। ये आवश्यक नहीं है, लेकिन जीवन में कुछ नियम तय होते हैं। अब आप कभी सोचिए कितना समय है, जिसमें आप खुले आसमान के नीचे सनलाइट में बिताए हो। अगर आप चलो पढ़ना भी है, तो किताब लेकर के सनलाइट में बैठो न भई थोड़ी देर। कभी-कभी बॉडी को रिचार्ज करने में सनलाइट भी बहुत जरूरी होता है। क्या कभी कोशिश की? नियम से कि भई मैं दिन में कैसे भी करके इतना तो मौका निकाल दूँ, ताकि मुझे सनलाइट के साथ मेरा नाता रहे। उसी प्रकार से कितना ही पढ़ना क्यों न हो, लेकिन नींद को कभी भी कम मत आंकिए। जब आपकी मम्मी आपको कहती हैं कि सो जाओ-सो जाओ तो उसको उसका interference मत मानिए। ज्यादातर स्टूडेंट्स का इगो इतना हर्ट हो जाता है कि तुम कौन होती हो, सोने-सो जाओ, और मुझे कल exam देना है। मैं सोऊंगा-नहीं सोऊंगा- तुम्हें क्या लेना देना है, ऐसा करते हैं न घर में। जो नहीं करते हैं वो ना बोलें, जो करते हैं वो बोलें जरा...करते हैं? कोई नहीं बोल रहा है। लेकिन ये पक्का है कि नींद के विषय में भी अगर एक बार रील पर चढ़ गए, एक के बाद, एक

के बाद एक रील देखते ही गए... छुपाना चाहते हों ना कितना समय बीत गया पता नहीं, कितनी नींद खराब हो गई पता नहीं। क्या निकाला- पहला रील निकालो जरा...याद करो याद भी नहीं है... ऐसे ही देख रहे हैं। ऐसे हम नींद को बहुत कम आंकते हैं।

आज आधुनिक हेल्थ साइंस जो है, वो नींद को बहुत तत्वजो देता है। आप आवश्यक नींद लेते हैं कि नहीं लेते हैं, वो आपके स्वास्थ्य के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। आपको उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। इसका मतलब ये भी नहीं कि भई exam तो आते रहेंगे...मोदी जी को मिला था उन्होंने बोला है सो जाओ। अभी यहां आर्टिस्टिक वर्ड बनाओ और घर में घुसते ही लिखो- सो जाओ। मम्मी-पापा को दिखा दो... सो जाओ, ऐसा तो नहीं करते ना? कम नींद स्वास्थ्य के लिए अनुचित है। कुछ upper लोग होते हैं, जो एक ऐसी स्टेज पर अपनी बांडी को ले गए, वे शायद इससे बाहर होंगे। सामान्य मानवी के जीवन के लिए ये अनुचित है।

आप कोशिश कीजिए कि आपकी required जितनी भी नींद हो, आप पूरी लेते हैं और ये भी देखिए कि sound sleep है कि नहीं। बहुत गहरी नींद होनी चाहिए जी। आप हैरान हो जाएंगे... जो टीचर बैठे हैं ना बड़ी आयु के टीचर... ये सुन करके जरूर चौंक जाएंगे। आज भी मैं... इतना सारा मेरे पास काम है ना... आप लोगों जितना नहीं है, लेकिन 365 दिन कोई अपवाद नहीं...अगर मैं बिस्तर पर लेटा नहीं कि 30 सेकेंड में deep sleep की तरफ नहीं चला गया तो होता नहीं... 30 सेकेंड लगते हैं मुझे। आप में से बहुत छोटी आयु के भी होंगे... कभी इधर, कभी उधर, कभी उधर, कभी उधर, फिर नींद आएगी तो आएगी। क्यों... मेरा बाकी जो जागृत अवस्था का समय है उसमें बहुत जागृत रहता हूँ मैं। तो जब जागृत हूँ, तो पूरी तरह जागृत हूँ, जब सोया हूँ तो पूरी तरह सोया हूँ। और वो बैलेंस... जो बड़ी आयु के लोग हैं वो परेशान होते होंगे... हां-हां भईया हमें तो नींद ही नहीं आती, आधा घंटा तो ऐसे ही करवट बदलते रहते हैं। और ये आप achieve कर सकते हैं।

फिर एक विषय है कि न्यूट्रिशन...संतुलित आहार और आप जिस उम्र में हैं...उस उम्र में जिन चीजों की जरूरत है, वो आपके आहार में हैं कि नहीं हैं...एक चीज पसंद है बस खाते रहते हो...पेट भर जाता है...कभी मन भर जाता है...लेकिन शरीर की आवश्यकताएं पूरी नहीं करता है।

10th, 12th का ये कालखंड ऐसा है, जब आपके पास exam का वातावरण है तो एक बात तय कीजिए कि मेरे शरीर को जितनी requirement है वो मैं लेता हूँ। मां-बाप भी बच्चों को ऐसा न करें... नहीं-नहीं... आज तो हलवा बनाया है जरा ज्यादा खा लें। कभी मां-बाप को भी लगता है कि

quantity ज्यादा खिला दी तो बच्चा खुश है... जी नहीं, उसके शरीर... और इसके लिए कोई अमीरी-गरीबी का मुद्दा नहीं है, जो उपलब्ध चीजें होती हैं उसी में से मिल जाता है जी। उसमें सारी चीजें रहती हैं... कम से कम खर्च वाली भी चीजें होती हैं जो हमारे न्यूट्रिशन को cater कर सकती हैं। और इसलिए हमारे आहार में संतुलन...ये भी स्वास्थ्य के लिए उतना ही जरूरी है।

और फिर एक्सरसाइज- हम पहलवानी वाली एक्सरसाइज करें या न करें, अलग बात है...लेकिन फिटनेस के लिए एक्सरसाइज करना चाहिए। जैसे daily टूथब्रश करते हैं ना...वैसे ही no compromise... एक्सरसाइज करनी चाहिए। मैंने कुछ बच्चे ऐसे देखे हैं, जो छत पर चले जाते हैं कि किताब लेकर चलते हैं... पढ़ते रहते हैं... दोनों काम कर लेते हैं... कुछ गलत नहीं है। वो पढ़ता भी है और अपना धूप के अंदर चल भी लेता है... एक्सरसाइज भी हो जाती है। कोई न कोई ऐसा रास्ता निकालना चाहिए, जिसमें आपकी फिजिकल एक्टिविटी होती रहनी चाहिए। 5 मिनट, 10 मिनट dedicated physical activity करनी ही चाहिए। ज्यादा कर सकें तो अच्छी बात है। अगर इन चीजों को सहज रूप से आप लाएंगे। Exam के तनाव के बीच सब कुछ इधर करेंगे, वो नहीं करेंगे तो नहीं चलेगा। संतुलित करिए, आपको बहुत फायदा होगा।

**प्रस्तुतकर्ता- रवींद्रनाथ टैगोर वंदे मातरम की अमर भूमि, समृद्ध कला-कौशल से भरपूर राज्य बंगाल के नॉर्थ 24 परगना से केन्द्रीय विद्यालय की छात्रा मधुमिता मल्लेख प्रश्न पूछना चाहती हैं।**

**मधुमिता-** माननीय प्रधानमंत्री महोदय नमस्कार, मेरा नाम मधुमिता मल्लेख है। मैं पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय बैरकपुर थल सेना कोलकाता संभाग की 11वीं विज्ञान की छात्रा हूँ। मेरा आपसे यह प्रश्न है आप उन छात्रों को क्या सलाह देना चाहेंगे जो अपने करियर के बारे में अनिश्चित हैं या किसी विशेष करियर या पेशे को चुनने के बारे में दबाव महसूस करते हैं।

**प्रस्तुतकर्ता- भगवान कृष्ण की उपदेश भूमि वीर बहादुर रिजलाडियों के प्रदेश हरियाणा पानीपत के द मिलेनियम स्कूल की छात्रा अदिति तनवर मार्गदर्शन चाहती है।**

**अदिति तनवर-** माननीय प्रधानमंत्री जी, नमस्कार। मेरा नाम अदिति तनवर है और मैं द मिलेनियम स्कूल, पानीपत, हरियाणा की कक्षा ग्यारहवीं की छात्रा हूँ। मेरा आपसे प्रश्न ये है कि मैंने humanities को अपने विषय के रूप में चुना है और लोग रोज मुझ पर ताने कसते हैं। मुझे ये विषय

पसंद है, इसीलिए मैंने इसे चुना है। पर कभी-कभी तानों को संभालना मुश्किल हो जाता है। इन्हें कैसे संभालें और कैसे नजरअंदाज करें।

**प्रधानमंत्री-** मुझे नहीं लगता है कि आप स्वयं confused हैं। आप स्वयं उलझन में हैं ऐसा मुझे नहीं लगता है। हकीकत ये है कि आपको अपने पर भरोसा नहीं है। आपको अपने सोचने के संबंध में दुविधा है। अब इसलिए आप 50 लोगों को पूछते रहते हैं। क्या लगता है ये करूं तो... क्या लगेगा ये करूं तो। आप खुद को जानते नहीं हैं। और उसके कारण आप किसी की advise पर dependent रहते हो। और जो व्यक्ति ज्यादा अच्छा लगता है, आपको और जो advise आपको सबसे सरल लगती है, आप उसी को adopt कर लेते हो। अब जैसे मैंने कहा कि खेलो तो बहुत कुछ होंगे जो आज संकल्प ले करके घर जाएंगे... मोदी जी ने कहा खेलो-खिलो, खेलो-खिलो। अब मैं पढ़ूंगा नहीं, बस... क्योंकि उसने अपनी चीज पसंद कर ली है।

मैं समझता हूँ कि सबसे बुरी जो स्थिति है ना, वो कन्फ्यूजन है... अनिर्णयकता है। अनिर्णयकता... आपने देखा होगा पुराने जमाने में से कथा चलती थी... कोई गाड़ी लेकर जा रहा था और कुत्ता तय नहीं कर पाया, इधर जाऊँ... उधर जाऊँ और आखिरकार वो नीचे आ गया। यही होता है... अगर उसको पता है कि मैं उधर चला जाऊँ तो हो सकता है कि वो झाड़वर ही उसको बचा ले। लेकिन इधर गया... उधर गया... उधर गया... तो झाड़वर कितना ही एक्सपर्ट हो नहीं बचा पाएगा। हमें अनिश्चितता से भी बचना चाहिए, अनिर्णयकता से भी बचना चाहिए। और निर्णय करने से पहले सारी चीजें... हमें उसको जितने तराजू पर तोल सकते हैं, तोलना चाहिए।

दूसरा, कभी-कभी कुछ लोगों को लगता है कि फलानी चीज वैसी है... ढिगनी चीज... अब मुझे बताइए- स्वच्छता का विषय है, अगर प्रधानमंत्री के रूप में देखें तो बहुत मामूली विषय है कि नहीं है? बहुत मामूली विषय है कि नहीं है? कोई भी कहेगा... यार, पीएम को इतने सारे काम हैं... ये स्वच्छता - स्वच्छता करता रहता है। लेकिन जब मैंने उसके अंदर अपना मन लगा दिया, हर बार मैंने उसको अपना एक महत्व का साधन बना दिया... आज स्वच्छता देश का प्राइम एजेंडा बन गया कि नहीं बन गया? स्वच्छता तो छोटा विषय था, लेकिन मैंने अगर उसमें जान मैंने भर दी तो वो बहुत बड़ा बन गया। इसलिए हम ये न सोचें... आपने देखा होगा कि कहीं मैं पूरा तो पढ़ नहीं पाया लेकिन मेरी नजर गई कि किसी ने कहा कि पिछले दस साल में आर्ट और कल्चर के क्षेत्र में भारत का मार्केट 250 गुना बढ़ गया है। अब आज से पहले कोई पेंटिंग करता था तो मां-बाप कहते थे पहले

पढ़ाई करो। Vacation में पेंटिंग करना। उसको लगता ही नहीं था कि पेंटिंग भी जीवन में महत्वपूर्ण विषय हो सकता है। और इसलिए हम किसी चीज को कम न आँके। हमारे में दम होगा तो हम उसमें जान भर देंगे। हमारे में सामर्थ्य होना चाहिए। और आप जो चीज हाथ में लें... उसमें जी-जान से जुट जाएं... हम आधे-अधूरे... यार उसने ये लिया... मैं ये लेता तो शायद अच्छा होता। उसने ये लिया, मैं ये लेता तो अच्छा होता। ये उलझन आपको बहुत संकटों में डाल सकती है।

दूसरा विषय है कि आज नेशनल एजुकेशन पॉलिसी ने आपके लिए बहुत सुविधा कर दी है। आप एक क्षेत्र में बढ़ रहे हैं, लेकिन आपको मन कर गया चलो एक और ट्राई करना है तो आप शिफ्ट कर सकते हैं... आपकी राह बदल सकते हैं। आपको किसी पर बंधे रहने की जरूरत नहीं है, आप अपने-आप प्रगति कर सकते हैं। और इसलिए अब शिक्षा में भी बहुत सी आज मैं अभी exhibition देख रहा था, मैं देख रहा था कि बच्चों की प्रतिभा जिस प्रकार से प्रकट हुई है, प्रभावित करने वाली है।

सरकार की आईएनबी मिनिस्ट्री, सरकार की योजनाओं को communicate करने के लिए जो कर रहे हैं... उससे ज्यादा इन बच्चों ने बहुत अच्छा किया है। नारी शक्ति का महत्व इतने बढ़िया तरीके से रखा है। इसका मतलब ये हुआ कि किसी भी हालत में हमें निर्णायक होना ही चाहिए। और एक बार निर्णायक होने की आदत लग जाती है ना फिर कन्फ्यूजन नहीं रहता है जी। वरना तो आपने देखा होगा कि कभी हम रेस्टोरेंट में चले जाएं परिवार के साथ... याद कीजिए आप... मुझे तो मौका नहीं मिलता है लेकिन आपको मिलता होगा। रेस्टोरेंट में जाते होंगे... पहले आप सोचते होंगे मैं ये मंगवाऊंगा... फिर बगल वाले टेबल पर कुछ देखते हैं तो कहते हैं नहीं ये नहीं ये मंगवाऊंगा। फिर वो बैरा जो है, कुछ और ट्रे में ले जाता दिखता है... तो यार ये कुछ और है, नहीं-नहीं, ये क्या है भाई... अच्छा मेरा वो दो कैसिल, ये ले आओ। अब उसका कभी पेट ही नहीं भरेगा जी। उसको कभी संतोष नहीं होगा और जब डिश आएगी तो उसको लगेगा यार इसके बजाय वो पहले वाला ले लिया होता तो अच्छा होता। जो लोग रेस्टोरेंट के डाइनिंग टेबल पर निर्णय नहीं कर पाते हैं, वो कभी रेस्टोरेंट का या खाने का आनंद नहीं ले सकते हैं, आपको निर्णायक बनना पड़ता है जी। अगर आपकी माँ आपको daily सुबह पूछे आज क्या खाओगे और आपके सामने 50 तरह की वैरायटी बोल दे... आप क्या करोगे? घूम-फिर करके आ जाओगे, रोज खाते हो... वहीं पर आकर खड़े हो जाओगे।

मैं समझता हूँ कि हमें आदत डालनी चाहिए कि

हम निर्णायक बनें। निर्णय लेने से पहले 50 चीजों को हम बारीकियों से देखें, उसके प्लस-माइनस प्वाइंट देखें, प्लस-माइनस प्वाइंट के लिए किसी से पूछें... लेकिन उसके बाद हम निर्णायक बनें। और इसलिए कन्फ्यूजन किसी भी हालत में किसी के लिए अच्छा नहीं है। अनिर्णायकता और खराब होती है और उसमें से हमें बाहर आना चाहिए।

**प्रस्तुतकर्ता- शांत समुद्र तट, चित्रमय गलियां और सांस्कृतिक विभिन्नताओं के लिए प्रसिद्ध नगर पुदुच्चेरी के गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल सेडारापेट की छात्रा डी. वर्सरी अपना प्रश्न पूछना चाहती हैं।**

**दीपश्री** - नमस्ते, वणक्कम ऑनरेबल प्राइम मिनिस्टर साहब।

**प्रधानमंत्री** - वणक्कम, वणक्कम

**डी. वर्सरी** - My name is Deepshri. I am coming from Government Higher Secondary School, Sedarapet Puducherry. My question is how can we build our trust in parents, that we are working hard.

**प्रधानमंत्री** - आपने सवाल पूछा है, लेकिन सवाल के पीछे दूसरा सवाल है आपके मन में, जो आप पूछ नहीं रही हैं। दूसरा सवाल ये है कि पूरे परिवार में miss-trust है। Trust deficit है और ये यानी आपके साथ बहुत अच्छी परिस्थिति को अपने पकड़ा है। आपने उसको प्रस्तुत ऐसे किया, घर में कोई नाराज न हो जाए, लेकिन ये सोचने का विषय है, टीचर के लिए भी और पेरेंट्स के लिए भी। कि ऐसा क्या कारण है कि हम Trust deficit पारिवारिक जीवन में अनुभव कर रहे हैं। अगर पारिवारिक जीवन में भी हम Trust deficit अनुभव करते हैं तो ये बहुत ही चिंता का विषय है। और ये Trust deficit अचानक नहीं होती है... एक लम्बे कालखंड से गुजर कर निकलती है। और इसलिए हर पेरेंट्स को, हर टीचर को, हर स्टुडेंट्स को बहुत ही बारीकी से अपने आचरण को analyse करते रहना चाहिए। आखिरकार मां-बाप मेरी बात पर भरोसा क्यों नहीं करते हैं... कहीं न कहीं तो ऐसी बातें हुई होंगी जिसके कारण उनका ये मन बन गया होगा। कभी आपने कहा होगा कि मैं अपनी सहेली को मिलने जा रही हूँ और मां-बाप को अगर बाद में पता चला कि आप तो उसके यहां गई ही नहीं थीं तो Trust deficit शुरू हो जाती है। उसने तो कहा था कि वहाँ जाऊँगी लेकिन बाद में जब वहाँ गए नहीं लेकिन आपने कह दिया कि मैंने तय किया था कि उनके यहां जाऊँगा लेकिन रास्ते में मेरा मन बदल गया तो मैं वहाँ चली गई थी। तो कभी भी ये Trust deficit की स्थिति पैदा नहीं होगी। और एक विद्यार्थी के नाते हमें जरूर ऐसा

सोचना चाहिए कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि मैंने कहा था मम्मी आप सो जाओ, चिंता मत कीजिए, मैं तो पढ़ लूँगा। और मम्मी चुपके से देखती है और मैं सो रहा हूँ तो फिर Trust deficit होगा कि ये तो कह रहा था मैं पढ़ूँगा, लेकिन पढ़ नहीं रहा है, सोया पड़ा है।

आप कहते थे कि माँ मैं अब एक सप्ताह तक मोबाइल को हाथ नहीं लगाऊँगा। लेकिन चुपके से दिख रहा है माँ को... अरे... तो फिर Trust deficit पैदा हो जाती है। क्या आप जो कहते हैं उसका सचमुच में पालन करते हैं क्या। अगर आप पालन करते हैं तो मैं नहीं मानता हूँ कि parents को या teachers को इस प्रकार की trust deficit की स्थिति पैदा होगी, आपके प्रति अविश्वास का कारण बनेगा। उसी प्रकार से मां-बाप को भी सोचना चाहिए। कुछ मां-बाप को ऐसी आदत होती है, जैसे मान लीजिए किसी मां-बाप ने... माँ ने बहुत बढ़िया खाना बनाया है और बेटा आया है, किसी न किसी कारण से उसे खाने का मन नहीं है लेकिन बहुत कम खाया है तो माँ क्या कहेगी... हम जरूर कहीं खाकर के आए होंगे, जरूर किसी के घर में पेट भरकर आए होंगे। तो फिर उसको चोट पहुंचती है, फिर वो सच बोलता नहीं है। फिर माँ को ठीक रखने के लिए, ठीक है चलो अच्छा लगे, बुरा लगे मैं जितना मुंह में डालता हूँ, डाल दूँगा। ये trust deficit पैदा हो जाता है, हर घर के अंदर ये अनुभव आता होगा। आपको माता जी ने, पिता जी ने मानो आपको पैसे दिए और आपको कहा एक महीने का तुम्हारा ये 100 रुपये तुम्हें ये देते हैं पॉकेट का, और फिर हर तीसरे दिन पूछते हैं, वो 100 रुपये का क्या किया?..... अरे भई तुमने 30 दिन के लिए दिया है ना, दूसरा मांगने तो आया नहीं तुम्हारे पास... तो भरोसा करो ना। अगर भरोसा नहीं तो नहीं देना था। ज्यादातर मां-बाप के केस में ऐसा होता है, रोज पूछते हैं, अच्छा वो 100 रूपया... हां कोई ये तो पूछ सकता है, पूछने का तरीका होता है कोई कहे - बेटा उस दिन पैसे नहीं थे तुम्हें 100 ही रूपये दिए थे तुम चिंता मत करना जरूरत पड़े तो कह देना। तो उस बेटे को लगा नहीं - नहीं मेरे माता-पिता ने मुझे 100 रूपया.... हां देखो आपके पसंद की बात आई तो ताली बजाते हो आप लोग।

अगर वही सवाल ये पूछते हैं 100 का क्या किया, इसके बजाय ये कह दे... तो बेटा कहेगा ना मां बिल्कुल नहीं मेरे पास पैसे है, sufficient है। यानि हमारा एक-दूसरे के बीच बात करने का तरीका कैसा है। ये चीजें सामान्य जीवन में जो अनुभव आती है, वो भी धीरे-धीरे-धीरे education system के साथ रोजमर्रा की हमारी अपेक्षाएं होती हैं, उसके टकराव में कनवर्ट हो जाती है। फिर कहा marks क्यों नहीं आए? तुम पढ़ते ही

नहीं होंगे, ध्यान देते ही नहीं होंगे, क्लास में बैठते ही नहीं होंगे, अपने दोस्तों के साथ गप्पे मारते होंगे। हो सकता है वो पैसे है, सिनेमा देखने चले गए होंगे, मोबाइल फोन पर रिलक्स देखते होंगे। फिर वो कुछ न कुछ कहना शुरू हो जाता है, फिर दूरी बढ़ जाती है, पहले trust खत्म हो जाता है फिर दूरी बढ़ जाती है और ये दूरी कभी-कभी बच्चों को डिप्रेशन की तरफ धकेल देती है। और इसलिए मां-बाप के लिए बहुत आवश्यक है।

उसी प्रकार से टीचर्स, टीचर्स ने भी बच्चों के साथ इतना खुलापन रखना चाहिए कि वह सहज रूप से अपनी बात कह सकें, अगर उसको कोई सवाल समझ नहीं आया तो कोई टीचर हड़का देगा, तुझे कुछ समझ नहीं आने वाला है तू बाकी विद्यार्थियों का टाइम खराब मत कर बैठ जाओ। कभी-कभी क्या करते हैं टीचर्स भी कि जो 4-5 होनहार बच्चे होते हैं ना, उनको वो बहुत प्रिय लगते हैं, उनसे उनका मन लग जाता है, बाकी क्लास में 20 बच्चे हैं, 30 बच्चे हैं वो जाने, उनका नसीब जाने। ये 2-4 में अपना मन लगा देते हैं, सब चीजें, वाहावाही उन्हीं की करते रहते हैं, उन्हीं के रिजल्ट लेकर के। अब आप उसको कितना आगे ले जा पाते हैं, वो तो अलग बात है लेकिन बाकी जो हैं, वहां से नीचे गिरा देते हैं। और इसलिए कृपा करके आपके लिए सभी students समान होने चाहिए। सबके साथ equally, हां जो तेज होगा वो अपने आप, अपने से जो अमृत है वो ले लेगा। लेकिन जिसको सबसे ज्यादा जरूरत है, उसके प्रति अगर आप symptomatic और उसमें भी मैं मानता हूँ उसके गुणों की तारीफ कीजिए। कभी कोई एक बच्चा बिल्कुल weak है पढ़ने में, लेकिन उसकी handwriting अच्छी है तो उसके सीट पर जाकर के अरे यार क्या बढ़िया लिखते हो तुम, तुम्हारी handwriting कितनी अच्छी है, क्या स्मार्टनेस है तुम्हारी। कभी एक ऐसा dull विद्यार्थी है, अरे यार तेरा कपड़ा बहुत सख्त है, कपड़ा बहुत अच्छा है। उसके अंदर confidence build up होगा, वो आपके साथ खुलने लग जाएगा, वो आपसे बातें करने लगेगा कि साहब का मेरे प्रति उनका ध्यान है। अगर यह सहज वातावरण बन जाएगा, मैं नहीं मानता हूँ लेकिन ये विद्यार्थियों का भी उतना ही दायित्व है, हमें आत्मचिंतन करना चाहिए कि मेरी ऐसी कौन-सी बातें थीं जिसके कारण मेरे घर के लोगों का मुझे भरोसा उठ गया। ये किसी भी हालत में, हमारे आचरण से, हमारे परिवार का, हमारे टीचर्स का हमसे भरोसा उठना नहीं चाहिए, हमसे कुछ नहीं हुआ तो कहना चाहिए। दूसरा मुझे लगता है कि परिवार में एक प्रयोग कर सकते हैं..... मान लीजिए आपका बेटे या बेटि के 5 दोस्त हैं, तय कीजिए की महीने में एक बार 2 घंटे वो पांचों

परिवार किसी एक परिवार में एकत्र होंगे, दूसरे महीने दूसरे परिवार में, बिल्कुल get together करेंगे और उसमें बच्चे बूढ़े सब होंगे ऐसा नहीं है कि 2 लोगों को घर छोड़कर आ जाएं, 80 साल के मां-बाप की अगर फिजिकली फिट हैं, आ सकते हैं, उनको भी लेकर आइए। और फिर तय कीजिए कि आज वो जो तीसरे नंबर का दोस्त है, उसकी माता जी एक कोई पॉजिटिव बुक पढ़कर के उसकी कथा सुनाएंगी। अगली बार तय कीजिए जो 4 नंबर का दोस्त है, उसके पिताजी एक कोई पॉजिटिव मूवी देखा होगा तो उसकी कथा सुनाएंगे। जब भी आप एक घंटे का get together करें सिर्फ और सिर्फ उदाहरणों के साथ, किसी रेफरेंस के साथ पॉजिटिव चीजों की चर्चा करें, वहां के किसी के रेफरेंस से नहीं। आप देख लेना धीरे-धीरे वो पॉजिटिविटी पकूलेट होगी। और यही पॉजिटिविटी सिर्फ आपके बच्चों के प्रति नहीं, अंदर-अंदर भी एक ऐसे ट्रस्ट का वातावरण बना देगी की आप सब एक इकाई बन जाएं, एक-दूसरे के मददगार बन जाएं और मैं मानता हूँ ऐसे कुछ प्रयोग करते रहना चाहिए।

**प्रस्तुतकर्ता- छत्रपति शिवाजी महाराज और समाज सुधारक महात्मा ज्योतिबा फुले की जन्मस्थली महाराष्ट्र की पुण्य नगरी पुणे से एक अभिभावक श्री चंद्रेश जैन जी आपसे प्रश्न पूछना चाहते हैं।**

**चंद्रेश जैन-** माननीय प्रधानमंत्री जी। आपको मेरा सादर प्रणाम। मेरा नाम चंद्रेश जैन है, मैं एक अभिभावक हूँ। मेरा आपसे एक प्रश्न है, क्या आपको नहीं लगता है आजकल के बच्चों के अपने दिमाग का इस्तेमाल करना बंद कर दिया है, वे तकनीक पर अधिक निर्भर रहने लगे हैं क्योंकि सब कुछ उंगलियों पर उपलब्ध है। कोई इस युवा पीढ़ी को कैसे जागरूक कर सकता है कि वे प्रौद्योगिकी के स्वामी बनने चाहिए, उसका गुलाम नहीं।

**प्रस्तुतकर्ता- आदिवासी जनजाति के लोकनायक स्वतंत्रता सेनानी बिरसा मुंडा की जन्म भूमि झारखंड के रामगढ़ जिले से एक अभिभावक श्रीमती पूजा श्रीवास्तव जी अपनी शंका का समाधान चाहती हैं।**

**पूजा श्रीवास्तव-** नमस्कार। Hon'ble Prime Minister Sir. My name is Pooja Srivastava. I am a parent of Priyanshi Srivastava studying in Shri Gurunanak Public School, Ramgarh, Jharkhand. Sir, I want to ask that how I can manage my daughter's studies with using social media platforms like Instagram, Snapchat, Twitter. Please guide me on this.

**प्रस्तुतकर्ता - हिमाचल प्रदेश शिवालिक पहाड़ियों की तलहटी में स्थित हमीरपुर जिले के DAV school Kangoo के एक छात्र अभिनव राणा आपसे प्रश्न पूछना चाहते हैं।**

**अभिनव राणा -** Hon'ble Prime Minister Sir नमस्कार। My name is Abhinav Rana, I am a student of T.R. DAV Public Senior Secondary School Kangoo Distt. Hamirpur, Himachal Pradesh. Sir, my question is how can we educate and encourage students to manage exam stress effectively while also harnessing the benefits of mobile technology as a tool for learning rather than let it become a distraction during precious study periods.

**प्रधानमंत्री-** देखिए, हमारे यहां शास्त्रों में भी कहा गया है और सहज जीवन में भी कहा गया है... किसी भी चीज की अति किसी का भला नहीं करती है। हर चीज, उसका एक मानदंड होना चाहिए, उसके आधार पर होता है। अगर मान लीजिए, मां ने बहुत बढ़िया खाना बनाया है...न्यूट्रिशन की दृष्टि से रिच है...टेस्ट आपकी पसंद का है...समय भी खाने का है...लेकिन बस खा रहे हैं, खा रहे हैं, खा रहे हैं, मां परोसती जा रही है। क्या ये संभव है क्या? संभव है क्या? कभी-कभी तो आप मां को कहोगे... नहीं मां बहुत हो गया, अब नहीं खा सकता। करते हो कि नहीं करते हो? आपका प्रिय खाना था, हर प्रकार से न्यूट्रिशन वैल्यू वाला था, वो समय भी ऐसा था खाने का वक्त था, फिर भी एक स्टेज आ जाती है जब वो खाना आपके लिए तकलीफ कर सकता है, vomiting करवाएगा, हेल्थ खराब कर देगा, आप का कितना ही प्रिय खाना... आपको रुकना पड़ेगा, रुकना पड़ता है कि नहीं रुकना पड़ता है?

वैसे ही मोबाइल के ऊपर कितनी ही प्रिय चीजें, कितनी ही चीजें आती हैं लेकिन कुछ तो समय तय करना पड़ेगा। अगर आप... मैंने देखा है आजकल... बहुत से लोगों को जब भी देखो... लगे पड़े हैं। आपने देखा होगा मेरे हाथ में कभी... बहुत rare case में कभी मोबाइल फोन मेरे हाथ में होता है। क्योंकि मुझे मालूम है कि मेरे समय का मुझे सर्वाधिक उपयोग क्या करना है। जबकि मैं ये भी मानता हूँ कि information के लिए मेरे लिए एक बहुत आवश्यक साधन भी है। लेकिन उसका कैसे उपयोग करना...कितना करना... इसका मुझे विवेक होना चाहिए। और इन दोनों जो पेरेंट्स की चिंता है वो इन दो की नहीं है वो हर पेरेंट्स की चिंता है। शायद ही कोई अपवाद होगा। जो मां-बाप खुद भी दिन भर मोबाइल में अटके रहते होंगे ना वो भी

चाहते होंगे कि बेटा इससे बचे। और आपने देखा होगा...सबसे बड़ी बात...आपके जीवन को कुंठित कर देता है जी। अगर आप परिवार में देखोगे तो घर के चार लोग चार कोने में बैठे हैं और एक-दूसरे को मैसेज फॉरवर्ड करते हैं। उठ करके मोबाइल नहीं दिखाते...देखो मुझे ये आया है...क्यों...secrecy, ये इसके कारण एक बहुत बड़ा अविश्वास पैदा करने का ये भी एक साधन बन गया है आजकल। अगर मां ने मोबाइल फोन को हाथ लगा दिया बस आ गया घर में तूफान। तुम कौन होती हो मेरे मोबाइल को हाथ लगाने वाली... यही हो जाता है।

मैं समझता हूँ कि परिवार में कुछ नियम होने चाहिए, जैसे खाना खाते समय डाइनिंग टेबल पर कोई इलेक्ट्रॉनिक गजट नहीं होगा, मतलब नहीं होगा। सब लोग खाना खाते समय गप्पे मारेंगे, बातें करेंगे, खाना खाएंगे। ये हम discipline follow कर सकते हैं जी। घर के अंदर...मैंने पहले भी कहा है, दोबारा कहता हूँ...no gadget zone. की भई ये कमरे में कोई गैजेट की एंट्री नहीं, हम बैठेंगे, बातें करेंगे, गप्पें मारेंगे। परिवार के अंदर वो ऊष्मा का वातावरण...उसके लिए जरूरी है।

तीसरा हम, हमारे खुद के लिए भी... अब टेक्नोलॉजी से हम बच नहीं सकते हैं, टेक्नोलॉजी को बोझ नहीं मानना चाहिए, टेक्नोलॉजी से दूर भागना नहीं चाहिए, लेकिन उसका सही उपयोग सीखना उतना ही अनिवार्य है। अगर आप टेक्नोलॉजी से परिचित हैं... आपके माता-पिता को पूरी नॉलेज नहीं है... सबसे पहला आपका काम है आज मोबाइल पर क्या-क्या available है, उनसे चर्चा कीजिए... उनको एजुकेट कीजिए... और उनको विश्वास में लीजिए कि देखिए, मैथ में मुझे ये चीजें यहां मिलती हैं, केमिस्ट्री में मुझे ये मिलती हैं, हिस्ट्री में ये मिलती हैं, और मैं इसको देखता हूँ, आप भी देखिए। तो वो भी थोड़ी रुचि लेंगे, वरना क्या होगा... हर बार उनको लगता होगा कि मोबाइल मतलब ये दोस्तों के साथ चिपका हुआ है। मोबाइल मतलब रील देख रहा है। अगर उसको पता चले कि भई इसमें ये-ये पार्ट है... इसका मतलब ये नहीं कि मां-बाप को मूर्ख बनाने के लिए बढ़िया चीज दिखा दें और फिर दूसरा करें... ऐसा नहीं हो सकता है। हमारे पूरे परिवार में पता होना चाहिए क्या चल रहा है। हमारे मोबाइल फोन का लॉक करने का जो नंबर होता है वो परिवार में सबको पता हो तो क्या नुकसान होगा? परिवार के हर सदस्य को हरेक मोबाइल का... अगर इतनी transparency आ जाए, आप काफी बुराइयों से बच जाएंगे। कि भई, हर किसी का भले ही मोबाइल अलग होगा लेकिन उसका जो कोड वर्ड है सबको मालूम होगा, तो ये भला हो जाएगा।

दूसरा आप भी अपने स्क्रीन टाइम को मॉनिटर

करने वाले जो ऐप्स होते हैं उनको डाउनलोड करके रखिए। वो बताएगा कि आपको स्क्रीन टाइम आज इतना हो गया है, आपने यहां इतना टाइम लगाया है। आपने इतना टाइम... वो स्क्रीन पर ही आपको मैसेज देता है। वो आपको अलर्ट देता है। जितने ज्यादा ऐसे अलर्ट के टूल्स हैं, हमें अपने गैजेट्स के साथ जोड़ कर रखना चाहिए ताकि हमें भी पता चले... हां यार ज्यादा हो गया अब मुझे रुकना चाहिए... कम से कम वो हमें अलर्ट करता है। At the same time उसका पॉजिटिव उपयोग कैसे कर सकते हैं। अगर मान लीजिए मैं कुछ लिख रहा हूँ, लेकिन मेरा... मुझे एक अच्छा शब्द मिल नहीं रहा है तो मुझे dictionary की जरूरत है।

मैं डिजिटल व्यवस्था का उपयोग करके उसका लाभ ले सकता हूँ। मान लीजिए कि मैं कर रहा हूँ और मुझे कोई अर्थमेटिक का कोई सूत्र ध्यान नहीं आता है। चलिए मैंने डिजिटल चीज का सपोर्ट सिस्टम ले लिया, पूछ लिया उसको क्या हुआ, फायदा होगा लेकिन अगर मैं जानता ही नहीं हूँ कि मेरे मोबाइल में क्या ताकत है। तो मैं क्या उपयोग करूंगा? और इसलिए मुझे तो लगता है कि कभी-कभी क्लासरूम में भी मोबाइल के पॉजिटिव पहलू क्या-क्या हैं, positively उपयोग आने वाली कौन सी चीजें हैं। कभी 10-15 मिनट क्लास रूम में चर्चा करनी चाहिए। कोई स्टूडेंट अपने अनुभव बताएगा कि मैंने उस वेबसाइट को देखा, हमारे स्टूडेंट्स के लिए अच्छी वेबसाइट है। मैंने उस वेबसाइट को देखा, फलाने सबजेक्ट के लिए वहां अच्छी लर्निंग मिलती है, अच्छे lessons मिलते हैं। मान लीजिए टूर जा रहा है कहीं पर, टूर प्रोग्राम हमारे पास है और बच्चे जा रहे कि चलो भई हम जैसलमेर जा रहे हैं। सबको कहा जाए जरा ऑनलाइन जाओ भई, जैसलमेर का पूरा प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनाओ। तो उसका पॉजिटिव उपयोग करने की आदत डालनी चाहिए। उसको लगना चाहिए कि तुम्हारी मदद में बहुत सारी व्यवस्थाएं उपलब्ध हैं, तुम इसका उपयोग करो। जितना ज्यादा सकारात्मकता से आप उपयोग करोगे उतना आपको लाभ होगा, और मेरा आग्रह रहेगा कि हमें उससे दूर भी नहीं भागना है। लेकिन हमें हर चीज का विवेक से और पूरे परिवार में transparency से, जितनी ज्यादा transparency आएगी, ऐसे छुप-छुप करके देखना पड़े तो मतलब कुछ गड़बड़ है। जितनी transparency आएगी, उतना लाभ ज्यादा होगा।

**प्रस्तुतकर्ता - महाकवि सुब्रमण्यम भारती की जन्मभूमि तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई के मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल के छात्र एम वागेश आपसे प्रश्न पूछना चाहते हैं।**

**एम वागेश -** Hon'ble Prime Minister Sir Namaste, My name is M Vagesh, I am student of Modern Senior Secondary School, Nanganallur Chennai, My question is how to you handle stress and pressure in the super strong position as a Prime Minister, what is your key factor of controlling stress.

**प्रधानमंत्री -** आप भी बनना चाहते हैं क्या? तैयारी कर रहे हो क्या?

**प्रस्तुतकर्ता -** देवभूमि उत्तराखंड जो अपनी प्राकृतिक सुषमा के लिए प्रसिद्ध है। उधम सिंह नगर स्थित Dynasty Modern Gurukul Academy की छात्रा स्नेहा त्यागी प्रश्न पूछना चाहती हैं।

**स्नेहा त्यागी -** दिव्य है, अतुल्य है, अदम्य साहस का परिचय है आप। युगों युगों के निर्माता अद्भुत भारत का भविष्य है आप। देवभूमि उत्तराखंड से आदरणीय प्रधानमंत्री मोदी जी को मेरा चरण स्पर्श प्रणाम। मेरा नाम स्नेहा त्यागी है। मैं Dynasty Modern Gurukul Academy Chhinki Farm, Khatima, Udham Singh Nagar की कक्षा सात की छात्रा हूँ। आदरणीय प्रधानमंत्री जी से मेरा प्रश्न है कि हम आपकी तरह सकारात्मक कैसे हो सकते हैं।

**प्रधानमंत्री -** इसके कई जवाब हो सकते हैं। एक तो मुझे अच्छा लगा की आपको पता है कि प्रधानमंत्री को कितना प्रेशर झेलना पड़ता है। वनां आपको तो लगता होगा हवाई जहाज है, हेलीकॉप्टर है, उनको क्या है, यहां से यहां जाना है, यही करना है, लेकिन आपको पता है कि भांति-भांति के सुबह शाम। दरअसल हर एक के जीवन में अपनी स्थिति से अतिरिक्त ऐसी बहुत सी चीजें होती हैं, जिसको उसे मैनेज करना पड़ता है। जो उसने सोचा नहीं, वैसी चीजें व्यक्तिगत जीवन में भी आ जाती है, परिवार जीवन में आ जाती है और फिर उसको उसे भी संभालना पड़ता है। अब एक नेचर ऐसा होता है कि भई बहुत बड़ी आंधी आई है, चलो कुछ पल बैठ जाएं निकल जाने दो, कुछ संकट आया है, नीचे मुंडी करो यार समय जाएगा। शायद ऐसे लोग जीवन में कुछ एचीव नहीं कर सकते। मेरी प्रकृति है और जो मुझे काफी उपकारक लगी है। मैं हर चुनौती को चुनौती देता हूँ। चुनौती जाएगी, स्थितियां सुधर जाएंगी, इसकी प्रतीक्षा करते हुए मैं सोया नहीं रहता हूँ। और उसके कारण मुझे नया-नया सीखने को मिलता है। हर परिस्थिति को हैंडल करने का नया तरीका, नए प्रयोग, नई strategy evolve करने का सहज मेरी एक विधा का अपना विकास होता जाता है। दूसरा मेरे भीतर एक बहुत बड़ा कान्फिडेंस है। मैं हमेशा मांगता हूँ कि कुछ भी

है, 140 करोड़ देशवासी मेरे साथ हैं। अगर 100 मिलियन चुनौतियाँ हैं तो billions of billions समाधान भी हैं। मुझे कभी नहीं लगता है कि मैं अकेला हूँ, मुझे कभी नहीं लगता है कि मुझे करना है। मुझे हमेशा पता होता है, मेरा देश सामर्थ्यवान है, मेरे देश के लोग सामर्थ्यवान हैं, मेरे देश के लोगों का मस्तिष्क सामर्थ्यवान है, हम हर चुनौती को पार कर जाएंगे। ये मूलभूत मेरे भीतर मेरा सोचने का पिंड है। और इसके कारण मुझे कभी नहीं लगता है यार मुझ पर आया है क्या करूंगा? मुझे लगता है नहीं-नहीं 140 करोड़ लोग हैं, संभल जाएंगे। ठीक है आगे मुझे रहना पड़ेगा और गलत हुआ तो गाली मुझे खानी पड़ेगी। लेकिन मेरे देश का सामर्थ्य और इसलिए मैं अपनी शक्ति देश के सामर्थ्य को बढ़ाने में लगा रहा हूँ। और जितना ज्यादा मैं मेरे देशवासियों का सामर्थ्य बढ़ाता जाऊंगा, चुनौतियों को चुनौती देने की हमारी ताकत और बढ़ती जाएगी।

अब हिन्दुस्तान की हर सरकार को गरीबी के संकट से जूझना पड़ा है। हमारे देश में ये संकट है ही है। लेकिन मैं डरकर के बैठ नहीं गया। मैंने उसका रास्ता खोजा और मैंने ये सोचा कि सरकार होती कौन है- जो गरीबी हटाएगी। गरीबी तो तब हटेगी, जब मेरा हर गरीब तय करेगा कि अब मुझे गरीबी को परास्त करना है। अब वो सपने ही देखेगा तो होगी कि नहीं होगा। तो मेरी जिम्मेदारी बनती है कि मैं उसके सपने को पूरा करने के लिए सामर्थ्यवान बनाऊँ, उसको पक्का घर दे दूँ, उसको टॉयलेट दे दूँ, उसको शिक्षा की व्यवस्था दे दूँ, उसको आयुष्मान योजना का लाभ दे दूँ, उसके घर से नल पहुंचा दूँ, अगर मैं उन चीजों से जिससे उसे रोजमर्रा की जिंदगी में जूझना पड़ता है, अगर मैं उसको उससे मुक्ति दिला देता हूँ, उसको empower करता जाता हूँ, तो वो भी मानेगा अब गरीबी गई, अब मैं इसके मारूंगा। और आप देखिए कि इस दस साल के मेरे कार्यकाल में देश में 25 करोड़ लोग गरीबी से बाहर आए हैं। अब यही चीज और लोग ने भी जैसे बिताया था, मैं भी बिता देता। और इसलिए मेरी कोशिश रहती है कि हम देश की शक्ति पर, देश के संसाधनों पर भरोसा करें। जब हम इन सारी चीजों को देखते हैं। तो कभी हम अपने आपको अकेला महसूस नहीं करते जी। मैं क्या करूँ? मैं कैसे करूँ? अरे मैं तो एक चाय बेचने वाला इंसान क्या करूंगा, ऐसे नहीं सोच सकता हूँ जी। मुझे पूरा भरोसा होना चाहिए और इसलिए पहली बात है कि आप जिनके लिए कर रहे हैं, उन पर आपका अपार भरोसा। दूसरा आपके पास नीर-क्षीर का विवेक चाहिए। कौन सा सही है, कौन सा गलत है। कौन सा आज जरूरी है, कौन सा अभी नहीं बाद में देखेंगे। आपमें priority तय करने का सामर्थ्य चाहिए। वो अनुभव से आता है, हर चीज

को analyse करने से आता है, मैं दूसरा प्रयास ये करता हूँ। तीसरा मैं गलती भी हो जाए तो ये मानकर चलता हूँ कि ये मेरे लिए lesson है। मैं इसको निराशा का कारण नहीं मानता हूँ। अब आप देखिए कोविड का संकट कितना भयंकर था, मामूली चुनौती थी क्या? पूरी दुनिया फंसी पड़ी थी। अब मेरे लिए भी था कि क्या करूँ भई, मैं कह दूँ अब क्या करे ये तो वैश्विक बीमारी है, दुनिया भर में से आई है, सब अपना अपना संभाल लो, मैंने ऐसा नहीं किया। रोज टीवी पर आया, रोज देशवासियों से बात की, कभी ताली बजाने के लिए कहा, कभी थाली बजाने के लिए कहा, कभी दीया जलाने के लिए कहा, वो एकट कोरोना को खत्म नहीं करता है। लेकिन वो एकट कोरोना के खिलाफ लड़ाई लड़ने की एक सामूहिक शक्ति को जन्म देता है। सामूहिक शक्ति को उभारना, अब देखिए पहले भी खेल के मैदान में हमारे लोग जाते थे, कभी कोई जीतकर आता था, कोई जीतकर नहीं आता था। जाने वाले को कोई पूछता नहीं था, आने वाले को कोई पूछता नहीं था। मैंने कहा भई तीन मेडल ये जीतकर आएंगे लेकिन मैं उसके ढोल पीटूंगा। तो धीरे-धीरे करके 107 मेडल लाने का सामर्थ्य उन्हीं बच्चों में से निकला। सामर्थ्य तो था, सही दिशा, सही रणनीति, सही नेतृत्व परिणाम लाता है। जिसका जिसके पास सामर्थ्य है, उसका सही उपयोग करना चाहिए। और मेरा तो गर्वनेस का एक सिद्धांत रहा है कि अच्छी सरकार चलाने के लिए इन समस्याओं के समाधान के लिए भी आपको नीचे से ऊपर की तरफ सही जानकारी आनी चाहिए, perfect information आनी चाहिए और ऊपर से नीचे की तरफ perfect guidance जाना चाहिए। अगर ये 2 चैनल perfect रही, उसका communication, उसकी व्यवस्थाएं, उसके protocol उसको ठीक से किया तो आप चीजों को संभाल सकते हैं।

कोरोना एक बहुत बड़ा उदाहरण है। और इसलिए मैं मानता हूँ कि निराशा होने का कोई कारण ही नहीं होता है जीवन में, और अगर एक बार मन में तय कर लिया कि निराशा होना ही नहीं है, तो फिर सिवाय positivity कुछ आता ही नहीं है। और मेरे यहां निराशा के सारे दरवाजे बंद हैं। कोई कोना भी एक छोटी खिड़की भी मैंने खुली नहीं रखी है कि निराशा वहां से घुस जाए। और मैं आपने कभी देखा होगा मैं कभी रोता बैठता नहीं हूँ जी। पता नहीं क्या होगा, वो हमारे साथ आएगा कि नहीं आएगा, वो हमसें भिड़ जाएगा क्या, अरे होता रहता है जी। हम किस चीज के लिए हैं, और इसलिए मैं मानता हूँ कि जीवन में आत्मविश्वास से भरे हुए और अपने लक्ष्य के विषय में, और दूसरी बात है जब कोई निजी स्वार्थ नहीं होता है, खुद के लिए कुछ करना तय होता है तो निर्णयों में कभी भी दुविधा पैदा नहीं

होती है। और वो एक बहुत बड़ी अमानत मेरे पास है। मेरा क्या, मुझे क्या, इससे मेरा कोई लेना-देना नहीं है, सिर्फ और सिर्फ देश के लिए करना है। और आपके लिए करना ताकि आपके माता-पिता को जिन मुसीबतों से गुजरना पड़ा, मैं नहीं चाहता हूँ कि उन मुसीबतों से आपको गुजरना पड़े। हमें ऐसा देश बनाकर देना है दोस्तों, ताकि आपकी भावी पीढ़ी को भी, आपकी संतानों को भी लगे कि हम ऐसे देश के अंदर और पूरी तरह खिल सकते हैं, अपना सामर्थ्य दिखा सकते हैं, और ये हमारा सामूहिक संकल्प होना चाहिए। ये हमारा सामूहिक resolve होना चाहिए, और परिणाम मिलता है।

और इसलिए साथियों, जीवन में positive thinking की बहुत बड़ी ताकत होती है। बुरी से बुरी चीज में भी positive देखा जा सकता है। उसको हमें देखना चाहिए।

**प्रधानमंत्री** - हो गए सारे सवाल।

आप लोगों ने देखा होगा कि ये बच्चे भी जिस प्रकार से anchoring कर रहे हैं। आप भी अपने स्कूल-कॉलेज में ये सब कर सकते हैं, तो उनसे जरूर सीखिएगा।

## चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलेगी



**के**न्द्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह ने कहा, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम के दौरान छात्रों के साथ संवाद से हमारी युवा पीढ़ी को परीक्षा के दौरान आ रही चुनौतियों का सामना करने में मदद मिलेगी।

मोदी जी के शब्दों ने न सिर्फ छात्रों को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया, बल्कि इससे उन्हें तनाव का सामना करने में भी मदद मिलेगी। प्रधानमंत्री जी के शब्द शिक्षकों और अभिभावकों के लिए एक गाइड का काम करेंगे जो भावी पीढ़ी को पढ़ाने और उनकी बेहतर परवरिश में मददगार होगी।

# अमर है, गणतंत्र

अटल बिहारी वाजपेयी

राजपथ पर भीड़, जनपथ पड़ा सूना,  
पलटनों का मार्च, होता शोर दूना।

शोर से डूबे हुए स्वाधीनता के स्वर,  
रुद्ध वाणी, लेखनी जड़, कसमसाता उर।

भयातंकित भीड़, जन अधिकार वंचित,  
बन्द न्याय कपाट, सत्ता अमर्यादित।

लोक का क्षय, व्यक्ति का जयकार होता,  
स्वतंत्रता का स्वप्न, रावी तीर रोता।

रक्त के आँसू बहाने को विवश गणतंत्र,  
राजमद ने रौंद डाले मुक्ति के शुभ मंत्र।

क्या इसी दिन के लिए पूर्वज हुए बलिदान?  
पीढ़ियां जूझीं, सदियों चला अग्नि-स्नान?

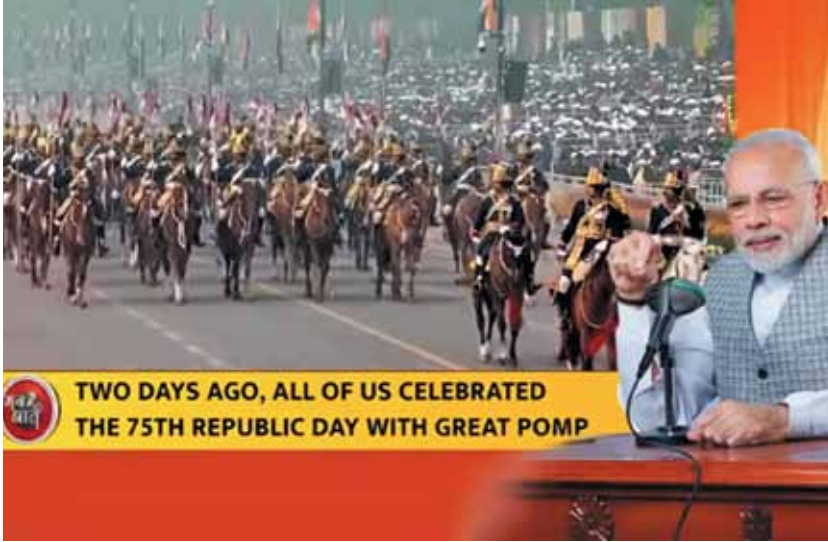
स्वतंत्रता के दूसरे संघर्ष का घननाद,  
होलिका आपात् की फिर माँगती प्रह्लाद।

अमर है गणतंत्र, कारा के खुलेंगे द्वार,  
पुत्र अमृत के न विष से मान सकते हार।





# सबकी बातों में राम, सबके हृदय में राम



इस बार 26 जनवरी की परेड बहुत ही अदभुत रही, लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा परेड में Women Power को देखकर हुई, जब कर्तव्य पथ पर, केंद्रीय सुरक्षा बलों और दिल्ली पुलिस की महिला टुकड़ियों ने कदमताल शुरू किया तो सभी गर्व से भर उठे। महिला बैंड का मार्च देखकर, उनका जबरदस्त तालमेल देखकर, देश-विदेश में लोग झूम उठे।

इस बार परेड में मार्च करने वाले 20 दस्तों में से 11 दस्ते महिलाओं के ही थे। जो झाँकी निकली, उसमें भी सभी महिला कलाकार ही थीं। जो सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, उसमें भी करीब डेढ़ हजार बेटियों ने हिस्सा लिया था। कई महिला कलाकार शंख, नादस्वरम और नागदा जैसे भारतीय संगीत वाद्ययंत्र बजा रही थीं।

**अ**मृतकाल में एक नयी उमंग है, नयी तरंग है। इस साल हमारे संविधान के भी 75 वर्ष हो रहे हैं और सुप्रीम कोर्ट के भी 75 वर्ष हो रहे हैं। हमारे लोकतंत्र के ये पर्व, mother of democracy के रूप में भारत को और सशक्त बनाते हैं। भारत का संविधान इतने गहन मंथन के बाद बना है कि उसे जीवंत दस्तावेज कहा जाता है।

इसी संविधान की मूल प्रति के तीसरे अध्याय में भारत के नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का वर्णन किया गया है और ये बहुत दिलचस्प है कि तीसरे अध्याय के प्रारंभ में हमारे संविधान निर्माताओं ने भगवान राम, माता सीता और लक्ष्मण जी के चित्रों को स्थान दिया था। प्रभु राम का शासन, हमारे संविधान निर्माताओं के लिए भी प्रेरणा का स्रोत था और इसलिए 22

जनवरी को अयोध्या में मैंने 'देव से देश' की बात की थी, 'राम से राष्ट्र' की बात की थी।

अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा के अवसर ने देश के करोड़ों लोगों को मानो एक सूत्र में बांध दिया है। सबकी भावना एक, सबकी भक्ति एक, सबकी बातों में राम, सबके हृदय में राम। देश के अनेकों लोगों ने इस दौरान राम भजन गाकर उन्हें श्रीराम के चरणों में समर्पित किया। 22 जनवरी की शाम को पूरे देश ने राम ज्योति जलाई, दिवाली मनाई। इस दौरान देश ने सामूहिकता की शक्ति देखी, जो विकसित भारत के हमारे संकल्पों का भी बहुत बड़ा आधार है। देश के लोगों से आग्रह किया था कि मकर संक्रांति से 22 जनवरी तक स्वच्छता का अभियान चलाया जाए। अच्छा लगा कि लाखों लोगों ने श्रद्धाभाव से जुड़कर अपने क्षेत्र के धार्मिक स्थलों की साफ-सफाई की। कितने ही लोगों ने इससे जुड़ी तस्वीरें भेजी हैं, video भेजे हैं - ये भावना रुकनी नहीं चाहिए, ये अभियान रुकना नहीं चाहिए। सामूहिकता की यही शक्ति, हमारे देश को सफलता की नई ऊंचाई पर पहुंचाएगी।

इस बार 26 जनवरी की परेड बहुत ही अदभुत रही, लेकिन सबसे ज्यादा चर्चा परेड में Women Power को देखकर हुई, जब कर्तव्य पथ पर, केंद्रीय सुरक्षा बलों और दिल्ली पुलिस की महिला टुकड़ियों ने कदमताल शुरू किया तो सभी गर्व से भर उठे। महिला बैंड का मार्च देखकर, उनका जबरदस्त तालमेल देखकर, देश-विदेश में लोग झूम उठे। इस बार परेड में मार्च करने वाले 20 दस्तों में से 11 दस्ते महिलाओं के ही थे। जो झाँकी निकली, उसमें भी सभी महिला कलाकार ही थीं। जो सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, उसमें भी करीब डेढ़ हजार बेटियों ने हिस्सा लिया था। कई महिला कलाकार शंख, नादस्वरम और नागदा जैसे भारतीय संगीत वाद्ययंत्र बजा रही थीं। DRDO ने जो झाँकी निकाली, उसने भी सभी का ध्यान खींचा। उसमें दिखाया गया कि कैसे नारी शक्ति जल-थल-नभ, Cyber और

Space, हर क्षेत्र में देश की सुरक्षा कर रही है। 21वीं सदी का भारत, ऐसे ही Women Led Development के मंत्र के साथ आगे बढ़ रहा है।

आपने कुछ दिन पहले ही अर्जुन अवार्ड समारोह को भी देखा होगा। इसमें राष्ट्रपति भवन में देश के कई होनहार खिलाड़ियों और एथलीटों को सम्मानित किया गया है। यहां भी जिस एक बात ने लोगों का खूब ध्यान खींचा, वो थी अर्जुन पुरस्कार पाने वाली बेटियां और उनकी life journeys। इस बार 13 Women Athletes को Arjun Award से सम्मानित किया गया है। इन women athletes ने अनेकों बड़े टूर्नामेंटों में हिस्सा लिया और भारत का परचम लहराया। शारीरिक चुनौतियां, आर्थिक चुनौतियां, इन साहसी और talented खिलाड़ियों के आगे टिक नहीं पाईं। बदलते हुए भारत में, हर क्षेत्र में हमारी बेटियां, देश की महिलाएं कमाल करके दिखा रही हैं। एक और क्षेत्र है, जहां, महिलाओं ने, अपना परचम लहराया है, वो है - self help groups। आज women self help groups की देश में संख्या भी बढ़ी है और उनके काम करने के दायरे का भी बहुत विस्तार हुआ है।

वो दिन दूर नहीं, जब आपको गाँव-गाँव में खेतों में, नमो ड्रोन दीदियां, ड्रोन के माध्यम से खेती में मदद करती हुई दिखाई देंगी। यूपी के बहराइच में स्थानीय चीजों के उपयोग से bio fertilizer और bio pesticide तैयार करने वाली महिलाओं के बारे में पता चला। self help groups से जुड़ी निबिया बेगमपुर गाँव की महिलाएं, गाय के गोबर, नीम की पत्तियां, और कई तरह के औषधीय पौधों को मिलाकर, bio fertilizer तैयार करती हैं। इसी तरह ये महिलाएं अदरक, लहसुन, प्याज और मिर्च का paste बनाकर organic pesticide भी तैयार करती हैं। इन महिलाओं ने मिलकर 'उन्नति जैविक इकाई' नाम का एक संगठन बनाया है। ये संगठन bio products को तैयार करने में इन महिलाओं की मदद करता है। इनके द्वारा बनाए गए bio fertilizer और bio-pesticide की मांग भी लगातार बढ़ रही है। आज, आसपास के गावों के 6 हजार से ज्यादा किसान इनसे bio products खरीद रहे हैं। इससे self help group से जुड़ी इन महिलाओं की आय बढ़ी है, और उनकी आर्थिक स्थिति भी बेहतर हुई है।

'मन की बात' में हम ऐसे देशवासियों के प्रयासों को सामने लाते हैं, जो निस्वार्थ भावना के साथ समाज को, देश को, सशक्त करने का

काम कर रहे हैं। ऐसे में, तीन दिन पहले जब देश ने पद्म पुरस्कारों का ऐलान किया है, तो 'मन की बात' में ऐसे लोगों की चर्चा स्वाभाविक है। इस बार भी ऐसे अनेकों देशवासियों को पद्म सम्मान दिया गया है, जिन्होंने, जमीन से जुड़कर समाज में बड़े-बड़े बदलाव लाने का काम किया है। इन inspiring लोगों की जीवन-यात्रा के बारे में जानने को लेकर देश-भर में बहुत उत्सुकता दिखी है। मीडिया की headlines से दूर, अखबारों के lime-light से दूर, ये लोग बिना किसी lime-light के समाज सेवा में जुटे थे। हमें इन लोगों के बारे में पहले शायद ही कुछ देखने-सुनने को मिला है, लेकिन, अब पद्म सम्मान घोषित होने के बाद ऐसे लोगों की हर तरफ चर्चा हो रही है, लोग उनके बारे में ज्यादा-से-ज्यादा जानने के लिए उत्सुक हैं। पद्म पुरस्कार पाने वाले ये अधिकतर लोग, अपने-अपने क्षेत्र में काफी अनूठे काम कर रहे हैं। जैसे कोई ambulance service मुहैया करवा रहा है, तो कोई बेसहारों के लिए सिर पर छत का इंतजाम कर रहा है। कुछ ऐसे भी हैं, जो हजारों पेड़ लगाकर प्रकृति-संरक्षण के प्रयासों में जुटे हैं। एक ऐसे भी हैं, जिन्होंने चावल की 650 से अधिक किस्मों के संरक्षण का काम किया है। एक ऐसे भी हैं, जो drugs और शराब की लत की रोकथाम के लिए समाज में जागरूकता फैला रहे हैं। कई लोग तो Self Help Group, विशेषकर नारी शक्ति के अभियान से लोगों को जोड़ने में जुटे हैं। देशवासियों में इस बात को लेकर भी बहुत प्रसन्नता है कि सम्मान पाने वालों में 30 महिलाएं हैं। ये महिलाएं जमीनी स्तर पर अपने कार्यों से समाज और देश को आगे ले जा रही हैं।

पद्म सम्मान पाने वालों में हर किसी का योगदान देशवासियों को प्रेरित करने वाला है। इस बार सम्मान पाने वालों में बड़ी संख्या उन लोगों की है, जो शास्त्रीय नृत्य, शास्त्रीय संगीत, लोक नृत्य, थिएटर और भजन की दुनिया में देश का नाम रोशन कर रहे हैं। प्राकृत, मालवी और लम्बाडी भाषा में बहुत ही शानदार काम करने वालों को भी ये सम्मान दिया गया है। विदेश के भी कई लोगों को पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया है जिनके कार्यों से भारतीय संस्कृति और विरासत को नई ऊंचाई मिल रही है। इनमें France, Taiwan, Mexico और Bangladesh के नागरिक भी शामिल हैं।

इस बात की बहुत खुशी है कि पिछले एक दशक में पद्म सम्मान का system पूरी तरह



से बदल चुका है। अब ये पीपल्स पद्म बन चुका है। पद्म सम्मान देने की व्यवस्था में कई बदलाव भी हुए हैं। अब इसमें लोगों के पास खुद को भी Nominate करने का मौका रहता है। यही वजह है कि इस बार 2014 की तुलना में 28 गुना ज्यादा Nominations प्राप्त हुए हैं। इससे पता चलता है कि पद्म सम्मान की प्रतिष्ठा, उसकी विश्वसनीयता, उसके प्रति सम्मान, हर वर्ष बढ़ता जा रहा है।

कहते हैं, हर जीवन का एक लक्ष्य होता है, हर कोई एक लक्ष्य को पूरा करने के लिए ही जन्म लेता है। इसके लिए लोग पूरी निष्ठा से अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं। हमने देखा है कि, कोई समाज सेवा के माध्यम से, कोई सेना में भर्ती होकर, कोई अगली पीढ़ी को पढ़ाकर, अपने कर्तव्यों का पालन करता है, लेकिन हमारे बीच ही कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो जीवन के अंत के बाद भी, समाज जीवन के प्रति अपने दायित्वों को निभाते हैं और इसके लिए उनका माध्यम होता है - अंगदान। हाल के वर्षों में देश में एक हजार से अधिक लोग ऐसे रहे हैं, जिन्होंने, अपनी मृत्यु के बाद अपने अंगों का दान कर दिया। ये निर्णय आसान नहीं होता, लेकिन ये निर्णय, कई जिंदगियों को बचाने वाला होता है। उन परिवारों की भी सराहना करूंगा, जिन्होंने, अपने करीबियों की आखिरी इच्छा का सम्मान किया। आज, देश में बहुत से संगठन भी इस दिशा में बहुत प्रेरक प्रयास कर रहे हैं। कुछ संगठन, लोगों को, अंगदान के लिए जागरूक कर रहे हैं, कुछ संस्थाएं अंगदान करने के इच्छुक लोगों का



Registration कराने में मदद कर रही हैं। ऐसे प्रयासों से देश में Organ donation के प्रति सकारात्मक माहौल बन रहा है और लोगों की जिन्दगियां भी बच रही हैं।

आपसे भारत की एक ऐसी उपलब्धि साझा कर रहा हूँ जिससे मरीजों का जीवन आसान बनेगा, उनकी परेशानी कुछ कम होगी। आप में से कई लोग होंगे, जिन्हें इलाज के लिए आयुर्वेद, सिद्ध या यूनानी की चिकित्सा पद्धति से मदद मिलती है। लेकिन इनके मरीजों को तब समस्या होती है, जब इसी पद्धति के किसी दूसरे डॉक्टर के पास जाते हैं। इन चिकित्सा पद्धतियों में बीमारी के नाम, इलाज और दवाइयों के लिए एक जैसी भाषा का इस्तेमाल नहीं होता है। हर चिकित्सक अपने तरीके से बीमारी का नाम और इलाज के तौर-तरीके लिखता है। इससे दूसरे चिकित्सक के लिए समझ पाना कई बार बहुत मुश्किल हो जाता है। दशकों से चली आ रही इस समस्या का भी अब समाधान खोज लिया गया है। आयुष मंत्रालय ने आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी चिकित्सा से जुड़े डेटा और शब्दावली का वर्गीकरण किया है, इसमें, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी मदद की है। दोनों के प्रयासों से आयुर्वेद, यूनानी और सिद्ध चिकित्सा में बीमारी और इलाज से जुड़ी शब्दावली की coding कर दी गयी है।

इस coding की मदद से अब सभी डॉक्टर prescription या अपनी पर्ची पर एक जैसी भाषा लिखेंगे। इसका एक फायदा ये होगा कि अगर आप वो पर्ची लेकर दूसरे डॉक्टर के पास जाएंगे तो डॉक्टर को इसकी पूरी जानकारी

उस पर्ची से ही मिल जाएगी। आपकी बीमारी, इलाज, कौन-कौन सी दवाएं चली हैं, कब से इलाज चल रहा है, आपको किन चीजों से allergy है, ये सब जानने में उस पर्ची से मदद मिलेगी। इसका एक और फायदा उन लोगों को होगा, जो research के काम से जुड़े हैं। दूसरे देशों के वैज्ञानिकों को भी बीमारी, दवाएं और उसके प्रभाव की पूरी जानकारी मिल जाएगी। Research बढ़ने और कई वैज्ञानिकों के साथ-साथ जुड़ने से ये चिकित्सा पद्धति और बेहतर परिणाम देंगे और लोगों का इनके प्रति झुकाव बढ़ेगा। इन आयुष पद्धतियों से जुड़े हमारे चिकित्सक, इस coding को जल्द से जल्द अपनाएंगे।

जब आयुष चिकित्सा पद्धति की बात कर रहा हूँ, तो मेरी आँखों के सामने यानुंग जामोह लैगो की भी तस्वीर आ रही हैं। सुश्री यानुंग अरुणाचल प्रदेश की रहने वाली हैं और हर्बल औषधीय विशेषज्ञ हैं। इन्होंने आदि जनजाति की पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली को पुनर्जीवित करने के लिए काफी काम किया है। इस योगदान के लिए उन्हें इस बार पद्म सम्मान भी दिया गया है। इसी तरह इस बार छत्तीसगढ़ के हेमचंद्र मांझी उनको भी पद्म सम्मान मिला है। वैद्यराज हेमचंद्र मांझी भी आयुष चिकित्सा पद्धति की मदद से लोगों का इलाज करते हैं। छत्तीसगढ़ के नारायणपुर में गरीब मरीजों की सेवा करते हुए उन्हें 5 दशक से ज्यादा का समय हो रहा है। हमारे देश में आयुर्वेद और हर्बल मेडिसीन का जो खजाना छिपा है, उसके संरक्षण में सुश्री यानुंग और हेमचंद्र जी जैसे लोगों की बड़ी भूमिका है।

‘मन की बात’ के जरिए हमारा और आपका जो रिश्ता बना है, वो एक दशक पुराना हो चुका है। सोशल मीडिया और इंटरनेट के इस दौर में भी रेडियो पूरे देश को जोड़ने का एक सशक्त माध्यम है। रेडियो की ताकत कितना बदलाव ला सकती है, इसकी एक अनूठी मिसाल छत्तीसगढ़ में देखने को मिल रही है। बीते करीब 7 वर्षों से यहाँ रेडियो पर एक लोकप्रिय कार्यक्रम का प्रसारण हो रहा है, जिसका नाम है ‘हमर हाथी- हमर गोठ’। नाम सुनकर आपको लग सकता है कि रेडियो और हाथी का भला क्या connection हो सकता है। लेकिन यही तो रेडियो की खूबी है। छत्तीसगढ़ में आकाशवाणी के चार केन्द्रों अंबिकापुर, रायपुर, बिलासपुर और रायगढ़ से हर शाम इस कार्यक्रम का प्रसारण होता है और आपको जानकर हैरानी होगी कि छत्तीसगढ़ के जंगल और उसके आसपास के इलाके में रहने वाले बड़े ध्यान से इस कार्यक्रम को सुनते हैं।

‘हमर हाथी - हमर गोठ’ कार्यक्रम में बताया जाता है कि हाथियों का झुण्ड जंगल के किस इलाके से गुजर रहा है। ये जानकारी यहाँ के लोगों के बहुत काम आती है। लोगों को जैसे ही रेडियो से हाथियों के झुण्ड के आने की जानकारी मिलती है, वो सावधान हो जाते हैं। जिन रास्तों से हाथी गुजरते हैं, उधर जाने का खतरा टल जाता है। इससे जहाँ एक ओर हाथियों के झुण्ड से नुकसान की संभावना कम हो रही है, वहीं हाथियों के बारे में data जुटाने में मदद मिलती है। इस data के उपयोग से भविष्य में हाथियों के संरक्षण में भी मदद मिलेगी। यहाँ हाथियों से जुड़ी जानकारी social





media के जरिए भी लोगों तक पहुंचाई जा रही है। इससे जंगल के आसपास रहने वाले लोगों को हाथियों के साथ तालमेल बिठाना आसान हो गया है। छत्तीसगढ़ की इस अनूठी पहल और इसके अनुभवों का लाभ देश के दूसरे वन क्षेत्रों में रहने वाले लोग भी उठा सकते हैं।

25 जनवरी को हम सभी ने National Voters Day मनाया है। ये हमारी गौरवशाली लोकतांत्रिक परम्पराओं के लिए एक अहम दिन है। आज देश में करीब-करीब 96 करोड़ मतदाता हैं। आप जानते हैं, ये आंकड़ा कितना बड़ा है? ये अमेरिका की कुल जनसंख्या से भी करीब तीन गुना है। ये पूरे यूरोप की कुल जनसंख्या से भी करीब डेढ़ गुना है। अगर मतदान केन्द्रों की बात करें, तो देश में आज उनकी संख्या करीब साढ़े दस लाख है। भारत का हर नागरिक, अपने लोकतांत्रिक अधिकार का इस्तेमाल कर पाए, इसके लिए हमारा चुनाव आयोग, ऐसे स्थानों पर भी पोलिंग बूथ बनवाता है जहाँ सिर्फ एक वोटर हो। मैं चुनाव आयोग की सराहना करना चाहूँगा, जिसने देश में लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने के लिए निरंतर प्रयास किए हैं।

आज देश के लिए उत्साह की बात ये भी है कि दुनिया के अनेक देशों में जहाँ voting percent कम हो रहा है, भारत में मतदान का प्रतिशत बढ़ता जा रहा है। 1951-52 में जब देश में पहली बार चुनाव हुए थे, तो लगभग 45 प्रतिशत वोटर्स ने ही वोट डाले थे। आज ये आंकड़ा काफी बढ़ चुका है। देश में ना

सिर्फ वोटर्स की संख्या में वृद्धि हुई है, बल्कि Turnout भी बढ़ा है। हमारे युवा वोटर्स को registration के लिए ज्यादा मौके मिल सकें, इसके लिए सरकार ने कानून में भी परिवर्तन किया है।

मुझे ये देखकर भी अच्छा लगता है कि वोटर्स के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए सामुदायिक स्तर पर भी कई प्रयास हो रहे हैं। कहीं लोग घर-घर जाकर वोटर्स को मतदान के बारे में बता रहे हैं, कहीं पेंटिंग बनाकर, कहीं नुक्कड़ नाटकों के जरिए युवाओं को आकर्षित किया जा रहा है। ऐसे हर प्रयास, हमारे लोकतंत्र के उत्सव में, अलग-अलग रंग भर रहे हैं। मैं 'मन की बात' के माध्यम से अपने First Time Voters को कहूँगा कि वो वोटर लिस्ट में अपना नाम जरूर जुड़वाएं। National voter service portal और voter Helpline app के जरिए वो इसे आसानी से online पूरा कर सकते हैं। आप ये हमेशा याद रखें कि आपका एक वोट, देश का भाग्य बदल सकता है, देश का भाग्य बना सकता है।

28 जनवरी को भारत की दो ऐसी महान विभूतियों की जन्म-जयंती भी होती हैं, जिन्होंने अलग-अलग कालखंड में देशभक्ति की मिसाल कायम की है। आज देश, पंजाब केसरी लाला लाजपत राय जी को श्रद्धांजलि दे रहा है। लाला जी, स्वतंत्रता संग्राम के एक ऐसे सेनानी रहे, जिन्होंने विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। लाला जी के व्यक्तित्व को सिर्फ आजादी की लड़ाई

तक सीमित नहीं किया जा सकता। वो बहुत दूरदर्शी थे। उन्होंने Punjab National Bank और कई अन्य संस्थाओं के निर्माण में अहम भूमिका निभाई थी।

उनका उद्देश्य सिर्फ विदेशियों को देश से बाहर निकालना ही नहीं, बल्कि देश को आर्थिक मजबूती देने का Vision भी उनके चिंतन का अहम हिस्सा था। उनके विचारों और उनके बलिदान ने भगत सिंह को बहुत प्रभावित किया था। आज फील्ड मार्शल के.एम. करियप्पा जी को भी श्रद्धापूर्वक नमन करने का दिन है। उन्होंने इतिहास के महत्वपूर्ण दौर में हमारी सेना का नेतृत्व कर साहस और शौर्य की मिसाल कायम की थी। हमारी सेना को शक्तिशाली बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

आज खेलों की दुनिया में भी भारत नित-नई ऊँचाइयों को छू रहा है। sports की दुनिया में आगे बढ़ने के लिए जरूरी है कि खिलाड़ियों को ज्यादा-से-ज्यादा खेलने का मौका मिले और देश में भली-भांति के स्पोर्ट्स tournament भी आयोजित हों। इसी सोच के साथ आज भारत में नए-नए sports tournament आयोजित किये जा रहे हैं।

कुछ दिन पहले ही चेन्नई में खेलो इंडिया यूथ गेम्स का उद्घाटन किया। इसमें देश के 5 हजार से ज्यादा athletes हिस्सा ले रहे हैं। आज भारत में लगातार ऐसे नए Platforms तैयार हो रहे हैं, जिनमें खिलाड़ियों को अपना सामर्थ्य दिखाने का मौका मिल रहा है। ऐसा ही एक platform बना है -Beach Games का, जो दीव के अन्दर उसका आयोजन हुआ था।

आप जानते ही हो 'दीव' केन्द्र शासित प्रदेश है, सोमनाथ के बिलकुल पास है। इस साल की शुरुआत में ही दीव में इन Beach Games का आयोजन किया गया। ये भारत का पहला multi-sports beach games था। इनमें Tug of war, Sea swimming, pencaksilat, मलखंब, Beach volleyball, Beach कबड्डी, Beach soccer और Beach Boxing जैसे competition हुए। इनमें हर प्रतियोगी को अपनी प्रतिभा दिखाने का भरपूर मौका मिला और आपको जानकर हैरानी होगी, कि इस Tournament में ऐसे राज्यों से भी बहुत से खिलाड़ी आए, जिनका दूर दूर तक समंदर से कोई नाता नहीं है। इस टूर्नामेंट में सबसे ज्यादा Medal भी मध्य प्रदेश ने जीते, जहाँ कोई Sea Beach नहीं है। खेलों के प्रति यही Temperament किसी भी देश को sports की दुनिया का सरताज बनाता है। ■

# सप्तसिन्धु से हिन्दू

पूज्य मा. स. गोलवलकर

**अ** नादि काल से एक महान एवं सुसंस्कृत समाज, जिसे 'हिंदू' कहते हैं, यहाँ उसी भूमि के पुत्र के रूप में निवास कर रहा है। किन्तु कुछ लोग हैं, जो हिन्दू नाम पर आपत्ति करते हैं और कहते हैं कि तुलनात्मक दृष्टि से इसका मूल तो सांप्रदायिक है तथा यह नाम हमें विदेशियों द्वारा दिया गया है। वे हिन्दू के स्थान पर आर्य अथवा भारतीय नाम का सुझाव देते हैं। निस्संदेह आर्य एक स्वाभिमानपूर्ण प्राचीन नाम है, किन्तु इसका प्रयोग विशेषतया गत सहस्र वर्ष से अप्रचलित हो गया है। गत शताब्दी में ऐतिहासिक शोध के नाम पर अंग्रेजों द्वारा किए हुए अपप्रचार ने हमारे मस्तिष्क में धूर्ततापूर्वक बनाए गए आर्य द्रविड़ विवाद के विषैली जड़ें गहराई तक पैठा दी हैं। अतः आर्य नाम का प्रयोग हमारे उद्देश्य की सिद्धि में स्वतः निष्फलता का कारण बनेगा, क्योंकि हमारा उद्देश्य तो अपने उस संपूर्ण समाज का साक्षात् करना है, जो अतीत और वर्तमान की समस्त संज्ञाओं से निरपेक्ष हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला हुआ है।

भारतीय भी प्राचीन नाम है, जो अति प्राचीनकाल से हमसे संबंधित है। भारत नाम वेदों तक में मिलता है। हमारे पुराणों ने भी हमारी मातृभूमि को भारत कहा है और यहाँ के निवासियों को भारती। वास्तव में भारती संबोधन हिन्दू का पर्यायवाची है, किन्तु आज भारतीय शब्द के संबंध में भी भ्रांत धारणा उत्पन्न हो गई है। सामान्यतया यह इंडियन शब्द के अनुवाद के रूप में प्रयुक्त होने लगा है, जिसमें इस देश में रहने वाली मुसलमान, ईसाई तथा पारसी आदि सभी जातियों का समावेश होता है। इस प्रकार भारतीय शब्दप्रयोग, जब हम इस विशिष्ट समाज को लक्ष्य कर करना चाहते हैं, हमें भ्रमित कर सकता है। केवल हिन्दू शब्द ही इस भाव के पूर्ण एवं शुद्ध रीति से व्यक्त करता है, जिसे हम व्यक्त करना चाहते हैं। यह कल्पना भी ऐतिहासिक दृष्टि से ठीक नहीं है कि हिन्दू नाम नूतन है अथवा विदेशियों द्वारा हमें दिया गया है। विश्व के प्राचीनतम अभिलेख 'ऋग्वेद' में हमें 'सप्त सिंधु' नाम मिलता है जो हमारे देश एवं हमारे जन के लिए उपाधि के रूप में प्रयुक्त हुआ है। यह भी भली प्रकार से ज्ञात है कि संस्कृत का 'स' वर्ण कभी कभी हमारी कुछ प्राकृत भाषाओं में तथा कुछ यूरोपीय भाषाओं में 'ह' में परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार प्रथम 'हप्त हिन्दू' तत्पश्चात्

हिन्दू नाम प्रचलित हो गया। इसलिए हिन्दू हमारा अपना गौरवशाली नाम है, जिसके द्वारा बाद में अन्य लोग भी हमें पुकारने लगे।

## हिन्दू और हिन्दुस्थान

बृहस्पति आगम के अनुसार 'हिन्दू' शब्द का 'हि' 'हिमालय' से तथा 'न्दु', 'इन्दु' 'इन्दु सरोवर' (दक्षिणी सागर) से लिया गया है। इस प्रकार यह (शब्द) हमारी मातृभूमि के संपूर्ण विस्तार को संप्रेषित करता है।

**बृहस्पति आगम का कथन है**

**हिमालयं समारय यावदिन्दु सरोवरम्।**

**तं देव निर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्ष्यते॥**

(देवताओं द्वारा निर्मित वह देश जो हिमालय से प्रारंभ होकर इंदु सरोवर (अर्थात् दक्षिणी सागर) तक फैला हुआ है, हिंदुस्थान कहलाता है।)

## 'हिन्दू' शब्द का इतिहास

'हिंदू' शब्द हमारे इतिहास के गत एक सहस्र वर्षों के संकटपूर्ण काल से जुड़ा रहा है। पृथ्वीराज के दिनों से लेकर हमारे समस्त राष्ट्र निर्माताओं, राज्यवेत्ताओं, कवियों और इतिहासकारों ने 'हिंदू' शब्द का प्रयोग हमारे जनसमाज और धर्म को अभिहित करने के लिए किया है। गुरु गोविंदसिंह, विद्यारण्य और शिवाजी जैसे समस्त पराक्रमी स्वतंत्रता सेनानियों का स्वप्न 'हिंदूस्वराज्य' की स्थापना करना ही था। 'हिंदू' शब्द अपने साथ उन समस्त महान् जीवनो, उनके कार्यों और आकांक्षाओं की मधुर गंध समेटे हुए है। इस प्रकार यह एक ऐसा शब्द बन जाता है, जो संघरूप से हमारी एकात्मता, औदात्य और विशेष रूप से हमारे जनसमाज को व्यंजित करता है।

## विकास के लक्षण

अब हम अपने हिंदू जीवन पर एक दृष्टिपात करें। जब लोग, विशेष रूप से बाहरी लोग, हमारे विश्वासों, संप्रदायों, जातियों, भाषाओं, रीतिरिवाजों एवं स्वभावगत विविधताओं के बाहुल्य को देखते हैं तो वे भ्रम में पड़ जाते हैं और कह उठते हैं कि 'इन सब भाँति भाँति के तत्वों तथा असंगत स्वरों से युक्त समूह को किस प्रकार एक समाज कहा जा सकता है? कहाँ है एक जीवन पद्धति जिसे तुम 'हिंदू' कहते हो।'



**एकम् सत् विप्राः बहुधा वदन्ति**

हमारे लचीले धर्म के स्वरूप की जो प्रथम नैसर्गिक विशेषता बाहरी व्यक्ति की दृष्टि में आती है, वह है पंथ एवं उपपंथों की आश्चर्यजनक विविधता। यथा शैव, वैष्णव, शाक्त, वैदिक, बौद्ध, जैन, सिख, लिंगायत, आर्यसमाज आदि। इन सभी उपासनाओं के महान आचार्यों एवं प्रवर्तकों ने उपासना के विचित्र रूपों की स्थापना हमारे लोक मस्तिष्क की विविध योग्यताओं की अनुकूलता का ध्यान रखकर ही की है। किन्तु अंतिम निष्कर्ष के रूप में सभी ने इस एक चरम सत्य को लक्ष्य के रूप में प्राप्त करने के लिए कहा है, जिसे ब्रह्म, आत्मा, शिव, विष्णु, ईश्वर अथवा शून्य या महाशून्य तक के विविध नामों से पुकारा जाता है। देखिए, यह श्लोक किस सुंदरता से हिंदूदर्शन के विविध पंथों में स्वरैक्य एवं एकत्व का समावेश करता है।

**यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो  
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।  
अर्हन्वित्यथ जैनशासनरताः कर्मति मीमांसकाः  
सोऽयं वो विदधातु वांछतफलं त्रैलोक्यनाथो हरिः।  
(रामभक्त हनुमान, हनुमन्नाटकम् अंक 1:3)**

(वह, जिसकी उपासना शैव 'शिव' मानकर करते हैं; वेदांती, जिसे 'ब्रह्म' मानकर उपासते हैं, बौद्ध, जिसे 'बुद्ध' और तर्कपटु नैयायिक 'कृष्ण' मानकर आराधना करते हैं एवं जैन लोग, जिसे 'अर्हत्' मानकर तथा मीमांसक, जिसे कर्म बताकर उपासना करते हैं, वहीं 'त्रिलोकीनाथ हरि' हमारी इच्छाओं को पूरा करें।) ■

(विचार नवनीत से)

# ऋग्वेद से निकला है हिन्दू शब्द



वीर सावरकर

हिन्दू, हिन्दुस्थान, हिन्द इन प्राकृत शब्दों का मूल उद्गम ऋग्वेदकालीन सप्तसिन्धु नामक हमारे अपने प्राचीनतम राष्ट्रीय अभिधा में ही है।

आसिन्धुसिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका।  
पितृभूः पुण्यभूश्चैव स वै, 'हिन्दू' रिति स्मृतः॥

'हिन्दू' शब्द हिन्दू संगठन का प्रमुख धार है, अतएव दृढ़ या ढीला, चिरन्तन या चंचल होगा उसी प्रमाण में उस आधार पर निर्मित हिन्दू संगठन की यह प्रचंड बनावट भी व्यापक, भारी भरकम तथा स्थायी होने वाली है। हिन्दू महासभा क्या तथा उसने उठाया हुआ हिन्दू संगठन का महान कार्य क्या, जब तक वह 'हिन्दू किसे कहा जाय?' इस प्रश्न का निश्चित उत्तर नहीं देता तब तक उसका एक पग भी दिशाभ्रम के बिना आगे बढ़ना असंभव होगा, अनर्थकारी होगा।

## 'हिन्दू' शब्द की प्राचीनता

1. हिन्दू शब्द की उत्पत्ति न तो मुसलमानों द्वारा हुई है न ही मुसलमानों ने प्राथमिक रूप से यह शब्द हमारे राष्ट्र के लिये सम्बोधित ही किया है जिस काल में हिन्दू शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में पर्याप्त गवेषणा ही नहीं हुई थी उस काल की यह दुष्ट दन्तकथा भर है? हिन्दू शब्द की ऐतिहासिक उत्पत्ति के निम्नलिखित स्पष्टीकरण से यह सिद्ध हो जाएगा।
2. हिन्दू, हिन्दुस्थान, हिन्द इन प्राकृत शब्दों का मूल उद्गम ऋग्वेदकालीन सप्तसिन्धु नामक हमारे अपने प्राचीनतम राष्ट्रीय अभिधा में ही है। हमारे वेदकालीन पूर्वजों ने ऋग्वेद में 'सप्तसिन्धुः'



इस शब्द को देशवाचक एवं राष्ट्रवाचक अर्थों में ही, स्वतः की राष्ट्रीय अभिधा के रूप में, स्वतः के हेतु ही प्रयुक्त किया है।

उस प्राचीन काल में हमारे निकटस्थ ईरान, बाबिलोन, प्राचीन अरब आदि राष्ट्र हमें हमारे 'सप्तसिन्धु' इसी राष्ट्रीय अभिधा से जानते थे। 'पारसियों ने' ढाई हजार वर्ष पूर्व के उनके धर्मग्रंथों में हमारे राष्ट्र को 'सप्तहिन्दू' से ही सम्बोधित किया है। तत्कालीन प्राचीन 'बेबेलियन' ग्रंथों में हमारे देश से निर्यातित झीने तथा सुन्दर वस्त्रों को 'सिन्धु' या 'सिन्धुव' कहा हुआ है।

अलेक्जेंडर के दो सौ वर्ष पूर्व का ग्रीक इतिहासकार हेकाटेआस भी हमारे प्राचीन राष्ट्र को हमारे ही सिन्धु शब्द के ग्रीक रूप Indu India इसी नाम का उल्लेख करता है। बुद्धकाल में हिन्दुस्थान में आये हुए, 'चीनी' यात्री हुएप्संग ने भी हमारे राष्ट्र को सिन्धु शब्द का चीनी अपभ्रंश 'शिन्दु' इसी अभिधा से सम्बोधित किया था और तो और, मोहम्मद पैगंबर के जन्म के पूर्व जब अरबी लोग शैव एवं शाक्त पन्थ सदृश धर्म के अनुयायी थे और जब मुसलमानी धर्म का पता ठिकाना भी अरबों को ज्ञात नहीं था तब दो हजार वर्ष पूर्व के एक अरब ग्रंथ में हमारे राष्ट्र के संबंध में वर्णन करते हुए हिन्द एवं हिन्दू इन नामों का गौरव से उच्चारण किया गया है।

3. हिन्दू, हिन्दुस्थान आदि प्राकृत रूप हमारे सप्तसिन्धु, सिन्धु, सिन्धुस्थान इन संस्कृत एवं स्वकीय तथा प्राचीन अभिधाओं के ही प्राकृत रूप हैं, यह बात हमारे प्राचीन पंडितवर्ग को भी ज्ञात थी। उन नामों को वर्तमान में बादरायण सम्बन्ध से जोड़ा नहीं गया है। इसे स्पष्ट करने वाले भविष्यपुराण के निम्नलिखित उल्लेख जितने अभिनन्दनीय हैं उतने ही उद्बोधक भी

हैं। 'सप्तसिन्धु' का ही प्राकृत रूप 'हप्तहिन्दु' है यह बात उक्त पुराण के निम्नलिखित श्लोकों में वर्णित है

जानुस्थाने जैनुशदः सप्तसिन्धुस्तथैव च॥ हप्तहिन्दुर्वावनीति पुनज्ञेया गुरूण्डिका॥१॥

इस प्रकार उधर उस सिन्धुसरिता का एवं इधर इस सिन्धुसागर का उल्लंघन न करें। उनका उल्लंघन करते ही विदेश गमन का निषिद्ध कृत्य हो जाता है। सिन्धु बन्धन की हजार वर्ष पुरानी यह शास्त्राज्ञा भी दर्शाती है कि, उस प्राचीन काल से ही हमारे इस हिन्दुस्थान की मर्यादा 'आसिन्धु सिन्धुपर्यन्ता' यही मानी जाती थी।

4. सप्तसिन्धु, सिन्धुदेश, सिन्धुस्थान आदि शब्दों का 'हिन्दु' यह प्राकृत रूप भी हमारे ही प्रकृतीकरण के नियम के अनुरूप हमारे प्राकृत में रूढ़ हो गया संस्कृत शब्दों के 'स' का हमारे प्राकृत में 'ह' विकल्प होता है। मारवाड़ी आदि बोलियों में इसके उदाहरण प्रचुरता से दिखाई देते हैं। जैसे केसरी का केहरी, सप्ताह का हप्ता, सार का हार, दश का दहा आदि, अस्मि, असि, स्मः आदि के प्राकृत रूप इसी के उदाहरण हैं। हमारी प्राकृत के समान ही प्राचीन पारसी भाषा भी संस्कृत की ही एक प्राकृत भाषा होने के कारण उसके कई रूप हमारे समान ही बने हुए दिखाई देते हैं। परन्तु केवल इसी आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि वे रूप इधर से आये हैं या इसी आधार पर उन्हें विदेशी भी नहीं माना जा सकता। चन्द्र भाट पूर्व की हिन्दी की जो पुरानी से पुरानी कविता आज मानी जाती है उसमें भी हिन्दुस्थान शब्द का गौरवयुक्त प्रयोग किया गया है।

(हिन्दुत्व के पंच प्राण से)

# वासुदेव बलवंत फडके

## जिनके नाम से अंग्रेज काँपते थे

**ब्रि**टिश शासन की प्रताड़ना, अत्याचार तथा भारत माता को स्वतंत्र कराने की स्वराज की स्थापना की जोत देश में सुलग रही थी। स्वतंत्रता प्राप्त करने के महायज्ञ में असंख्य देशभक्तों ने प्राणों को हंसते-हंसते न्योछावर कर दिया। कई समाज, कई संस्कृति अपनी जमीन को छोड़ कर के दर-दर भटकने को मजबूर हो गई तथा अपने-अपने प्रकार से देश को स्वतंत्रता दिलाने की जिद ठान ली। कई वीर ऐसे भी हैं, जिनका योगदान अद्वितीय है, पर वह इतिहासकारों की पुस्तकों में या स्वतंत्रता के आंदोलन की चर्चाओं में कम ही याद किए जाते हैं।

वीर सावरकर ने लिखा है “जिन लोगों में कुछ और करने का साहस अथवा सामर्थ्य नहीं था, पर अपने इष्ट देवता की पूजा करते समय इतनी प्रार्थना भर की हो कि मेरी मातृभूमि स्वतंत्र कर दो” उनका भी स्वतंत्रता प्राप्ति में स्थान है।

ए सर्वे ऑफ इंडियन हिस्ट्री में सरदार पणिकर ने लिखा है “सब का एक ही और समान उद्देश्य था- ब्रिटिशों को देश से बाहर निकाल कर राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करना। इस दृष्टि से उसे विद्रोह नहीं कह सकेंगे। वह एक महान राष्ट्रीय उत्थान था।” ऐसे ही एक महान वीर, महान क्रांतिकारी भारत माता के सपूत वासुदेव बलवंत फडके थे जिन्होंने कहा “हे हिंदुस्तान वासियों- मैं भी दधीचि के समान मृत्यु को स्वीकार क्यों ना करूँ? अपने आत्मसमर्पण से आपको गुलामी व दुख से मुक्त करने का प्रयास क्यों ना करूँ? आप सब को अंतिम प्रणाम करता हूँ।” नवंबर 1879 में प्रकाशित अमृत बाजार पत्रिका ने लिखा था- वासुदेव बलवंत फडके में वह सब महान विभूतियां थीं जो संसार में महत्वपूर्ण कार्य सिद्धि के लिए भेजी जाती हैं। वे देवदूत थे। उनके व्यक्तित्व की ऊंचाई सामान्य मानव के मुकाबले सतपुड़ा व हिमालय से तुलना जैसी अनुभव होगी।

4 नवंबर 1845 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के शिरदोणे गांव में जन्मे वासुदेव बलवंत फडके भारत के स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी थे, जिन्हें आदि क्रांतिकारी कहा जाता है। उन्होंने गुलामी से मुक्ति के लिए, स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सशस्त्र मार्ग का चयन किया था। अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए लोगों में क्रांति का संचार किया। महाराष्ट्र की कोली, भील तथा धांगड़ जातियों

को अपने साथ लेकर “रामोशी” नाम से संगठन बनाया जिसका उद्देश्य क्रांति था। स्वतंत्रता संग्राम के लिए आवश्यक धन की व्यवस्था के लिए अंग्रेज साहूकारों को लूटने से कोई परहेज नहीं की। क्रांति के माध्यम से सफलता तो इस तरह हासिल की कि अंग्रेजों से पुणे नगर को कुछ समय के लिए अपने नियंत्रण में भी लिया था। भारतीय जनमानस में संघर्ष की चिंगारी फैलाने में सफलता हासिल करी।

श्री फडके की प्रारंभिक शिक्षा कल्याण और पुणे में हुई। प्रारंभ से ही श्री फडके तेजस्वी और बहादुर थे। श्री फडके जी के पिताजी चाहते थे कि वासुदेव व्यापारी की दुकान पर नौकरी करें। लेकिन श्री फडके के दिल में तो कुछ और ही था। पिता से असहमत होकर वे मुंबई आ गए, फिर उन्होंने 15 वर्ष तक पुणे के मिलिट्री एकाउंट्स डिपार्टमेंट में नौकरी की, यहां उनका संपर्क अन्य स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों से हुआ। श्री महादेव गोविंद रानाडे जी का उन पर खास प्रभाव पड़ा। जंगलों को हथियार चलाने का अभ्यास स्थल बनाया, ज्योतिबा फुले और लोकमान्य तिलक उनके साथी थे। 1871 में एक शाम को एक तार से संदेश मिला जिसमें लिखा था ‘वासु तुम शीघ्र ही घर आ जाओ, नहीं तो मां के दर्शन भी शायद ना हो सकेंगे’। तार के समाचार से परेशान व विचलित होकर वासुदेव अंग्रेज अधिकारी के पास अवकाश मांगने गए पर अंग्रेज अधिकारी ने उन्हें अपमानित कर अवकाश की स्वीकृति नहीं दी। प्रार्थना पत्र अस्वीकार होने के बावजूद भी श्री फडके जी अपने गांव चले आए, पर तब तक देर हो चुकी थी, मां स्वर्ग सिंधार चुकी थी। इस घटना ने वासुदेव बलवंत फडके जी के मन को भीतर तक झकझोर के रख दिया, उन्होंने अंग्रेजों की नौकरी से अपना नाता तोड़ दिया। स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के साथ मिलकर अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ विद्रोह की तैयारी शुरू कर दी और सहयोग ना मिलने पर शिवाजी को अपना पथ प्रदर्शक मानकर आदिवासियों के साथ सेना का गठन करना प्रारंभ किया। 1879 में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध विद्रोह की घोषणा कर दी, महाराष्ट्र के कई जिलों में फडके जी की सेना का प्रभाव फैल गया। क्रांतिकारी गतिविधियों से अंग्रेज भयभीत हुए। श्री फडके के नाम से अंग्रेज थर-थर कांपते थे। 13 मई 1879 को अंग्रेज एक विश्रामगृह में इकट्ठे हुए तथा श्री फडके के डर के कारण



बैठक कर रहे थे, इसी समय अर्धरात्रि में श्री फडके जी भी वहां आ गए, उन्होंने अंग्रेज अफसरों को खूब मारा फिर भवन में आग लगा दी। इस घटना से अंग्रेज सरकार डर गई और उसने श्री फडके को जिंदा या मुर्दा पकड़ने पर 50000 रुपये के इनाम की घोषणा करी। श्री फडके जी ने भी अंग्रेज सरकार को जवाब देने में देरी नहीं करी और अगले ही दिन स्वयं के हस्ताक्षर के साथ मुंबई में एक इशतेहार लगा दिया कि जो कोई भी अंग्रेज अफसर ‘रिचर्ड’ का सिर लाएगा उसे 75000 रुपये का इनाम दिया जाएगा। इससे अंग्रेज तिलमिला उठे। अंग्रेज सेना बार-बार प्रयास करती पर श्री फडके की सेना से प्रत्युत्तर पीछे हटने को मजबूर कर देता था। 20 जुलाई 1879 को बीमार श्री फडके मंदिर में विश्राम कर रहे थे, इसकी खबर ब्रिटिश अफसर को मिल गई उसने श्री फडके को गिरफ्तार कर उनके खिलाफ राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चलाया और फांसी की सजा सुनाई।

उस वक्त के प्रसिद्ध व योग्य वकील श्री महादेव आपटे ने उनकी पैरवी करी और फांसी की सजा को काला पानी की सजा में बदलवाने में सफलता हासिल करी। कालापानी की सजा के लिए श्री फडके को अंडमान जेल भेज दिया गया। 17 फरवरी 1883 कालापानी की सजा काटते हुए भारत माता का वीर सपूत शहीद हो गया। भारत सरकार ने श्री फडके जी के सम्मान में डाक टिकट जारी किया। दक्षिण मुंबई में श्री फडके जी की स्थापित मूर्ति इस अमर शहीद की प्रेरणा को आज भी दिल और दिमाग में ताजा कर देती है। महान क्रांतिकारी सपूत को कोटि-कोटि नमस्, ऐसे वीर सपूत चर्चा में भले ही कम आते हों पर उनका स्वतंत्रता संग्राम में योगदान अद्वितीय, अविस्मरणीय है तथा इनका नाम सदैव सम्मान के साथ लिया जाता रहेगा। इतिहास में ऐसी प्रेरणादायक विभूतियां भारतीयों का सम्मान गर्व से ऊंचा करती हैं। ■

# राष्ट्र जीवन की समस्याएँ



**अर्थवादी यदि एकदम उद्योगों का राष्ट्रीयकरण अथवा बिना मुआवजा दिए जमींदारी उन्मूलन चाहता है तो राजनीतिवादी अपने राजनीतिक कारणों से ऐसा करने में असमर्थ है। उसके लिए इस प्रकार संस्कृति एवं मजहब का भी मूल्य अपनी राजनीति के लिए ही है, अन्यथा नहीं।**



पं. दीनदयाल उपाध्याय

**भा**रत में एक ही संस्कृति है, एक से अधिक संस्कृतियों का नारा देश के टुकड़े-टुकड़े करके हमारे जीवन का विनाश कर देगा। अतः आज लीग का द्विसंस्कृतिवाद, कांग्रेस का प्रच्छन्न द्विसंस्कृतिवाद तथा साम्यवादियों का बहुसंस्कृतिवाद नहीं चल सकता। आज तक एक संस्कृतिवाद को संप्रदायवाद कहकर ठुकराया गया किंतु अब कांग्रेस के विद्वान भी

अपनी गलती समझकर इस एक संस्कृतिवाद को अपना रहे हैं। इसी भावना और विचार से भारत की एकता तथा अखंडता बनी रह सकती है तथा तभी हम अपनी संपूर्ण समस्याओं को सुलझा सकते हैं। मनुष्य की अनेक जन्मजात प्रवृत्तियों के समान वह देशभक्ति की भावना को भी स्वभाव से ही प्राप्त करता है। परिस्थितियाँ एवं वातावरण के दबाव से किसी व्यक्ति में यह प्रवृत्ति सुप्त होकर विलीन प्राय हो जाती है। इस प्रकार विकसित देशप्रेम के व्यक्ति अपने कार्यकलापों की प्रेरणा अस्पष्ट एवं क्षीण भावना से न पाकर अपने स्वप्नों के अनुसार अपने देश का निर्माण करने की प्रबल ध्येय वादिता से पाते हैं। भारत में भी प्रत्येक देशभक्त के सम्मुख इस

प्रकार का एक ध्येयपथ है तथा वह समझता है कि अपने पथ पर चलाकर ही वह देश को उन्नत बना सकेगा। आज यह ध्येय पथ यदि एक ही होता तथा सब देशभक्तों के आदर्श भारत का स्वरूप भी एक ही होता तब तो किसी भी प्रकार के विवाद का संघर्ष का प्रश्न नहीं था। किंतु वस्तुस्थिति यह है कि आज भिन्न-भिन्न मार्गों से लोग देश को आगे ले जाना चाहते हैं तथा प्रत्येक का विश्वास है कि उसी का मार्ग सही मार्ग है। अतः हमको इन मार्गों का विश्लेषण करना होगा और उसी समय हम प्रत्येक की वास्तविकता को भी समझ सकेंगे।

## चार प्रमुख मार्ग

इन मार्गों को देखते हुए हमें चार प्रधान वर्ग दिखाई देते हैं अर्थवादी, राजनीतिवादी, मतवादी तथा संस्कृतिवादी।

## अर्थवादी

पहला वर्ग, अर्थवादी संपत्ति को ही सर्वस्व समझता है तथा उसके स्वामित्व एवं वितरण में ही सब प्रकार की दुरवस्था की जड़ मानकर उसमें सुधार करना ही अपना एकमेव कर्तव्य समझता है। उसका एकमेव लक्ष्य अर्थ है। साम्यवादी एवं समाजवादी इस वर्ग के लोग हैं। इनके अनुसार भारत की राजनीति का निर्धारण अर्थनीति के आधार पर होना चाहिए तथा संस्कृति एवं मत को वे गौण समझकर अधिक महत्व देने को तैयार नहीं हैं।

## राजनीतिवादी

दूसरा वर्ग है। यह जीवन का संपूर्ण महत्व राजनीतिक प्रमुख प्राप्त करने में ही समझता है तथा राजनीतिक दृष्टि से ही संस्कृति, मजहब तथा अर्थनीति की व्याख्या करता है। अर्थवादी यदि एकदम उद्योगों का राष्ट्रीयकरण अथवा बिना मुआवजा दिए जमींदारी उन्मूलन चाहता है तो राजनीतिवादी अपने राजनीतिक कारणों से ऐसा करने में असमर्थ है। उसके लिए इस प्रकार संस्कृति एवं मजहब का भी मूल्य अपनी राजनीति के लिए ही है, अन्यथा नहीं। इस वर्ग के अधिकांश लोग कांग्रेस में हैं जो आज भारत की राजनीतिक बागडोर सँभाले हुए हैं।

## मतवादी

तीसरा वर्ग, मजहब परस्त या मतवादी है। इसे धर्मनिष्ठ कहना ठीक नहीं होगा, क्योंकि धर्म मजहब या मत से बड़ा तथा विशाल है। यह वर्ग अपने-अपने मजहब के सिद्धांतों के अनुसार ही देश की राजनीति अथवा अर्थनीति को चलाना चाहता है। इस प्रकार का वर्ग मुल्ला मौलवियों



अथवा रूढ़िवादी कट्टरपंथियों के रूप में अब भी थोड़ा बहुत विद्यमान है, यद्यपि आजकल उसका बहुत प्रभाव नहीं रह गया है।

## संस्कृतिवादी

चौथा वर्ग है। इसका विश्वास है कि भारत की आत्मा का स्वरूप प्रमुखतया संस्कृति ही है। अतः अपनी संस्कृति की रक्षा एवं विकास ही हमारा कर्तव्य होना चाहिए। यदि हमारा सांस्कृतिक हास हो गया तथा हमने पश्चिम के अर्थ प्रधान अथवा भोग प्रधान जीवन को अपना लिया तो हम निश्चित ही समाप्त हो जाएँगे। यह वर्ग भारत में बहुत बड़ा है। इसके लोग राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में तथा कुछ अंशों में कांग्रेस में भी हैं। कांग्रेस के ऐसे लोग राजनीति को केवल संस्कृति का पोषक मात्र ही मानते हैं, संस्कृति का निर्णायक नहीं। हिंदीवादी सब लोग इसी वर्ग के हैं।

## मार्गों की प्राचीनता

उपर्युक्त चार वर्गों की विवेचना में यद्यपि हमने आधुनिक शब्दों का प्रयोग किया है। किंतु प्राचीन काल में भी ये चार प्रवृत्तियाँ उपस्थित थीं तथा इनमें से एक प्रवृत्ति को ही अपनाकर हमने अपने जीवन के आदर्श का मानदंड बनाया है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ही ये चार प्रवृत्तियाँ हैं। धर्म संस्कृति का, अर्थ नैतिक वैभव का, काम राजनीतिक आकांक्षाओं का तथा मोक्ष पारलौकिक उन्नति का द्योतक था। इनमें से हमने धर्म को ही अपने जीवन का अंग बनाया है क्योंकि उसके द्वारा ही हमने शेष सबको सधते हुए देखा है। इसीलिए जब महाभारत काल में धर्म की अवहेलना होनी प्रारंभ हुई, तब महर्षि व्यास ने कहा

**ऊर्ध्वबाहुर्विरोधेष न च कश्चिच्छणोति मे।**

**अर्थ और काम की ही नहीं, मोक्ष की भी प्राप्ति धर्म से होती है, इसलिए धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि यतोऽयुदयनिः श्रेयस सिद्धिः सधर्मः। जिससे ऐहिक संतान एक है और उसको इस एकता का अनुभव करते हुए रहना चाहिए।**

अनेक अंगों को इकट्ठा करके शरीर की सृष्टि नहीं होती किंतु शरीर के अनेक अंग होते हैं और इसलिए प्रत्येक अवयव अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए नहीं अपितु शरीर के अस्तित्व के लिए प्रयत्न करता है।

**धर्मादर्शश्च कामश्च स धर्मः किं न सेव्यते।** अर्थ और काम की ही नहीं, मोक्ष की भी प्राप्ति धर्म से होती है, इसलिए धर्म की व्याख्या करते हुए कहा है कि यतोऽयुदयनिः श्रेयस सिद्धिः स धर्मः। जिससे ऐहिक संतान एक है और उसको इस एकता का अनुभव करते हुए रहना चाहिए। अनेक अंगों को इकट्ठा करके शरीर की सृष्टि नहीं होती किंतु शरीर के अनेक अंग होते हैं और इसलिए प्रत्येक अवयव अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए नहीं अपितु शरीर के अस्तित्व के लिए प्रयत्न करता है। इसी प्रकार राष्ट्र के सभी अंगों को अपनी रूपरेखा राष्ट्रीय स्वरूप और हितों के अनुकूल बनानी चाहिए न कि राष्ट्र को ही इन अंगों के अनुसार काटा छाँटा जाए। संप्रदायों, प्रांतों, भाषाओं और वर्गों का तभी तक मूल्य है जब तक वे राष्ट्र हितों के अनुकूल हैं अन्यथा उनका बलिदान करके भी राष्ट्र की एकता की रक्षा करनी होगी। प्रथम दृष्टिकोण में अनेक को सत्य मानकर एक की कल्पना का प्रयत्न है तो दूसरे में एक को सत्य मानकर अनेक उसके रूपमात्र हैं जैसे नदी के जल में आवर्त-विवतरंग आदि

अनेक रूप होते हैं किंतु उनका अस्तित्व नदी के जल से भिन्न और स्वतंत्र नहीं और न उनके समुच्चय का ही नाम नदी है। दुःख का विषय है कि आज भी देश की बागडोर जिनके हाथ में हैं वे प्रथम दृष्टिकोण से ही समस्त समस्याओं को देखते हैं। जब तक राजनीति की इस मौलिक भूल का परिमार्जन नहीं होगा तब तक राजनीतिक भारत का निर्माण सुदृढ़ नींव पर नहीं हो सकता।

## धर्म प्रधान भारतीय जीवन

भारतीय जीवन को धर्म प्रधान बनाने का प्रमुख कारण यह था कि इसी में जीवन के विकास की सबसे अधिक संभावना है। आर्थिक दृष्टिकोण वाले लोग यद्यपि आर्थिक समानता के पक्षपाती हैं, किंतु वे व्यक्ति की राजनीति एवं आत्मिक सत्ता को पूर्णतः समाप्त कर देते हैं। राजनीतिवादी प्रत्येक व्यक्ति को मतदान का अधिकार देकर उसके राजनीतिक व्यक्तित्व की रक्षा तो अवश्य करते हैं किंतु आर्थिक एवं आत्मिक दृष्टि से वे भी अधिक विचार नहीं करते। अर्थवादी यदि जीवन को भोग प्रधान बनाते हैं तो राजनीतिवादी उसको अधिकार प्रधान बना देते हैं। मतवादी बहुत कुछ अव्यावहारिक, गतिहीन एवं संकुचित हो जाते हैं। किसी-किसी व्यक्ति विशेष अथवा पुस्तक विशेष के विचारों के वे इतने गुलाम हो जाते हैं कि समय के साथ वे अपने आपको नहीं रख पाते तथा इस प्रकार पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं। इन सबके विपरीत संस्कृति प्रधान जीवन की यह विशेषता है कि इसमें जीवन के केवल मौलिक तत्वों पर तो जोर दिया जाता है पर शेष बाह्य बातों के संबंध में प्रत्येक को स्वतंत्रता रहती है। इसके अनुसार व्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रत्येक क्षेत्र में विकास होता है। संस्कृति किसी काल विशेष अथवा व्यक्ति विशेष के बंधन से जकड़ी हुई नहीं है, अपितु यह तो स्वतंत्र एवं विकासशील जीवन की मौलिक प्रवृत्ति है। इस संस्कृति को ही हमने धर्म कहा है। अतः जब





कहा जाता है कि भारतवर्ष धर्म प्रधान देश है तो इसका अर्थ मजहब, मत या रिलीजन नहीं, किंतु यह संस्कृति ही होता है।

## भारत की विश्व को देन

हमने देखा है कि भारत की आत्मा को समझना है तो उसे राजनीति अथवा अर्थ नीति के चश्मे से न देखकर सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही देखना होगा। भारतीयता की अभिव्यक्ति राजनीति के द्वारा न होकर उसकी संस्कृति के द्वारा ही होगी। विश्व को भी यदि हम कुछ सिखा सकते हैं तो उसे अपनी सांस्कृतिक सहिष्णुता एवं कर्तव्य प्रधान जीवन की भावना की ही शिक्षा दे सकते हैं, राजनीति अथवा अर्थ नीति की नहीं। उसमें तो शायद हमको उनसे ही उलटे भीख माँगनी पड़े। अर्थ, काम और मोक्ष के विपरीत धर्म की प्रमुख भावना ने भोग के स्थान पर त्याग, अधिकार के स्थान पर कर्तव्य तथा संकुचित असहिष्णुता के स्थान पर विशाल सहिष्णुता प्रकट की है। इनके साथ ही हम विश्व में गौरव के साथ खड़े हो सकते हैं।

## संघर्ष का आधार

भारतीय जीवन का प्रमुख तत्व उसकी संस्कृति अथवा धर्म होने के कारण उसके इतिहास में भी जो संघर्ष हुए हैं, वे अपनी संस्कृति की सुरक्षा के लिए ही हुए हैं। तथा इसी के द्वारा हमने विश्व में ख्याति भी प्राप्त की है। हमने बड़े-बड़े साम्राज्यों के निर्माण को महत्व न देकर अपने सांस्कृतिक जीवन को पराभूत नहीं होने दिया। यदि हम अपने मध्ययुग का इतिहास देखें तो हमारा वास्तविक युद्ध अपनी संस्कृति के रक्षार्थ ही हुआ है। उसका राजनीतिक स्वरूप यदि कभी प्रकट भी हुआ तो उस संस्कृति की रक्षा के निमित्त ही। राणाप्रताप तथा राजपूतों का युद्ध केवल राजनीतिक स्वतंत्रता

के लिए नहीं था किंतु धार्मिक स्वतंत्रता के लिए ही था। छत्रपति शिवाजी ने अपने स्वतंत्र राज्य की स्थापना गो ब्राह्मण प्रतिपालन के लिए ही की। सिख गुरुओं ने अपने युद्ध धर्म की रक्षा के लिए ही किए। इन सबका अर्थ यह नहीं समझना चाहिए कि राजनीति का कोई महत्व नहीं था तथा राजनीतिक गुलामी हमने सहर्ष स्वीकार कर ली थी, किंतु तात्पर्य यह है कि राजनीति को हमने जीवन का केवल सुख का कारण मात्र माना है, जबकि संस्कृति संपूर्ण जीवन ही है।

## संस्कृतियों का संघर्ष

आज भी भारत में प्रमुख समस्या सांस्कृतिक ही है। वह भी आज दो प्रकार से उपस्थित है, प्रथम तो संस्कृति को ही भारतीय जीवन का प्रथम तत्व मानना तथा दूसरे यदि इसे मान लें तो उस संस्कृति का रूप कौन सा हो? विचार के लिए यद्यपि यह समस्या दो प्रकार की मालूम होती है, किंतु वास्तव में है एक ही। क्योंकि एक बार संस्कृति का जीवन को प्रमुख एवं आवश्यक तत्व मान लेने पर उसके स्वरूप के संबंध में झगड़ा नहीं रहता, न उसके संबंध में किसी प्रकार का मतभेद ही उत्पन्न होता है। यह मतभेद तो तब उत्पन्न होता है जब अन्य तत्वों को प्रधानता देकर संस्कृति को उसके अनुरूप उन ढाँचों में ढकने का प्रयत्न किया जाता है। इस दृष्टि से देखें तो आज भारत में एक-संस्कृतिवाद, द्वि-संस्कृतिवाद तथा बहु-संस्कृतिवाद के नाम से तीन वर्ग दिखाई देते हैं। एक-संस्कृतिवाद के पुरस्कर्ता भारत में केवल एक ही भारतीय संस्कृति का अस्तित्व मानते हैं तथा अन्य संस्कृतियों का या तो अस्तित्व ही मानने को तैयार नहीं हैं या उसके लिए आवश्यक समझते हैं कि वह भारतीय संस्कृति में विलीन हो जाए। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा कांग्रेस में

श्री पुरुषोत्तमदास टंडन जैसे व्यक्ति इसी एक संस्कृतिवाद के पोषक हैं।

## द्वि संस्कृतिवादी

द्वि-संस्कृतिवादी दो प्रकार के हैं। एक तो स्पष्ट तथा दूसरे प्रच्छन्न। एक वर्ग भारत में स्पष्टतया दो संस्कृतियों का अस्तित्व मानता है तथा उनको बनाए रखने की माँग करता है। मुस्लिम लीग इसी मत के हैं।

ये हिंदू और मुस्लिम दो संस्कृतियों को मानते हैं तथा उनका आग्रह है कि मुसलमान अपनी संस्कृति की रक्षा अवश्य करेगा। दो संस्कृतियों के आधार पर ही उन्होंने दो राष्ट्रों का सिद्धांत सामने रखा, जिसके परिणाम को हम पिछले वर्षों में भलीभाँति अनुभव कर चुके हैं। प्रच्छन्न द्वि-संस्कृतिवादी वे लोग हैं जो स्पष्टतया तो दो संस्कृतियों का अस्तित्व नहीं मानते, भूल से एक संस्कृति एवं एक राष्ट्र का ही राग अलापते हैं, किंतु व्यवहार में दो संस्कृतियों को मानकर उनका समन्वय करने का असफल प्रयत्न करते हैं। वे ये तो मान लेते हैं कि हिंदू और मुसलमान दो संस्कृतियों हैं, किंतु उनको मिलाकर एक नवीन हिंदुस्तानी संस्कृति बनाना चाहते हैं। अतः हिंदी, उर्दू का प्रश्न वे हिंदुस्तानी बनाकर हल करना चाहते हैं तथा अकबर को राष्ट्र पुरुष मानकर अपने राष्ट्र के महापुरुषों के प्रश्न को हल करना चाहते हैं। नमस्ते और सलाम मालेकुम का काम ये आदाब अर्ज से चला लेना चाहते हैं। यह वर्ग कांग्रेस में बहुमत में है। दो संस्कृतियों के मिलाने के अब तक असफल प्रयत्न हुए हैं किंतु परिणाम विघातक ही रहा है। मुख्य कारण यह है कि जिसको मुस्लिम संस्कृति के नाम से पुकारा जाता है वह किसी मजहब की संस्कृति न होकर अनेक अभागीय संस्कृतियों का समुच्चय मात्र है। फलतः उसमें विदेशीपन है, जिसका मेल भारतीयत्व से बैठना कठिन ही नहीं, असंभव भी है। इसलिए यदि भारत में एक संस्कृति एवं एक राष्ट्र को मानना है तो वह भारतीय संस्कृति एवं भारतीय हिंदू राष्ट्र जिसके अंतर्गत मुसलमान भी आ जाते हैं, के अतिरिक्त और कोई नहीं हो सकता।

## बहु संस्कृतिवादी

बहुसंस्कृतिवादी वे लोग हैं जो प्रांत की निजी संस्कृति मानते हैं तथा उस प्रांत को उस आधार पर आत्मनिर्णय का अधिकार देकर बहुत कुछ अंशों में स्वतंत्र ही मान लेते हैं। साम्यवादी एवं भाषानुसार प्रांतवादी लोग इस वर्ग के हैं। वे भारत में सभी प्रांतों में भारतीय संस्कृति की अर्खंड धारा का दर्शन नहीं कर पाते। ■

(संदर्भ : राष्ट्र धर्म, शरद पूर्णिमा, वि.सं. 2006, अंक 1)



■ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रामलला की मूर्ति के प्राण प्रतिष्ठा के लिए भेजे जाने वाले लड्डू बनाए।



■ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्री राम जनार्दन मंदिर में स्वच्छता अभियान में शामिल होकर मंदिर परिसर में सफाई की।



■ प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा जी ने घर-घर अक्षत वितरण किया।



■ प्रदेश संगठन महामंत्री श्री हितानंद जी ने घर-घर जाकर अक्षत वितरण किया।



■ मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्रीराम मंदिर दर्शन के लिए आमंत्रण कार्ड वितरित किये।



■ राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मु जी ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को इंदौर को सबसे स्वच्छ शहर चुने जाने पर पुरस्कृत किया।



चरैवेति

[www.charaiveti.org](http://www.charaiveti.org)